सार संसार

जनवरी-मार्च, 2018

वर्ष : 23 पूर्णांक : 89 जनवरी-मार्च 2018 अंक : 1

मुख्य सम्पादक
अमृत मेहता

हमारी वेबसाइट
www. saarsansaar.com
Email : saarsansaar@gmail.com

मूल्य :
एक प्रति : 20 ह्रपये
वार्षिक : 80 ह्रपये

Subscription
Single Copy : Rs. 20.00
Annual : Rs.: 80.00

प्रकाशक : **अमृत मेहता**
जे-3/सी, लाजपत नगर III
नई दिल्ली-110024
मुख्य सम्पादक : अमृत मेहता
प्रकाशन अवधि : त्रैमासिक
शब्द संयोजन : देवेन्द्र कुमार शर्मा
मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रिंटर्स
मूल्य : 20 रुपये : (एक प्रति)
: 80 रुपये (वार्षिक)
मुख पृष्ठ : **इरेने स्तास्तेना**

Published by
Amrit Mehta
at
J-3/C, Lajpat Nagar–III
New Delhi–110024

सम्पादक मंडल

अनुवादक परिचय

अमृत मेहता
जे-3/सी
लाजपल नगर III
नई दिल्ली 110024

नासिरा शर्मा
डी. 37/754, छतरपुर
निकट दिल्ली जल बोर्ड
नई दिल्ली 110074

पूनम महेन्द्रू
सी-65
ईस्ट कृष्णा नगर
दिल्ली 110051

स्वाति यादव
5, पोस्ट भलसवा
दिल्ली 110071

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका के अंकों पर
अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजें :

देवेन्द्र कुमार शर्मा, डी-580, गली नं 4, अशोक नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110093
या
saarsansaar@gmail.com

चिट्ठी आई है

मैंने आपका सम्पादकीय पढ़ा। साहित्य क्षेत्र जितना विशद और मानवीय है वहीं अपेक्षाओं से भी भरा है। अपेक्षाएँ कई बार हमें परेशानी में डाल देती हैं। अपेक्षाएँ व्यक्ति अपने स्तर पर करता है, उन्हें थोपा नहीं जा सकता। यह ईर्ष्या का क्षेत्र बन जाता है जैसा आपके साथ हुआ। आप गम्भीरता से न लें। आपका सार संसार का काम विशिष्ट है। आप करते रहें। आने वाली पीढ़ी इसका महत्त्व समझेगी। शब्द अपने में सीमित नहीं रहता है, वह वनस्पति की तरह फलता-फूलता है। शुभकामनाएँ।

—गिरिराज किशोर, कानपुर

अपने अद्‌भुत कार्य पर कुछ प्रतिक्रियाओं के बारे में, जो अधिकतर प्रेरणादायक होती हैं, जानकारी देने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद, पत्रिका को भेजते रहने के लिए भी। लम्बे समय तक खामोश रहने के लिए माफ़ी चाहती हूँ। इसका यह मतलब नहीं कि चीज़ों पर मेरी नज़र नहीं है... हालाँकि मुझे मूल हिन्दी साहित्य में अधिक रुचि है, फिर भी मैं बड़ी शिद्‌दत से वह सब पढ़ती हूँ, जो 'सार संसार' के साथ हो रहा होता है। 'सार संसार' तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी आपके लिए और अधिक सफलता की कामना करती हूँ. लेनिनग्राद/सेंट पीटर्सबर्ग से शुभकामनाओं सहित।

—तातिआना ओरन्स्काइआ, हैम्बर्ग

आपके विरोधियों के बुरे मंसूबों के बारे में जानकर बहुत दुःख हुआ। मुझे खुशी है कि उनकी नाहक टिप्पणियों के कारण उत्पन्न हुई भड़ास से आप मुक्त हो सके हैं। कुछ लोगों द्वारा महत्त्वपूर्ण बन जाने का यह मतलब नहीं होता कि वह अपनी कमीनगी से छुटकारा पा जाते हैं। आप उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं, न केवल हिन्दी के लिए, बल्कि विदेशी भाषाओं के लिए भी। इसे जारी रखिये।

—महेश चन्द्र द्विवेदी, लखनऊ

अमृत जी,

आपका फैन हूँ। लगातार आपके काम का प्रशंसक। इस ऊर्जा और उत्साह को बनाए रखिए। औकात भर हमेशा साथ हूँ। जल्दी, कहीं मुलाकात होगी। आमीन।

—दुष्यन्त, मुम्बई

आपके मेल के लिए बहुत धन्यवाद। देखती हूँ कि सब जगह हाल यही है। जो ईमानदारी से दिल लगाकर अपने काम में लगा हुआ है वह हमलों का शिकार बन जाता है। ईर्ष्या सब जगह है। यहाँ का हाल क्या बताऊँ! आप हौसले से अपने काम

में लगे रहिये, आप पर तो गर्व और केवल गर्व ही हो सकता है। नमस्कार सहित।

—प्रो. डागमार मारकोवा, प्राग

सार संसार के नवीनतम अंक के लिए धन्यवाद। यह सच है कि आप हमें विभिन्न भाषाओं का साहित्य हिन्दी में पढ़ने का मौका दे रहे हैं। अनुवादक के रूप में आपके अथक प्रयासों और इस क्षेत्र में आपके योगदान के लिए मैं आपका अभिनन्दन करती हूँ।

—प्रो. हंसवाहिनी सिंह, बनस्थली (राजस्थान)

क्या मैं आप वाली खबर फेसबुक पर हिन्दी में उद्धित कर सकती हूँ?
(बेशक़ कीजिये—अ.मे.) **—गुड्डो दादी, शिकागो**

क्या हो रहा है यह तुम्हारे देश में? इतनी नफ़रत? इतनी जलन? मुझे हैरानी होती है कि तुम्हारी अनुशंसा करने की बजाय तुम्हारे विलक्षण काम की आलोचना की जाती है।

—प्रो. गेज़ा ज़िन्गर, ग्योटिंगन यूनिवर्सिटी

हार्दिक बधाई,—प्रिय अमृत, तुम प्रशंसा के अधिकारी हो।

—योहान्ना हंज़न, लेखिका, ड्युसलडोर्फ़, जर्मनी

मैं गत दो वर्ष से आपकी पत्रिका 'सार संसार' का आनन्द ले रही हूँ। मैं लेखिका हूँ और अनुवादक भी हूँ। कहानी 'मुझे लेनी कहते थे' मुझे पसन्द आई है। सीधे विदेशी भाषाओं से अनूदित साहित्य प्रकाशित करने के लिए आप पर गर्व किया जा सकता है। जुलाई-सितम्बर के अंक में मैंने 'हॉलीवुड' का अनुवाद पढ़ा है। खूबसूरत है।

—नासिर शर्मा, लेखिका, नई दिल्ली

मुझे 'सार-संसार' का नियमित पाठक होने का अलग गर्व महसूस होता है, वह इसलिए कि मेरी मातृ भाषा और भारतीय भाषाओं के साहित्य की परिधि से बाहर संसार भ्रमण करने का और बहुत कुछ देश-दुनिया की साहित्यिक गतिविधियों में पाठक की हैसियत से शामिल होने का मौका देती है। श्रद्धेय अमृत मेहता जी की तपस्या और परिश्रम के फलस्वरूप यह पत्रिका विश्व साहित्य को हिन्दी के प्रेमियों तक पहुँचकर साहित्य-सेतु के स्तम्भ स्थापित कर रही है। जनवरी-मार्च, 2017 अंक से और चार नए अनुवादकों की सेवा और साधना पत्रिका को उपलब्ध होना ही पाठकों के लिए अनमोल उपलब्धि है। पाठक की हैसियत से अनुवादकों का तहेदिल से स्वागत है । यह कम खुशी की बात नहीं है कि इस अंक से पत्रिका 23वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। संसार के साहित्य को हिन्दी से जोड़ने के पुनीत कर्म में 92 अनवादकों का योगदान बड़ी उपलब्धि है, मैं ऐसा मानता हूँ। इस अंक में सीरियाई कथा 'अकेली औरत', युर्दानी कथा 'लाल मुर्गा', रूसी कथा 'तारा और बिन्दु', तथा जर्मन कथा 'बाल सेना का कूच' में विषय-वस्तु तथा पृष्ठभूमि अपनी-अपनी अलग-अलग है , लेकिन अनुवाद कों ने हिन्दी में इस रूप परोसा है मानो हिन्दी में

ही लिखी गई हों । इसलिए ख़ास तारीफ़ तो उनके पक्ष में बनती ही है। जर्मन नोबेल विजेता ग्युंटर ग्रास की जीवनी 'बीतते समय के विरूद्ध लेखन' में पठन का विशेष मज़ा है । ग्रीक कविताओं के अनुवाद 'चाँद लाल है' और 'तुम मुस्कराओ' प्रकृति के खेल का आनन्द लेकर मुस्कराने का सन्देश देती हैं ।

—बिर्ख खडका डुवर्सेली, दार्जिलिंग

'सार संसार' का जुलाई-सितम्बर 2017 अंक मिला और मिली ढेर सारी जानकारियाँ जर्मनी के ग्युन्टर ग्रास की जीवनी के सम्बन्ध में—1953 से 1956 तक बर्लिन प्रवास। यारोस्लाव साईफर्ट की तस्वीर मुखपृष्ठ पर, कविता 'यादें' अन्तिम पृष्ठ पर, और आस्ट्रियाई कथा 'हॉलीवुड' के साथ धारावाहिक उपन्यास अंश 'प्रस्तरवृष्टि' पत्रिका के स्तर को धारावाहिक रूप में आगे बढ़ाने में बहुत और उपयोगी साबित होते हैं। सम्पादकीय सन्देश के रूप में यह जानकार असीम ख़ुशी हुई कि 'सार संसार' में छपी विदेशी कहनियों का अनुवाद संग्रह लेखक मित्र राजेन्द्र ढकाल ने प्रकाशित किया है। नेपाली साहित्य के लिए यह अनुपम उपलब्धि मानी जाएगी, मेरा मानना है। मौलिक लेखन के साथ अनुवाद कार्य में सक्रिय श्री ढकाल का प्रयास इस दिशा में निरन्तर फले-फूले, मंगल कामनाएँ देता हूँ। सम्पादकीय में 'सार संसार' और साहित्यिक गतिविधियों के साथ जुड़े विवादों का विश्लेषण और प्रशंसा की कड़ियाँ पढ़ी तो लगा कि मुख्य सम्पादक अमृत मेहता ने अनुवाद और साहित्य का सेतु तैयार करने में एक ज़ोरदार आन्दोलन को आगे बढाया है, जो निश्चय ही जारी रहेगा।

—बिरख खडका डुवर्सेली, दार्जिलिंग

जुलाई-सितम्बर 2017 का अंक मिल चुका है। सादर आभार. जो व्यक्ति आपकी भांति कला को समर्पित होते हैं वे मेरे लिए पूज्य हो जाते हैं.

—नवल जयसवाल, भोपाल

सार संसार का अंक जुलाई-सितम्बर प्राप्त हुआ। मैं प्राय: प्रत्येक अंक पर प्रतिक्रिया स्वरूप पत्र भी लिखता रहता हूँ, पर मुझे लगता है भारतीय डाक की अव्यवस्था के कारण कुछ पत्र आप तक पहुँच पाते हैं कुछ नहीं। अप्रैल-जून के अंक पर भी मैंने पत्र लिखा था, खैर...सार संसार एक ऐसी पत्रिका है, जो विश्वग्राम की कल्पना को साकार करती है। अनुवाद सेतु से हम कई देशों के साहित्य, संस्कृति और इतिहास से परिचित होते है, अन्तरंग होते हैं. यह अद्‌भुत कार्य सराहनीय है। साहित्य के क्षेत्र में आप बहुत कुछ नया जोड़ रहे हैं, उसका वर्धन कर रहे हैं, इसके लिए आपको शुभकामनाएँ, बधाई।

—शिवकु मार अर्चन, भोपाल

(अर्चन जी, सही कहा आपने। डाक विभाग में घोर अव्यवस्था है। तीन साल से मुझे आस्ट्रेलिया से अपनी बहन की राखी और टीका नहीं मिल रहे। बहुत लड़ा हूँ डाकवालों से, आर. टी. आई. भी बहुत किये, साल भर शिकायत करता रहा हूँ। मामला सिर्फ़ भ्रष्टाचार का है, जिसे ये लोग परोक्ष रूप से स्वीकार भी कर चुके हैं। लेकिन मुझे साहित्य का काम भी तो करना है। कब तक इन्हीं पचड़ों में पड़ा रहूँगा?—अ.मे.)

बालकवि बैरागी के दो पत्र

18.9.17

नवरात्रि और दशहरे पर मेरी हार्दिक बधाई और शुभ कामनाएँ सादर प्रेषित हैं। कृपया स्वीकार करें... 'सार संसार' का जुलाई-सितम्बर 2017 अंक कल मिला। आपका आभारी हूँ। मुझे प्रतीक्षा थी। वस्तुतः आप अब तक 6 जून को वापस लौटने वाली अपनी विदेश-यात्रा पर थे, उससे पहले वाला अंक मुझे मिला था। अस्तु। आशा है आपकी विदेश यात्रा सकुशल सुसम्पन्न हुई होगी। यह पत्र मैं आपको आपका सम्पादकीय (10 पृष्ठ) पढ़कर लिख रहा हूँ। पूरा अंक अब पढ़ूँगा। 'सार संसार' का मैं एक सही पाठक हूँ। विदेशी साहित्य को अनूदित कर के हिन्दी संसार को सौंपने का जो गुरुतर कार्य आप कर रहे हैं, वह अभिनन्दनीय और वन्दनीय है। आजकल यह अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और अनुकरणीय है। आपके इस सम्पादकीय को पूरी गम्भीरता से पढ़ने पर मुझे सिरमौर कवि (महाकवि) पूज्य श्री भवानी प्रसाद मिश्र (स्वर्गीय), जिन्हें हम परिजन 'मन्ता' कह कर पुकारते थे, बहुत याद आये। उन्होंने मुझे एक पोस्ट कार्ड में बहुत रोचक और गम्भीर बात लिखी—वह लिखते हैं—'प्रिय बैरागी! जैसा लिखते हो वैसा लिखते रहो। नदी निकलने से पहले यह तय नहीं करती कि वह कितना लम्बा, कितना चौड़ा और कितना गहरा बहेगी। उसका काम है बहते जाना। रहा सवाल आलोचकों का, सो आलोचकों की परवाह मत करो। संसार में आलोचकों के स्मारक नहीं बनते।' इस पोस्ट कार्ड ने मुझे नयी दिशा दी। मेरा वैचारिक जीवन बदल गया। अपमान किसी का मत करो। अपने सम्मान-भाव को जीवन्त और सक्रिय रखो। परवाह किसी की मत करो। अपनी कलम को बेलाग चलाओ। आप पंजाबी हैं, इससे आपकी हिन्दी पर उंगली उठाने वाले स्वयं बौने सिद्ध होते जा रहे हैं। भारत और भारतीयता की आत्मा तथा संस्कृति को नहीं समझने वाले आत्ममुग्ध लोग ऐसी बातें करते हैं। ईश्वर उन्हें 'भारत' का बनावे। पूरा सम्पादकीय पढने के बाद मुझे आपसे केवल एक बात कहनी है—

स्वयं को प्रसन्न और
स्वस्थ रखिये
अपने आलोचकों को
हमेशा व्यस्त रखिये।'

यदि आपकेआलोचकचुप हैं तो यूँ मान लो किआप स्वयं निष्क्रिय हैं। अपनी सतवन्ती लेखनी की कोख को बाँझ मत रखो। लिखते रहो। बस।

विशेष—

आलोचकपराई पूँजी पर अपना व्यापार करने वाला एक पूँजीपति है। उसकी स्वयं की कोई सम्पति उसके पास नहीं होती। पूँजी आपकी होती है, बाज़ार अपना मानता है। मुबारक हो।

21.11.17

आपका 23.10.17 का पत्र मुझे कल मिला। आपको धन्यवाद। मेरा आभार स्वीकार करें। गनीमत है कि पत्र मिल गया। डाक विभाग की कृपा ही समझो। अस्तु! 'सार संसार' का नया अंक मिला और मैंने आपको तत्काल पत्र लिख दिया था। शायद मिल गया होगा। आपने पिछली बार के मुखपृष्ठ की भूल को सुधार लिया, यह ज़रूरी था। एक प्रतिष्ठित पत्रिका और सुसंस्कृत सम्पादकने यह करना ही था। आपकी विदेश यात्राएँ सफल रहीं, इसकी बधाई लें। आशा है आप अगली विदेश यात्रा की तयारी में होंगे। जब भी आप भारत से बाहर जाते हैं हमारे 'सार संसार' को कुछ नया मिलता है। यह प्रसन्नता की बात है। अपने आलोचकों को सस्मित उत्तर देना यदि आप भगवान् महावीर, भगवान् गौतम बुद्ध और स्वामी विवेकानन्द से सीख लेंगे तो निरर्थक तनाव और उत्तेजना से बच जाएँगे। आपकी सृजनात्मक शक्ति बचेगी और आपके आलोचक लम्बी साँसें खींच कर चुप-चुप हो जाएँगे। तीन महापुरुषों पर कौन से प्रहार नहीं हुए? सस्मित रहिए। ठहाके लगाइए। नया वर्ष 2018 आपके लिए अत्यन्त शुभ हो। मेरी आत्मीय बधाई और शुभकामनाएँ सादर स्वीकार करें। नया वर्ष आपको नया यश दे।

सम्पादक की कलम से...

सम्पादकीय के स्थान पर इस अंक में मेरा एक आलेख है, ''काफ़्का का योज़ेफ़ क. जहाँ नहीं पहुँचा'', जिसे ''लोकमत समाचार'' के सम्पादक ने 2006 के दीपावली विशेषांक के लिए मुझे लिखने को कहा था, क्योंकि यह ''देश-देशान्तर विशेषांक'' भी था।

इस अंक में जर्मन लेखक ग्युंटर ग्रास की प्रो. फ़ोल्कर नोएहाउस रचित जीवनी के अंश और स्विस लेखक फ्रांत्स होलर के उपन्यास ''हिमवृष्टि'' की अगली कड़ी के अलावा एक जापानी लोक कथा है, एलिज़ाबेथ राईशर्ट की आस्ट्रियाई, याना बेनोवा की स्लोवाक तथा मर्ज़िया आदिल की अफ़गान कहानियाँ हैं, और एक चेक कविता है इरेने स्तास्तेना की। इस अंक में दो ऐसी अनुवादिकाओं के अनुवाद हैं, जो हमारी पत्रिका में पहली बार प्रकाशित हो रही हैं। एक तो हिन्दी साहित्य की विख्यात लेखिका नासिरा शर्मा हैं, जिन्होंने एक अफ़गान कथा का अनुवाद किया है और दूसरी पूनम महेन्द्रू हैं, एक जापानी लोक-कथा के अनुवाद के साथ। पूनम किसी विदेशी भाषा से हिन्दी में सीधे अनुवाद करने वाली हमारी 93वीं नयी अनुवादक हैं। नासिरा शर्मा मूल लेखन के अलावा फ़ारसी, उर्दू तथा दरी भाषाओं से सीधे हिन्दी में अनुवाद करती रही हैं, और हमारी पत्रिका में शामिल उनके अनुवाद अप्रकाशित नहीं है। हमारे लिए यह एक गौरव का विषय है कि नासिरा शर्मा हम से जुड़ी हैं।

नव वर्ष 2018 के लिए में अपने पाठकों को ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

अनुक्रम

काफ़्का का योज़ेफ़ क. जहाँ नहीं पहुँचा	15
एलिज़ाबेथ राइषर्ट	29
बीतते समय के विरुद्ध लेखन	35
प्रस्तरवृष्टि	49
बिना पैसे इटली की सैर कैसी	62
तन्हा आदमी	68
क्योतो का जादुई शीशा	70
लेम्बर्ग	71

काफ़्का का योज़ेफ़ क. जहाँ नहीं पहुँचा

—अमृत मेहता

कुछ पुरानी यादें

तब मैं जनीवा सिर्फ़ कुछ घंटों के लिए था—25 साल पहले । स्विस रेल का स्विस कार्ड था मेरे पास; प्रथम श्रेणी में 8 दिन के लिए रेल, बस, ट्राम की यात्रा उसी में आ जाती थी। बेर्न के निकटस्थ नगर ज़ोलोतुर्न के वार्षिक साहित्य-उत्सव पर आये कुछ विशेष मेहमानों के लिए नि:शुल्क। कुछ दिन वास ज़्यूरिख़ में था, शेष समय फ्रेंचभाषी लुज़ान में। जनीवा भी तो फ्रेंचभाषी था। परन्तु उस मेघाच्छन्न एक दिन में किसी से वार्तालाप की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ी थी। स्विट्ज़रलैंड के उत्तर में तथा पूर्व में जर्मन बोली जाती है। दक्षिण तथा पश्चिम में फ्रेंच। दक्षिण पूर्व में इतालवी भी बोली जाती है। मैं तो तब भी जर्मन ही जानता था और अब भी। उत्तर के जर्मन भाषी चतुर हैं। हर स्विस-जर्मन जानता है कि देश के राजस्व का एक बड़ा भाग पर्यटन से मिलता है, अत: वे अँग्रेज़ी सीखे हैं; हिन्दुस्तानी जर्मन में भी बात करे तो अँग्रेज़ी बोल देते हैं। सयाने बिज़नेसमैन हैं। दक्षिण तथा पश्चिम फ्रेंचभाषियों को अपनी भाषा पर अभिमान है, अँग्रेजी भी नहीं सीखते, जर्मन भी नहीं सीखते। इतालवी, वो कौन सी भाषा है ?

तो 1995 में एक दिन जनीवा में। लुज़ान से जनीवा एक घंटे का रास्ता भी नहीं है। जनीवा झील के किनारे-किनारे ही सरपट दौड़ती है गाड़ी। झील के उस पार फ्रांस है। इधर से ही कारें, मनुष्य नज़र आते हैं। वैसे जनीवा का एक भाग, छोटा-सा हिस्सा, फ्रांस में भी है। यहाँ से वहाँ लोग ऐसे ही निकल आते हैं, सीमाचौकी पर रोकटोक कम ही है। मैं फ्रांस वाले हिस्से में नहीं गया। ज़रूरत भी नहीं पड़ी। वैसे सुना था कि कालों और कम गोरों को बिना वीज़ा पकड़ लेते थे, नहीं घुसने देते थे 'शेंगन' देशों के अभेद्य किले में।

जनीवा की दो ही चीज़ें याद थीं। एक तुर्क होटल तथा जनीवा झील का असीम विस्तार। 500 किलोमीटर लम्बी, 300 मीटर गहरी झील किसी भी जगह

10 किलोमीटर से कम चौड़ी नहीं थी। नीली, स्वच्छ, झिलमिलाते सूरज के नीचे अनेकों रंग बदलती, मेघ छाये हों तो कुछ और ही छटा होती थी। कभी उदास, कभी गम्भीर, कभी किसी दार्शनिक की तरह गहरी सोच में, शान्त। झील के एकदम मध्य से होकर र्‌योन नदी बह रही है। ऊपर से शान्त दिखने वाली झील के एकदम मध्य से तैरता तैराक कभी अचानक ग़ायब भी हो सकता है। नदी अपने संग लिये जाती है। झील का तापमान वातावरण के तापमान के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। परन्तु ग़रम मौसम में भी र्‌योन नदी के आसपास की जलसतह बर्फ़ीली ठंडी होती है।

जनीवा से लेकर लुज़ान, फिर मोंट्रेयू और फ्रीबू तक आल्प्स पर्वत का उच्चतम शिखर मों ब्लांक दिखाई देता है। लेकिन किस्मत वालों को, बरसात के बाद के साफ़ मौसम में, जब आकाश नीला हो। तब मैंने मों ब्लांक नहीं देखा था, क्योंकि बादलों ने उसके हिममंडित शिखर पर आवरण डाल रखा था। क्या किया था तब मैंने जनीवा में ?

हाँ, तुर्क रेस्तराँ। तुर्क भोजन खाया जा सकता है, हिन्दुस्तानियों द्वारा, ग्रीक भी, इतालवी भी, अरबी भी। जर्मनी में हर सड़क के नुक्कड़ पर एक विदेशी रेस्तरों मिल जाता था। भारतीय ढाबों में भी गज़ब की भीड़ होती थी। जर्मन परसों के बचे बास मारते भोजन को स्वाद से खा जाते थे, समझते थे भारतीय गरम मसाले की ख़ुशबू है। स्विट्ज़रलैंड के दक्षिणी भाग में फ्रेंच खाना ही मिलेगा। विदेशी रेस्तराँ मुझे एक ही मिला, यही तुर्क रेस्तराँ। इसीलिए वहाँ का ड्योनर कबाब अभी तक याद है। लुज़ान में फ्रेंच खाना खाता था। क्या खाता था, मालूम नहीं। सूची फ्रेंच में ही होती थी और वेटरों को फ्रेंच के अलावा कोई भाषा नहीं आती थी। आँखें बन्द करके किसी 'आइटम' पर उँगली रख देता था, और प्रार्थना करता था कि कुछ ऐसा सामने आये, जिससे मैं परिचित हूँ।

दो ही चीज़ें, तुर्क रेस्तराँ और जनीवा झील। झील में नौका पर बैठकर लुज़ान लौटा। एक ही तस्वीर बनी जनीवा की ज़ेहन में, झील और उसके बीचोबीच उठती आकाश तक जाती सीधी जलधारा। स्टीमर सुबह चला तो शाम को जा कर लुजान पहुँचा था, जाने कहाँ-कहाँ से यात्री लेता हुआ। फ्रांस के नगर एवियान से भी।

इस बार 2006 की ग्रीष्म में जनीवा पाँच दिन ठहरना था, किसी होटल में। समस्या यही पेश आई। एयरपोर्ट से मुख्य रेलवे-स्टेशन आया तो मालूम पड़ा कि कामचलाऊ अँग्रेजी बोलने वाला मिलना मों ब्लां जितनी दुश्वार समस्या बन गयी थी। हाथों में किताबों से भरे दो भारी सूटकेस, और टूरिस्ट ऑफ़िस ढूँढ़ने के लिए मुझे स्टेशन के आसपास वाली सड़कों पर एक-दो किलोमीटर गोल-गोल चक्कर

लगाने पड़े। सब मेरे अल्प भाषाज्ञान के कारण। छम-छम बरसती बरसात में। और मेरा शरीर बारिश के पानी से अधिक मेरे अपने पसीने से गीला था। टूरिस्ट ऑफ़िस की रिसेप्शनिस्ट को अँग्रेज़ी आती थी। स्टेशन के आसपास सब होटल भरे थे। पैलेडियम क्षेत्र में एक होटल में कमरा खाली था। परन्तु महिला ने मुझे जंक्शन के बस स्टॉप पर उतरने को कहा। मैं नहीं जानता क्यों। परन्तु मुझे दुबारा सूटकेस घसीटते हुए, पसीने से तर, एक किलोमीटर पीछे लौटना पड़ा।

स्विट्ज़रलैंड ख़ुद में यूरोप का सबसे महँगा देश है। परन्तु देश के भीतर ही चीज़ों के दामों में बहुत फ़र्क़ है। ज़्यूरिख़ देश में सबसे बड़ा शहर है, प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र है, परन्तु जनीवा ज़्यूरिख़ से दो गुना महँगा है। जो कमरा ज़्यूरिख़ में 80 फ्रैंक का मिलेगा, वह यहाँ डेढ़ सो फ्रैंक का था। क्या कर रहा था मैं जनीवा में? जाना था मुझे लवीनी, जनीवी तथा लुज़ान के मध्य एक छोटा सा गाँव। मैं कनाडा से स्विट्ज़रलैंड आया था, भारत से नहीं। टोरोंटो यूनिवर्सिटी की जिस अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में मैं भागीदार था, वह 26 मई को समाप्त हो रही थी, लवीना में मेरा पड़ाव 31 मई से आरम्भ हो रहा था—तो मैंने बीच का बचा समय जनीवा की मनोरमता के साथ बिताने का निर्णय लिया।

लवीना की कुल जनसंख्या 800 की है। टोरोंटो में नगर-मध्य में वाटरफ्रंट के एकदम सामने स्थित जिस गगनचुम्बी इमारत में रहकर मैं आया था, उसी की आबादी 800 से ज़्यादा थी। सम्पूर्ण परिदृश्य में एक विषमता थी। टोरोंटो में जहाँ यार्क स्ट्रीट पर बनी इस इमारत के आसपास बसों, ट्रामों, सैलानियों की रेल-पेल थी तो यहाँ रास्ता बताने के लिए सड़क पर कोई नहीं होता था। टोरोंटो में अँग्रेज़ी बोली जाती थी—वैसे चीनी और पंजाबी भी आम सुनने में आती थी—तो यहाँ फ्रेंच का बोलबाला था, जनीवा से ज़्यादा। ग्रामीण जीवन का एक स्वप्निल दृश्य था। लावीनी की सर्वोत्तम ह्वाइट वाइन पूरे यूरोप में प्रसिद्ध है। यह किसानों का गाँव था, और किसानों का मुख्य व्यवसाय अँगूरों की खेती करके उसकी शराब बनाना और फिर उसे बेचना था। जहाँ तक नज़र जाती थी बस अँगूरों के खेत दिखाई देते थे। यह गाँव पर्वतों पर काफ़ी ऊँचाई पर स्थित था। खिड़की से देखो तो सामने जनीवा झील, उसके पीछे फ्रांस और फ्रांस में आल्प्स पर्वतों मों ब्लांक ने भी कई बार घूँघट उतार कर अपना चेहरा दिखाया। यूँ लगता था कि बस नीचे उतरो तो झील पर पहुँच गये। मगर झील सचमुच में छः किलोमीटर दूर थी। मैं क्या कर रहा था लावीनी में? मैं लेडिष रोवोल्ट के महल में ठहरा हुआ था। महल था या हवेली थी, कह

नहीं सकता, शब्दार्थ में सूक्ष्म अन्तर हो सकता है। परन्तु दोनों ही था यह। इसे 1996 में जर्मन साहित्य के एक प्रमुख प्रकाशक रोवोल्ट ने लेखकों के नाम कर दिया था। वैसे यह प्रासाद था उनके ग्रीष्म-विहार के लिए, साप्ताहांत वहाँ बिताने के लिए। जिन लेखकों को रोवोल्ट ने प्रकाशित किया उनकी एक लम्बी सूची है, जिसमें वोल्फ़गांग बोर्षर्ट, कु र्ट टुख़ोल्स्की, लोर्का, सिमोन दे बुवा, विलियम फ़ाल्कनर, ग्राहम, ग्रीन, सार्त्र, आर्नो शमिट्ट, कैम्यू, हेनरी मिल्लर, लियोन फ़ोएश्टवाग्नर, व्लादीमीर नोबोकोव, हेमिंग्वे, डी.एच.लारेंस, आर्थर मिल्लर, जेम्स बाल्डविन, ओगडन नैश, सूसन सोंटाग, रोबर्ट मूज़िल, मारियो वेर्गास, एल्फ्रीडे येलिनेक, जॉन उपदिके, रोल्फ़ डीटर ब्रिंकमन तथा जॉन इर्विंग उल्लेखनीय हैं। दोस पासोज़, फ़ाल्कनर, हेमिंग्वे, उपदिके, हेनरी मिल्लर, युर्गन बेक्कर, जेम्स बाल्डविन, आल्बर्ट कैम्यू तथा नाबोकोव उनके परम मित्रों में थे, विशेषकर नाबोकोव, जो लावीनी के पड़ोस वाले गाँव में रहते थे, और कई सप्ताहान्त उन्होंने लेडिष के साथ इस महल में गुज़ारे थे।

अपनी मृत्यु से पहले लेडिष रोवोल्ट अपनी वसीयत में यह सम्पत्ति विश्व भर के लेखकों के नाम कर गये थे। रोवोल्ट के अनेक लेखकों ने नोबेल साहित्य-पुरस्कार प्राप्त किये थे। उनकी मंशा थी कि विश्व के प्रतिभाशाली लेखकों को लेखन के लिए उपयुक्त एक वातावरण प्रदान किया जाये ताकि वे वहाँ रहकर अन्य देशों से आये लेखकों के साथ विचारों का आदान-प्रदान कर सकें, दीन-दुनिया की फ़िक्र छोड़कर लेखन-कर्म पर स्वयं को केन्द्रित कर सकें। और कि उनमें से कई बाद में नोबेल भी प्राप्त कर सकें। प्रतिवर्ष ग्रीष्म ऋतु में 12 सप्ताह 5-6 लेखक या लेखिकाएँ तीन सप्ताह के लिए लावीनी आते हैं, अर्थात् वर्ष में 20 से 25, यात्रा-व्यय स्वयं उठाना पड़ता है, उसके बाद सोफ़ी कांडोरोफ़ सबकी देखभाल करेगी।

सोफ़ी से ही मेरा पत्र-व्यवहार चला था। 'शातो' (महल) में वह एक वन-वूमैन-आर्मी है। मुझे लेने मोर्श के स्टेशन पर आयी थी। जनीवा से लावीनी सीधे नहीं पहुँचा जा सकता। पहले रेलगाड़ी से मोर्श तक आना पड़ता है, जो आधे घंटे का रास्ता है। वहाँ से पूरे दिन में लावीनी को 5-6 बसें जाती हैं, वरना टैक्सी या अपनी कार। स्टेशन से बाहर निकलते ही सोफ़ी स्वभावत: मुझे पहचान गयी, मैं अकेला ही भारतीय जो था। ऐसे गरमजोशी से मिली, जैसे वर्षों से जानती हो। बीस मिनट में हम लावीनी में थे। 'शातो' में मुझे छोड़ते ही सोफ़ी को वापस मोर्श जाना था, अमेरिका से आ रही कवयित्री ऐन्न स्नोडग्रास को लेने। उसी दिन उसे चार चक्कर

लगाने थे, स्वर्गीय रोवोल्ट के मेहमानों का स्वागत मोर्श में करने के लिए। जल्दी से उसने मुझे मेरे कमरे में पहुँचाया। कुल पाँच कमरे थे, चार ऊपर एक नीचे। कमरों के नाम थे लेखकों के नाम पर, उन लेखकों के नाम पर, जो उन कमरों में आकर अक्सर रहते थे। एक कमरा हेमिंग्वे का था, एक नोबोकोव का। एक पर रोवोल्ट का अपना नाम था। मुझे मिला आल्बर्ट कैम्यू का कमरा। जिस बिस्तर पर कभी कैम्यू सोया करते थे, मैं उस पर 21 रातें सोऊँगा। सोचकर मैं रोमांचित था।

सोफ़ी ने बताया कि नीचे रसोई है, उसमें सब कुछ है, फल, अनाज, रोटी, लंगोचे, गोश्त, फलों का रस, खनिज जल, वगैरह वगैरह, बर्तन हैं, बिजली का चूल्हा है, अपने आप जब चाहे खाओ-पकाओ, सन्ध्या का भोजन पका-पकाया मिलेगा, जब सभी आमन्त्रित लेखक एक साथ मिलकर वार्तालाप भी किया करेंगे।

सोफ़ी का पति मार्टिन लेखक है, अभिनेता है और फ़िल्म निर्माता भी है, और स्विस नहीं, डेनमार्क का है, गर्मियों में कुछ महीने वह सोफ़ी के साथ लावीनी में गुज़ारता है, शरदऋतु में सोफ़ी डेनमार्क चली जाती है। सोफ़ी अभिनेत्री है। कई फ्रेंच फ़िल्मों में अभिनय कर चुकी है। अभी तक जितने लेखक भी वहाँ आकर रह चुके हैं, सभी स्मरण-पुस्तिका में लिखकर गये हैं, ''सोफ़ी हीरोइन है।'' सोफ़ी सचमुच हीरोइन है, अपनी खूबसूरती के कारण ही नहीं, अपनी आवभगत के कारण, अपने मुक्त निश्छल स्वभाव के कारण। सोफ़ी की माँ आधी अँग्रेज़ हैं, पिता आधे रूसी, सोफ़ी का पति डेन, तथा सोफ़ी अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द का एक आदर्श रूप।

सोफ़ी भाग-भागकर सब काम निपटाती है। सोफ़ी यहाँ है, सोफ़ी वहाँ है, सोफ़ी सुपरमैन है, क्या-क्या नहीं कर सकती। क्या-क्या नहीं करती। पूरा परिवार ही अतिथियों की आवभगत में होता है, पति मार्टिन भी, पिता पिऐर भी। कम्प्यूटर में कुछ गड़बड़ है। मार्टिन फ़िक्स कर देगा, जनीवा जाना है! पिऐर अपनी गाड़ी में ले जाएगा। अच्छी शराब खरीदनी है, मशहूर स्विस चाकलेट ले जानी हैं, सोफ़ी और मार्टिन साथ चलेंगे।

फ्रांत्स काफ़्का के उपन्याय 'दस श्लोस्स' (अँग्रेज़ी में 'द कासल') का नायक योज़ेफ़ क एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था में शासक के महल तक नहीं पहुँच पाता और अफ़सरशाही की भूलभुलैया उस अजनबी को स्वयं से, संसार से विमुख बना देती है। कुछ ही वर्ष पहले प्राग में काफ़्का की हस्तलिपि में उपन्यास का एक दूसरा अन्त मिला था, जिसमें योज़ेफ क. उपन्यास के एक महत्त्वपूर्ण पात्र 'मास्टर' से कहता है कि यह वह महल नहीं था, जिसमें वह जाना चाहता था, वह महल तो

लावीनी में है, जो स्विट्ज़रलैंड में है।

इस उपन्यास की लीक पर एक उपन्यास मारियान्ने ग्रूबर ने लिखा है, 2004 में प्रकाशित इस उपन्यास का नाम है, 'इन द कासल'। इसकी एक प्रति मैं साथ लाया था। लावीनी में मैंने इसे दुबारा पढ़ा। इस बार उसका प्रभाव पहले से भिन्न और अधिक मर्मस्पर्शी था।

हम पाँच लोग थे वहाँ। इस वर्ष का यह पहला ग्रुप था। 'शातो दे लावीनी' का मैं पहला मेहमान था इस वर्ष। अमेरिका से ऐन्न स्नोडग्रास आयी, लन्दन से ऐन्न ओकले तथा बेलग्रेड से दूशान वेलोकेविच; पाँचवाँ मेहमान अगले दिन काहिरा से आया, तमीम अल-बर्गूती।

ऐन्न स्नोडग्रास कवयित्री है और इतालवी से अँग्रेज़ी में अनुवाद करती है। मैसाचुसेट्स यूनिवर्सिटी में प्राध्यापिका भी हैं। ऐन्न ओकले नारीवादी साहित्य लिखती हैं। बहुत प्रसिद्ध हैं—कई यूरोपीय भाषाओं में अनूदित है। विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर भी है। दूशान लेखक, पत्रकार, फिल्म-निर्माता तथा प्रकाशक है। स्लोबोदान मिलोसेविच के शासन में उसे काफ़ी कष्ट झेलने पड़े थे। मौत के साये में जीते हुए उसने सत्ता से संघर्ष किया था। देश के हत प्रधान-मन्त्री का अनन्य मित्र होने के कारण मिलोसेविच का विशेष कोप-भाजन रहा। परन्तु ख़ुशमिज़ाज़ी नहीं खोई। छोटे-छोटे वाक्यों में बात करता था, हर वाक्य में एक प्रछन्न अर्थ होता था, अचानक हँसा देता था, सोचने को मजबूर करता था। तमीम अल-बर्गूती का व्यक्तित्व सबसे दिलचस्प था। पिता फ़िलस्तीनी हैं, माँ मिस्री, स्वयं को फ़िलस्तीनी मानता है, नागरिकता जोर्डन की है, बोस्टन यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी. कर रहा है और मिस्री नागरिकता के लिए उसने अर्जी दे रखी है। अभी 30 का है। लावीनी आने वाले अब तक के सभी लेखकों में शायद सबसे कमउम्र। पिता मुरीद अल बर्गूती अरबी भाषा के जाने-माने लेखकों में एक। अरबी में लिखी उनकी पुस्तक 'मैंने रामल्ला देखा' का विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। अँग्रेजी-संस्करण 'आई सॉ राम्मला' की भूमिका विख्यात अमेरिकी लेखक एडवर्ड सईद ने लिखी थी। विद्रोह तमीम के लहू में है। फ़िलस्तीन से निकलने के बाद उनके पिता अपनी पत्नी रदवा अशूर, मिस्र की एक प्रतिष्ठित कवयित्री और काहिरा यूनिवर्सिटी की प्रोफ़ेसर, के साथ काहिरा में रह रहे हैं, परन्तु शासन-विरोधी गतिविधियों के कारण उन्हें मिस्र से भी करीब एक दशक का देशनिकाला दिया गया था।

पहले दिन संध्या के भोजन पर मेरी भेंट दोनों लेखिकाओं तथा दुशान के साथ

हुई। सोफ़ी ने भी पहले दिन हमारे साथ भोजन लिया। अनौपचारिक होने में थोड़ा समय लगेगा, मैंने सोचा।

दिन में सब अपने-अपने कमरे में बन्द होते थे। मैंने अपने पहले उपन्यास के प्रथम पृष्ठ लावीनी में आरम्भ किये। ग्युंटर वल्लरफ़फ़ की तर्ज़ पर एक आत्मकथा, जिसे मैं 'गंत्स उंटन' (हिन्दी में 'और एक दलित') की शैली में रपट की तरह नहीं लिखना चाहता था, उसे साथ ही साहित्यिक ढाँचे में डालना चाहता हूँ। विषय क्या होगा? भारत में उच्च स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार, पर यह उपन्यास का शीर्षक नहीं है।

न जाने कब लोग चाय पीते थे, सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन करते थे, कोई किसी के सामने नहीं पड़ता था। सन्ध्या होते ही सब एकत्र हो जाते थे। अर्थात् कुल वातावण गम्भीरता से साहित्य-सृजन का था, गप-शप का नहीं। शाम सात बजे हम पाँच साहित्यकार ह्वाइट वाइन से अपने कु न्द हो चुके अंगों को ढीला करते थे। दिन में आठ-नौ घंटे लिखना हो जाता था, अत: सन्ध्या पूरी दुनिया भर की ख़बर लेने को समर्पित होती थी। यहाँ यह वर्णन करना असंगत लग सकता है, परन्तु साहित्य-सृजन का वातावरण बनाने के लिए वहाँ लेखकों को सर्वोत्कृष्ट सुविधाएँ थीं, सबका आचरण भी उसी के अनुरूप था। कमरों में पिकासो की मौलिक पेंटिंग्स (यह पूछने पर कि अगर कोई चुरा ले तो बताया गया कि सब अलार्म से सुरक्षित हैं, कोई साहस नहीं करेगा), चाँदी के बर्तन, 5 दौर का सान्ध्य-भोजन, उत्कृष्ट मद्य, 5 व्यक्तियों के लिए रसोई करने वाली पाँच महिलाएँ। गप-शप रात के 1 बजे तक चलती थी और यही लगता था कि 'सारे जहाँ का दर्द अदीब के जिग़र में है।'

तमीम ग्रुप का विदूषक था। लतीफ़े सुनाता था, अरबों पर हँसता था, ख़ुद पर हँसता था। फ़िलस्तीनी होने के नाते स्वभावत: इज़रायल से चिढ़ता था। दूर-दराज़ भारत में बैठे हुए मैंने कभी भी मध्य-पूर्व में चल रहे फ़िलस्तीनी संघर्ष को ठीक से नहीं समझा था, तमीम ने कई नये आयाम खोले। एक स्वतन्त्र फ़िलस्तीन, जो अरबों के लिए सदा एक मृग-मरीचिका रहा था, अभी भी वही है, फ़िलस्तीनी सरकार नाम की है, इज़रायली फ़िलस्तीन के भीतर बैठे हैं, चेक-पोस्टें जगह-जगह लगाई हुई हैं, उनकी मर्जी के बिना कोई कहीं से नहीं गुज़र सकता, कभी भी कहीं भी

नाकाबन्दी की जा सकती है। कभी भी किसी के घर की तलाशी ली जा सकती है। घर-बार छोड़ कर जितने भी फ़िलस्तीनी देश से भागे थे, उनमें से कोई भी वापस आकर अब बसना चाहे तो इज़रायली निर्णय लेंगे कि वह अपने घर वापस जा सकता है कि नहीं। सैकड़ों, हज़ारों घर उजाड़ पड़े हैं, अँधेरे कमरे बिछुड़े निवासियों की चिरप्रतीक्षा करते बूढ़े और जर्जर हो चुके हैं।

परन्तु एक पूरी क़ौम से नफ़रत करना भी तो इंसानियत नहीं है, मेरा मत है। हमारे महात्मा गाँधी होते थे, अँग्रेज़ों से नफ़रत किए बिना उन्होंने अपनी आज़ादी की लड़ाई अहिंसा के माध्यम से लड़ी थी, मेरा मत था। मगर तुम देश के भीतर थे, हम शरणार्थी बने कहाँ-कहाँ ठोकरें खा रहे हैं, कभी कु वैती तो कभी सऊदी और कभी लेबनानी हमें मार कर निकाल देते हैं, तमीम का जवाब था।

बेशक़ आज इज़रायल, जो फ़िलस्तीन और उसके पड़ोसी देशों में कर रहा है अमानवीय है, परन्तु यहूदी भी क्या करें, यदि उनके पड़ोसी उन्हें हमेशा इस धरती से नेस्ताबूद करने की कसमें उठाते रहेंगे तो उन्हें चौकन्ना रहना ही पड़ेगा, आक्रामक रुख अपनाना ही पड़ेगा, आख़िर उन्हें भी तो जीना है, मेरा प्रतिवाद था।

जर्मनी में नाज़ी-युग के दौरान यहूदियों का जो नरसंहार हुआ था और जो लोमहर्षक तथ्य बाद में सामने आये थे, उन्हें मद्देनज़र रखते हुए किसी भी कीमत पर अपनी धरती को बचाना चाहेंगे, क्योंकि वही उनके लिए एकमात्र सुरक्षित स्थल है। कहाँ जाएँगे वे अगर इज़रायल को देश के रूप में मान्यता ही न दी जाये। और उनके सिर पर पूरी जाति के उन्मूलन की तलवार ही लटकी रहे।

तमीम के पास इस प्रश्न का उत्तर तो था नहीं, परन्तु वह एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र का शिकार था, जिसने जीवन में अपनी जन्मभूमि नहीं देखी थी, शरणार्थी बन दूसरे देशों में रहा था, अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा उसने अपने पिता से अलग रहकर काटा था, अपनी माँ की व्यथा देखी थी, जिसे अकेले उसे पालना पड़ा था—और यह सिर्फ़ उसकी कहानी नहीं है, लाखों विस्थापित फ़िलस्तीनियों का इतिहास है। उनका प्रश्न है कि उनका क्या दोष था कि बेघरबार करके उन्हें उनके देश से खदेड़ दिया गया।

अगर मित्र-देशों ने नाज़ियों के अत्याचारों से पीड़ित यहूदियों को अपना एक देश देना ही था तो अपने यहाँ यूरोप में ही दे देते; जर्मनी का ही एक हिस्सा दे देते। मुझ द्वारा सुझाए गए इस समाधान पर तमीम और मैं काफ़ी हद तक सहमत थे।

तमीम की कविता राजनीतिक है, अरब देशों, मरुस्थल की राजनैतिक, आर्थिक समस्याएँ दर्शाती, मिथकों से ओतप्रोत, पंचतन्त्र की लीक पर। 12 जून को जब हम पाँच साहित्यकारों को जनीवा से लुज़ान क्षेत्र के साहित्यप्रेमियों के समक्ष अपना

साहित्यपाठ करना था तो सबसे अधिक प्रशंसा तमीम को मिली। तमीम के राजनैतिक दृष्टिकोण से न सहमत होने पर भी यूरोपीय श्रोता उसकी कविता के क़ायल थे।

हों भी कैसे न, जब वह बीच-बीच में ऐसे लतीफ़े भी छोड़ दे, जैसे : इज़रायली झंडे की सबसे ज़्यादा माँग और कीमत फ़िलस्तीन में है। रोज़ाना इतने झंडे जलाये जाते हैं कि उनकी कमी पड़ जाती है।

चार जून की सन्ध्या अन्तर्राष्ट्रीय 'पेन क्लब' की महिला-सुरक्षा समिति की अध्यक्ष तथा 'शातो दे लवीनी' की प्रबन्धक समिति की सदस्य फ़ौजिया सईद हमारे साथ रात्रिभोज करने के लिए जनीवा से लावीनी आयी थी। साढ़े दस बजे वह वापस जाने के लिए तैयार खड़ी थी। भोजकक्ष के साथ ही कम्प्यूटर-रूम था। इतनी रात गये मैं कम्प्यूटर पर नहीं बैठता था, न जाने क्यों उस रात, जब फ़ौजिया हमसे विदा लेते हुए बात कर रही थी तो मैं अपनी ई-मेल देखने कम्प्यूटर पर बैठ गया। मेरे बेटे जुबिन की एक ही मेल थी। लिखा था तत्काल उसे फोन करूँ। मेरा माथा ठनका। भारत में रात के दो बजे थे। तत्काल ही फोन किया मैंने। जुबिन ने तुरन्त उठाया। बोला, माँ को सुबह ज्वर चढ़ा था, तीन घंटों में मूर्छित हो गयी थीं, और अब अस्पताल में है। टेस्टों के बाद मेनिनजाइटिस (तनिका-शोथ) पायी गयी है। अब आई.सी.यू. में है और अभी भी मूर्छित है। मैंने कहा, मैं सुबह अपनी बुकिंग में परिवर्तन करके आ रहा हूँ। बेटा बोला, जल्दी मत कीजिए, मुझे सुबह फोन कीजिए। अगले दिन हर दो घंटे बाद फ़ोन करता रहा। हमारे परिवार के डॉक्टर लक्ष्मी कान्त जोशी ने तसल्ली दी, इलाज का असर हो रहा है, आपकी ज़रूरत नहीं, आप वहीं रहिए।

पत्नी इस जानलेवा बीमारी से ठीक होकर 15 दिन बाद घर लौट आयीं, परन्तु शेष 16 दिन एक विषादपूर्ण स्थिति बनी रही मेरे लिए, एक विचित्र भय से घिरा रहा मैं। ऐसे समय में मनुष्य अपनी मनोव्यथा किसी से बाँटना चाहता है। आगमन के कुछ दिन पश्चात दूशान बाहर लॉन में अपनी मेज़ लगाकर अपने लैपटॉप पर काम किया करता था, चाय-नाश्ता, दोपहर का भोजन सब वहीं करता था। पाँच जून को दोपहर का भोजन मैंने वहीं उसके साथ किया। उसे पत्नी की बीमारी के बारे में बताया, यह भी बताया कि चूँकि गाँव का डाकखाना सिर्फ़ दो घंटे के लिए खुलता था, और अब बन्द था, अत: टेलीफ़ोन कार्ड कहीं से प्राप्त करना असम्भव था और मेरे लिए

थोड़ी-थोड़ी देर बाद हैदराबाद फ़ोन करना आवश्यक था। वह कुछ देर चुप रहा, सहानुभूति के दो शब्द बोलकर उसने कहा, अच्छा, अब उसे काम करना है, और वह अन्दर चला गया। मैं हतप्रभ रह गया। भारत में कोई ऐसे न करता। परन्तु बाद में मुझे एहसास हुआ कि वह एक ऐसे देश में रहा है, जहाँ बरसों युद्ध की त्रासदी में वह जिया है। इस वर्ष उस पर स्वयं पर तथा उसके परिवार पर मौत का ख़तरा निरन्तर मँडराता रहा था; अवश्य मेरा विषण्ण चेहरा देखकर उसे विचित्र लगा होगा। अथवा मृत्यु का तांडव उसने इतने निकट से देखा था कि उसका मानस कठोर बन चुका था। परन्तु कठोर नहीं बना था वह। बाद में जब पत्नी की हालत सुधर रही थी तो वह मुझे सांत्वना देता रहता था, और वातावरण को हलका बनाने के लिए कोई न कोई चुटकुला छोड़ देता था, जिसमें मुख्य पात्र मृत्यु होती थी।

अभी कल ही उसकी मेल आयी थी, पत्नी का हाल पूछ रहा था, कह रहा था कि कभी बेलग्रेड में या हैदराबाद में मुझसे और मेरी पत्नी से अवश्य मिलेगा।

दूशान दोपहर में मिला था। शाम को ऐन्न स्नोडग्रास मिली, और उसने मेरी कमीज़ के रंग के चुनाव पर मुझे बधाई दी, मेरे धन्यवाद में ज़्यादा गरमजोशी नहीं थी, अन्ततः बात मेरी मलिन मनोदशा पर आ गयी। कारण जानने पर वह काफ़ी गम्भीर हो गयी। उससे अपना दुख बाँटने पर उसने मुझे धन्यवाद दिया, पूछा कि क्या वह मेरे लिए कुछ कर सकती है। मैंने कहा, नहीं, मैं किसी से सिर्फ़ बात करना चाहता था।

शान्त स्वभाव की थी ऐन्न। किसी को भी कोई समस्या हो तो तुरन्त समाधान खोजने की ज़िम्मेदारी ख़ुद पर डाल लेती थी।

दूशान और ऐन्न ओकले लाल शराब के शौकीन नहीं थे, सिर्फ़ सफ़ेद शराब पीना चाहते थे। वैसे लावीनी था ही ह्वाइट वाइन के लिए प्रसिद्ध। हमारी शाम हमेशा 7 बजे ह्वाइट वाइन से शुरू होती थी और रेड वाइन से समाप्त, जो भोजन के साथ और उसके बाद ली जाती थी। हाँ, यदि भोजन में मछली हो तो उसके साथ ह्वाइट वाइन होती थी। हम बाकी तीन व्यक्तियों को कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता था, अतः कुछ दिनों बाद हम अपनी भोजन-पूर्व की सफ़ेद शराब उन दोनों के लिए छोड़ देते थे। तमीम को वैसे भी वाइन का कोई ख़ास शौक नहीं था। हमारे ग्रुप में हर व्यक्ति दूसरे के लिए कोई छोटी-मोटी कु र्बानी देने को हमेशा तैयार रहता था। सोफ़ी ने अन्त में

हमें बताया कि हमारा ग्रुप अभी तक आये ग्रुपों में एक अत्यन्त शिष्ट ग्रुप था। हैदराबाद में मिली एक मेल में ऐन्न स्नोडग्रास ने मुझे लिखा था कि ग्रुप के सदस्यों में मैं आदर्शस्वरूप था। मैं नहीं समझ पाया उसने क्यों ऐसा लिखा। वो तो वास्तव में वह स्वयं थी।

लावीनी की प्रसिद्ध वाइन हम सब अपने-अपने देश साथ लेकर जाना चाहते थे। मद्य-उत्पादकों के घरों में जाकर यह वाइन ख़रीदनी पड़ती थी। एक हॉल उन्होंने मधुशाला के रूप में इस्तेमाल करने के लिए छोड़ा था। खरीदार सभी शराबों को चख कर देखते थे, सफ़ेद, लाल और गुलाबी शराबों की हर क़िस्म को, और फिर अपनी मनपसन्द शराब खरीदते थे। आम ग्राहक द्वारा एक से तीन लीटर तक शराब खरीदी जाती थी, परन्तु इसी बीच वह चखने-चखने में ही एक-डेढ़ लीटर पेट में उड़ेल चुका होता था। हम पाँचों के साथ सोफ़ी और मार्टिन भी जाते थे, एक उत्सव जैसा माहौल बन जाता था, कुछ पड़ोसी, कुछ ग्राहक और फिर मद्य-विक्रेता का पूरा परिवार साथ आकर बैठ जाता था; साथ में नमकीन परिवार की ओर से पेश किया जाता था।

फ़ौजिया असद ने हम सब को अपने घर जनीवा में रात्रि-भोज का निमन्त्रण दिया था। सोफ़ी की कार में हम सब लोग पूरे न आते, अत: सोफ़ी के पिता ने शेष लोगों को अपनी कार पर ले जाने की पेशकश की। पिऐर की आयु 75 वर्ष है, परन्तु हाईवे पर वह कार इतनी सतर्कता से चला रहा था कि कोई 25 वर्ष का लड़का भी क्या चलायेगा। 140 की गति से वह सब दूसरी कारों को पीछे छोड़े जा रहा था। जनीवा झील के इस पार से उस पार पहुँचने में एक घंटा लग गया। फ़ौज़िया झील से थोड़ी दूरी पर एक सम्भ्रान्त एकान्त क्षेत्र में रहती है। है तो मिस्री ईसाई, परन्तु कब की स्विस बन चुकी है, 'पेन-क्लब' के स्विस-फ्रेंच चैप्टर की अध्यक्ष भी है। भोजन तो सबकी पसन्द का था ही, विशेषकर तमीम और मेरी पसन्द का पूर्वी भोजन, वार्तालाप उससे भी अधिक दिलचस्प रहा। पूरा प्रबन्ध बाहर उसके घर के खुले लॉन में हुआ था। फ़ौजिया ने मेरे नाम का अर्थ पूछ लिया तो मैंने पूर्वी और पश्चिमी सभ्यताओं में मिथकों का हवाला देते हुए बताया कि ग्रीक मिथकों में जैसे समुद्र मन्थन करके अम्बरोज़िया निकाला गया था वैसे ही हिन्दू मिथकों में अमृत निकाला गया था, और दोनों ही पेय प्राणियों को अमर बना देने वाले थे। बात तब संस्कृतियों की तथा भाषाओं की समानताओं की ओर मुड़ गयी थी। संस्कृत, लातिन और यूरोपीय भाषाओं में समान शब्दावली पर प्रकाश डालते हुए मैंने बताया कि कैसे मातृ

तथा पितृ यात्रा करते-करते माता-पिता, माँ-प्यो, मादर, पाद्रे, फ़ादर बन गये, लातिन में वे मातर तथा पातर रहे, दोहित्र से धी और दुखतर और टोख्टर तथा डॉटर जैसे शब्द एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। स्वर बदलता है तो हंस गांज़, वागन वाहन तथा विधवा विडो या विटवे बन जाती है। जर्मन तथा पंजाबी में संज्ञा तथा क्रिया का रूपान्तरण एक जैसा है, हिन्दी में ज़रा सा फ़र्क़ है। फ़ौजिया यह सब नहीं जानती थी, और भी कोई नहीं जानता था, फ़ौजिया कहने लगी, आप इस पर शोधग्रन्थ क्यों नहीं लिखते। मैंने कहा, बहुत लिखे जा चुके हैं, भाषाविज्ञानी भारोपीय भाषाओं के बारे में सब जानते थे, आम लोग नहीं जानते थे।

हिन्दी तथा उर्दू में अनेकों अरबी शब्दों पर भी चर्चा हुई। यह सत्य है कि हिन्दी, विशेषकर उर्दू में अरबी तथा फ़ारसी शब्दों की भरमार है। तमीम राजनीति-विज्ञान में डॉक्टरेट कर रहा है, परन्तु कभी-कभी भाषा के मामले में फेंक देता था— भारोपीय तथा हेमटिक भाषाओं में फ़र्क़ जाने बिना सोफ़ी को बता रहा था कि उसके नाम की उत्पत्ति अरबी के 'सूफ़ी' शब्द से हुई है।

स्विट्ज़रलैंड के और बहुत से शहरों में मेरे मित्र हैं। मेरी मित्र इज़ाबेल लावीनी से 20 मिनट दूर एक गाँव वूफ़लेंस ले वील में रहती है। उससे और उसके पति देव से मेरी भेंट 17 पूर्व वर्ष भारत में हुई थी। और वे तभी से मेरे मित्र हैं। इज़ाबेल मुझे मिलने अपने 8 वर्षीय पुत्र के साथ लावीनी आयी। देव के साथ 20 वर्ष दाम्पत्य जीवन बिताने के बाद इसी वर्ष दोनों अलग हो गये थे। मैं जानता था कि दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। तीन पुत्रियों और एक पुत्र को जन्म दिया था उन्होंने। इज़ाबेल ने बताया, उसे एक जवान लड़की मिल गयी है, अपने घर में ही देव ('देव' का अर्थ फ्रेंच में भी वही होता है जो हिन्दी में होता है) ने दफ़्तर खोल रखा था, और वह उसकी निजी सेक्रेटरी थी। इज़ाबेल ने कहा, मेरे घर पर ही दोनों ने नाजायज़ सम्बन्ध बनाये थे, मुझे वह गवारा नहीं था। देव अब लुज़ान में रहता है, वह लड़की भी उसके पैसे के पीछे थी और देव को छोड़ गयी है। मैंने इज़ाबेल से पूछा कि क्या उसने कोई मित्र बनाया है। उसने कहा, हाँ बनाया तो है, मगर वह बात नहीं है उसमें, वह अभी भी देव से प्यार करती है, अगर उसका कोई स्थायी जीवन-साथी होगा तो देव ही होगा। वे अभी भी अच्छे दोस्त हैं, सम्पर्क में रहते हैं, और उसे उम्मीद है कि जल्दी ही वह उसके पास लौट आयेगा। तथास्तु, मैंने कहा।

मेरा लेखक मित्र रुडोल्फ़ पाइयर बाज़ल में रहता है। उसने फ़ोन पर बात की। अनेक बार में से यह पहली बार था कि मैं स्विट्ज़रलैंड में था और रुडोल्फ़ मेरा

मेज़बान नहीं बना था। हम दोनों को अफ़सोस ही रह गया। पत्नी की रुग्णावस्था के कारण मैं नियत अवधि से अधिक वहाँ नहीं रुकना चाहता था। ज़्यूरिख़ में लेखक फ्रांत्स होलर तथा उसकी पत्नी उर्जुला से फ़ोन पर बात हुई। उसने भी मेरे ज़्यूरिख़ न आने का खेद प्रकट किया। मैंने हमेशा की तरह मज़ाक किया, तुम्हें नोबेल-साहित्य पुरस्कार कब मिलने वाला है। वह बोला, लगता है अब पहले तुम्हें मिलेगा। फ्रांत्स अक्तूबर 2005 में भारत में साहित्य-पाठ करने आया था तो हमारी रसोई से पूरा बचा-खुचा गरम-मसाला ले गया था। उर्जुला ने बताया कि वह गरम मसाला अभी भी चल रहा है और हर बार उसका इस्तेमाल करते समय वे हमें याद करते हैं।

बेर्न के प्रमुख समाचार पत्र बेर्नेर त्साइटुंग की साहित्य-सम्पादक लूसी माख़ाक से मिलने मैं राजधानी बेर्न गया। लूसी ने अपने अख़बार में मेरे कार्यकलाप पर दो-बार आधे-आधे पृष्ठ के लेख प्रकाशित किये थे। व्यक्तिगत रूप से हम पहली बार अब मिले थे। दोपहर का भोजन मैंने लूसी के साथ लिया और फिर उसने मुझे अपने सहयोगियों तथा मुख्य-सम्पादक से मिलवाया। मैंने लूसी को लावीनी आने का निमन्त्रण दिया था, परन्तु समयाभाव के कारण उसने मुझे ही बेर्न बुला लिया था। बातचीत हो चुकने के बाद उसने मुझे कहा, तुमने मुझे बताया नहीं कि तुम एक 'शातो' में रहते हो, और तुम्हारे ग्रुप में ऐन्न ओकले भी हैं। यदि बताते तो मैं ज़रूर आती, ऐन्न ओकले की मैं बहुत बड़ी प्रशंसक हूँ।

मेरा एक और मित्र गॉटफ्रीड विस्स मुझे मिलने गेर्लाफिंगन से बेर्न आया। लूसी के पास आने से पहले मैंने उसके साथ बेर्न रेलवे-स्टेशन के बाहर बने रेस्तराँ में बैठ कर कॉफी पी। गॉटफ्रीड ज़ोलोतुर्न सरकार में कभी मन्त्री होता था। ज़ोलोतुर्न क्षेत्र में रहने वाले दो प्रतिष्ठित स्विस-जर्मन लेखक पीटर बिक्सल तथा गेरहार्ट माइयर उसके घनिष्ठ मित्रों में हैं। गॉटफ्रीड को मैंने माइयर की एक उपन्यासिका के हिन्दी अनुवाद की कुछ प्रतियाँ दीं, ताकि वे लेखक तक पहुँच सकें।

ऐन्न ओकले को मैंने बताया कि लूसी उससे मिलने को उत्सुक थी, परन्तु अँग्रेज़ी साहित्य की एक प्रतिष्ठित लेखिका होने के बावजूद ऐन्न में अहंकार नहीं है। सिर्फ़ संकोचवश मुस्करायी वह। उसे सुबह का नाश्ता करते देखकर कई बार मुझे ईर्ष्या होती थी। मुझे पकाना नहीं आता अत: मैं फलों, सलामी, डबलरोटी वगैरह के साथ कॉफी लिया करता था, जबकि ऐन्न कुछ न कुछ पका लेती थी, ख़ास तौर से आमलेट।

अन्तिम दिन, जब हमें जनीवा के रास्ते अपने-अपने घरों को लौटना था तो तमीम, दूशान तथा ऐन्न स्नोडग्रास अपनी-अपनी उड़ानों के समय के अनुसार पहले निकल गये थे। ऐन्न ओकले को तथा मुझे छोड़ने सोफ़ी मोर्श स्टेशन पर चौथा चक्कर लगाने आयी थी। सोफ़ी ने हाथ जोड़कर मुझे नमस्ते की और कहा कि 'भारत को मेरा नमस्ते कहना।' वह भारत कई बार आ चुकी थी, और भारत को सचमुच पसन्द करती है।

ट्रेन में मैंने ओकले से कहा, सुबह के समय कई बार मेरा मन करता था कि तुम्हें कहूँ कि मुझे एक आमलेट बना दो, परन्तु कह नहीं पाया। लन्दन पहुँचने के कई दिन बाद ओकले ने मेल भेजी, 'मुझे पापबोध रहेगा कि मैंने तुम्हें आमलेट बनाकर नहीं खिलाया।'

ऐन्न ट्रेन से एयरपोर्ट को निकल गयी। मैं मुख्य स्टेशन पर उतर गया, क्योंकि मेरी उड़ान को जाने में अभी आठ घंटे थे। अपना सामान स्टेशन के लॉकर में रखकर मैं जनीवा झील की हवा अन्तिम बार अपने फेफड़ों में भरने के लिए झील पर आ गया। झील की गगनचुम्बी जलधार के निकट खड़े होकर मैंने खुद को भीगने दिया। झील के किनारे एक टायलेट में गया। मर्दाने टायलेटों में लड़कियाँ घुसी हुई थीं। दो बाहर भी खड़ी थीं। किसी भी पुरुष को आते देखकर खिलखिलाती थीं। फिर देखा कि वे इंजेक्शन में कुछ भर कर अपने शरीर को छेद रही थीं, वस्तुत: नशीली दवाइयों से। झील के किनारे के पास एक बहुत बड़ी बस आकर रुकी। इसमें से उतरने वाले सब भारतीय थे। दो-दो लाख रुपये प्रति व्यक्ति देकर वे परिवारों सहित यूरोप-भ्रमण पर आये थे। वहीं पार्क में दरियाँ बिछाकर उन्होंने खाने की चीज़ें निकाल लीं, बच्चे भाग कर आइसक्रीम ले आये। लौट कर माता-पिताओं के पास बैठ आइसक्रीम खाने लगे। और किसी भी चीज़ में उनकी दिलचस्पी नहीं थी। थोड़ी देर में पार्क दरियों और उनके ऊपर बैठे हिन्दुस्तानियों से भर गया। मुझे लगा कि मैं भारत से कभी निकला ही नहीं था।

आस्ट्रियाई कथा

एलिज़ाबेथ राइषर्ट

—अमृत मेहता

एक चीख़ से हिल्डे की नींद खुल गयी। एक चीख़, नहीं जानती वह कि इन दिनों में वह कितनी बार उसके भीतर से या कहीं बाहर से निकली थी। पूर्णमासी की रात थी। कमरे में रुकी हुई साँसें साफ़ नज़र आ रही थी। मोनिका अभी सो रही थी। हिल्डे ने मोनिका की गर्दन पर झलक रही पसीने की ठंडी बूँदों को छुआ। उसने सावधानीपूर्वक करवट बदली। अन्य भाई-बहनों को देखना चाहती थी। हान्नेस को देखना चाहती थी। हान्नेस और वाल्टर पीठ के बल लेटे थे। नींद में थे। उनके नीचे वाला बिस्तर ख़ाली था। माक्स और श्टेफ़ान दोस्तों के यहाँ रात गुज़ार रहे थे।

अब उसे वह तेज़ स्वर फिर सुनाई दिया। यह चीख़ नहीं थी, सायरन था। सायरन बज रहा था—वहाँ—

—वहाँ-बन्दी—शिविर माउटहाउज़न में। कि तुम—वहाँ—नहीं जाओगे। माता-पिता की धमकी। कोई सरकारी प्रतिबन्ध ज़रूरी नहीं था। इमारत में पेज़ेनडोर्फ़र का एक वाक्य काफ़ी था।—वहाँ-से किसी को कुछ नहीं लेना। झुके, कसूरवार सिर।

निकट—स्थित यह—वहाँ—। दृष्टिगोचर यह—वहाँ—।

अब हिल्डे को गोलियाँ चलने की आवाज़ आयी।

इमारत में रहने वाले और लोग भी जाग गये। उसने बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। और श्रीमती काल्ज़ की आवाज़। जो बच्चे को पुनः सुलाना चाहती थी। पेज़ेनडोर्फ़र ने खिड़की खोल ली होगी। और कोई भी खिड़की नहीं खोलेगा। जब सायरन बजेंगे। सायरन की आवाज़ ऊँची हो गयी। पास पड़े पिता खाँस रहे थे। माँ ने एक वाक्य दोहराया :

''लेटे रहो।''

हिल्डे सिहर गयी। उसे निकट आती मोटर-साइकिल की आवाज़ सुनाई दी। उसने सुना कि वह घर के सामने आकर रुक गयी। इमारत की मोटी दीवारें मोटर के शोर को दबा नहीं पा रही थीं।

यह शोर!

हिल्डे के भीतर तक घुस गया। उसकी अन्तड़ियों में समा गया। ज़ीने में

पेज़नडोर्फ़र के क़दमों की आवाज़ आ रही थी। इस घड़ी भी वह अपना नाज़ी नारा ''हाइल हिटलर'' कहना नहीं भूला। मोटर-साइकिल वाला जो कह रहा था वह हिल्डे को समझ नहीं आ रहा था। उसने मोटर-साइकिल के जाने का आवाज़ सुनी। लेकिन वह उसके भीतर समा गये शोर को अपने साथ नहीं ले गयी। फिर पेज़नडोर्फ़र का हुक्म सुनाई दिया :

''हाइल हिटलर!

सभी जाग जाओ!

तुरन्त!

पाँच मिनटों में घर की हाज़िरी—परेड में!'

श्रीमती वागनर का स्वर :

''हाइल हिटलर! क्या हो गया?''

पेज़नडोर्फ़ का जवाब : अभी पता चल जायेगा।

चन्द्रमा की रोशनी हान्नेस के चेहरे पर पड़ रही थी। जिससे यह कोमल चेहरा पीला और सख़्त नज़र आ रहा था। हिल्डे खड़ी हो गयी। भाई-बहनों को जगाया।

माँ कमरे में आयी। अपने भारी शरीर से दरवाज़े से सट गयी।

''अगर कोई नहीं चाहता तो न जाये। मैं कह दूँगी कि लड़का बीमार है।''

यह कहते हुए उसकी आँखें कभी एक—कभी दूसरे बेटे को देख रही थीं। मोनिका पर जाकर आँखें रुक गयीं।

मोनिका ने न में सिर हिलाया। हिल्डे का हाथ पकड़ लिया। हिल्डे ने अपना हाथ खींच लिया। नफ़रत थी उसे माँ से, जो सिर्फ़ मोनिका का सोच रही थी। अपनी बहन से नफ़रत थी उसे, जो अपना हाथ उसके हाथ से मज़बूत करना चाहती थी। वह हान्नेस के पास बैठ गयी। चुनौतीपूर्ण दृष्टि से माँ को देखा।

माँ ने उसे **नज़रअन्दाज़** किया।

''क्या सोचते हो, कुछ चाहिए तुम्हें?

''ठीक है। कब तक पेज़नडोर्फ़र के सामने हाज़िरी-परेड होती है, कौन जाने। गरम कपड़े पहन लो।''

अब पिता भी कमरे में आ गये। एक साथ परिवार के लोग बाहर गये। विलक्षण एक्यभाव। जो नहीं रहा। बाहर जाते ही अलग-अलग हो गये। श्रीमती और श्री वागनर कभी इधर-कभी उधर घूम रहे थे। पिता कभी इस पैर पर कभी उस पैर पर खड़े हो रहे थे। अब भी, जब चन्द्रमा का प्रकाश हान्नेस के चेहरे पर नहीं पड़ रहा था, उसका चेहरा पीला था। अभी भी ''वहाँ से'' सायरन की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। कुत्तों का भौंकना। बीच-बीच में किसी गाड़ी की मोटर का शोर।

इन्तज़ार कर रहे लोग सहमे हुए थे। पेज़नडोर्फ़र आया। उसने हुक्म दिया कि सभी क़तार में खड़े हो जाओ। एक-एक का नाम पुकारा। श्रीमती काल्ज़ नहीं थीं। माँ ने कहा कि वह उसे ले आयेगी।

''फालतू की बात है।''

आदेशानुसार सब क़तार में खड़े हो गये। माक्स और श्टेफ़ान की अनुपस्थिति पर पेज़नडोर्फ़र ने गुस्सा दिखाया।

ये दोनों हमेशा ऐसा करते हैं। जब भी जर्मनी को उनकी ज़रूरत होती है वे यहाँ नहीं होते।

हिल्डे का दिल यह सुन कर **गर्माया** कि इस रात जर्मनी को उनकी ज़रूरत थी।

महान शक्तिशाली जर्मनी।

जर्मनी को बहुत शक्तिशाली बनाना है। अन्य देशों से ज़्यादा।

वह उसे और इमारत में रहने वाले और सभी लोगों को रात में बिस्तर से उठा सकता है।

जर्मनी, यह सिर्फ़ एक लफ़्ज़ नहीं था।

जर्मनी, वे सब थे।

इससे वह भी महान और शक्तिशाली बनती थी।

फ़िलहान, अभी तो पेज़ेनडोर्फ़र की महान जर्मन-घड़ी का वक्त था। उसने इमारत में रहने वालों को बाँट दिया था। माँ को श्रीमती काल्ज़ के साथ इमारत की रखवाली करनी होगी। हिल्डे और मोनिका उसकी मदद करेंगी।

इसके साथ हिल्डे में जर्मनी के मिनट का अन्त हो गया। मदद करो जर्मनी की।

हान्नेस से अलग होकर।

उसके भीतर का जर्मनी इससे छोटा हो गया। काफ़ी **गर्माहट** बाहर निकल गयी। उसने अपना हाथ फ्रित्सी की ओर बढ़ाया। माँ और मोनिका को देखते हुए। जो माँ से चिपटी हुई थी। बाकी सभी लोगों को दो ग्रुपों में बाँट दिया गया। तलाश करने वाली टोलियाँ। ऐसा पेज़नडोर्फ़र ने बताया। एक उसने अपनी निगरानी में ले ली। दूसरी का इंचार्ज पिता को बनाया। इमारत के वासियों के सामने अब वह पहले से कहीं ज़्यादा सख़्त आवाज़ में बोल रहा था। ढूँढा जायेगा, और अब पेज़नडोर्फ़र की आवाज़ ऐसी बन गयी, जिसे हिल्डे अभी तक सिर्फ़ रेडियो में सुना करती थी :

''बड़े से बड़े मुजरिम

रूसी

रूसी भारी मुजरिम

हत्यारे

चोर-उचक्के

क़ातिल

दुशमन

रूसी, रूसी, रूस...''

स्वर कर्कश हो गया। स्वर, जो स्वर नहीं रहा था।

थोड़ी देर के लिए हान्नेस चन्द्रमा की रोशनी के नीचे आ गया। हिल्डे डर गयी। उसे हान्नेस की रक्षा करनी है। हान्नेस, सब भाइयों में **एक** भाई। हान्नेस वाल्टर के पीछे छुप रहा था। फिर वह खिसक गया। पेज़नडोर्फ़र अपनी बीवी के साथ व्यस्त था। उसका ध्यान नहीं गया। हिल्डे ने माँ को छाती पर क्रूस का निशान बनाते देखा। पेज़नडोर्फ़र बीवी को पीट रहा था। वह रोती हुई उसे पकड़ कर खड़ी थी। ''कलंक है यह! तू करेगा यह! मुझसे तुझे इसका बदला लेना पड़ेगा!'' वह खींच कर उसे भीतर ले गया। लोगों की क़तारों ने उसके पीछे दरवाज़े की साँकल लगने की अवाज़ सुनी।

वह लौटा। सबको जाने को कहा।

अहाते में परछाइयाँ रह गयीं।

पेड़ों की, मनुष्यों की, शोर की परछाइयाँ।

माँ का कहना था कि यहाँ हम ठंड से मर जायेंगे। रखवाली नहीं कर सकेंगे।

''रसोई में जाते हैं।''

हिल्डे भागी। उसे हान्नेस को ढूँढ़ना होगा। हान्नेस ही इन परछाइयों को भगा सकता है। हान्नेस, जिसके दुबले चहरे की परछाईं ही नहीं पड़ती थी।

वृक्षवीथी में अचानक उसके इर्द-गिर्द सन्नाटा हो गया। सायरन बजने बन्द हो चुके थे। सिर्फ़ गाड़ियों की सामने वाली बत्तियाँ रात को चीर रही थीं।

चन्द्रमा-युक्त सन्नाटा। ठंडा सन्नाटा। तब उसे एक ऐसी हँसी सुनाई दी, जैसी उसने कभी नहीं सुनी थी।

उसमें आह्लाद जागा। भय भी जागा। हँसी सायरन जैसी थी।

उसे इस हँसी का पीछा करना होगा।

वह भुसौरे की ओर बढ़ी। जिसमें से हँसी रेंग कर निकल रही थी। वह भुसौरे में घुस गयी।

उसने पेज़नडोर्फ़र पर किसी के लहू का फुहारा छूटता देखा।

श्रीमती एम्मेरिष के हाथ में घास उखाड़ने का काँटा देखा।

उसने श्रीमती एम्मेरिष को ज़मीन पर पड़ी आकृति पर उससे वार करते देखा। एक ऐसी आकृति, जैसी हिल्डे ने पहले कभी नहीं देखी थी। उस हडेल चेहरे पर।

जिस पर चमड़ी लटक रही थी।

फिर उसने मुँह फेर लिया।

मुँह फेर लिया, जब काँटे का वार हुआ।

पेज़नडोर्फ़र के जूतों के नीचे पड़े दूसरे आदमी की तरफ से मुँह फेर लिया। अपने भाई वाल्टर से मुँह फेर लिया, जो भुसौरे की दीवार के साथ टिक कर खड़ा था। उसने एक शरणार्थी को दबोच रखा था, जिसे वह हाथों से छूटने नहीं दे रहा था। वरना वह धड़ाम से नीचे गिर जाता। हिल्डे को लगा कि उसके घुटने उसे छोटा, और छोटा बनाये जा रहे थे। उसमें कुछ और ऐसा था, जो घुटनों से लड़ रहा था। उसने चित्र को मस्तिष्क में अंकित कर लिया। पेज़नरडोर्फ़र के बड़े बोलों को अंकित कर लिया। शब्दों का सामंजस्य इन अशक्त शरीरों के साथ।

प्रतिबन्धित विचार।

हिल्डे के सिर में दर्द होने लगा। वह वृक्षवीथि में निकल गयी। गाँव से और लोग आ रहे थे। सोटे लिए हुए। बाग में काम करने के औज़ार लिए हुए। भगोड़े उन्हें पेड़ों पर मिले। आधे मुर्दा लोग बर्फ़ पर पड़े मिले। हिल्डे किसी को नहीं मिली। वह, जो कुछ नहीं चाहती थी। मिल जाने के अलावा। ताकि अन्त हो। इन प्रतिबन्धित विचारों का। **पाप** का। जर्मनी से ग़द्दारी करने का। आगे भी ग़द्दारी करते रहने की मजबूरी का।

क्योंकि चित्र वहीं थे। क्योंकि शब्द उन्हें नहीं मिल सकते थे।

ये शरीर। निहत्थे। बेबस। कमज़ोर।

अन्ततः अन्धकार से एक शब्द निकल कर आया।

क्या एक इकलौते शब्द के ज़रिये शब्दों को दुबारा पकड़ा जा सकता था : भूल जा!

मन में इसे दोहराना, इसे बोलना। धीरे से इसे बोलना। इसे ज़ोर से बोलना। पुकारना। इसमें दूसरों को पुकारना। उसके अलावा कोई इंसान फ़रवरी की इस रात में एक शब्द नहीं ढूँढ़ रहा था। दूसरों की खोज़ का उसकी खोज़ से कोई सरोकार नहीं था।

वह शब्द लेकर घर चली गयी।

शब्द लेकर अपने कमरे में गयी।

हान्नेस ऊपर था। भला हान्नेस वहाँ था। हान्नेस, जिसके कन्धे पर वह सिर टिका सकती थी।

मगर हान्नेस उसका हान्नेस नहीं रहा था। हान्नेस समझा नहीं। उसे परे धकेल दिया। उसे उसके शब्द के पास वापस धकेल दिया। उस पर दो नये शब्द उसे दिये,

''तू भी।''

अश्रुपूरित नेत्र। काँपते होंठ। मगर फिर उसने अपनी बाँहों में भर लिया। उसे ढँक लिया। हान्नेस हिल्डे का दिमाग़ चाटने लगा। मद्धम स्वर में। उसने एक शरणार्थी को अल्मारी में छिपा लिया। उसे किसी ने नहीं देखा था। उसे पूरा विश्वास है। मोनिका और श्रीमती काल्ज़ माँ के साथ रसोई में हैं। बाकी लोग अभी भी इंसानों के शिकार पर लगे हुए हैं।

शब्द ने चेहरा बदल दिया। हिल्डे डर गयी। हान्नेस ने उसे पुनः झटके से हिलाया। मजबूर किया कि उसे सुने। शरणार्थी के लिए भोजन का प्रबन्ध करने में उसकी मदद करे। बाँधने के लिए पट्टी-वट्टी लेकर आये। छुपे हुए आदमी की दाईं बाँह के ऊपरी हिस्से पर गोली लगी थी। हिल्डे को फ़ौजी अस्पताल जाकर मदद करनी चाहिए। इस तरह वह बिना किसी का सन्देह जगाये सारा ज़रूरी सामान ला सकेगी।

हिल्डे जो शब्द उसे देना चाहती थी, उसे सुनकर हान्नेस क्रोध से भर गया।

वह इतनी कमबुद्धि कैसे हो सकती है वह सचमुच यक़ीन नहीं कर सकती होगी कि वह इस रात को कभी भूल पायेगी। या क्या वह भी पेज़नडोर्फ़र की बड़ी-बड़ी बातों से स्वयं को प्रभावित होने देगी?

''हर वह इंसान,'' तब उसने कहा, ''जो इंसानों के इस शिकार के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करता, **अपराधी** होगा।

सुन रही है। हर इंसान! तू भी!''

हान्नेस ने उसे छोड़ दिया। उसका हाथ अपने हाथ में लिया। उसकी बगल में लेट गया। हिल्डे ने उसे ढँक लिया। ऐसे ही पड़े रहे वे। एक कम्बल के नीचे। जब तक पिता एक टोली के साथ लौट नहीं आये। तब वह खड़ा हुआ। चुपचाप जाकर टोली में शामिल हो गया। वह बिस्तर पर पड़ी रही। डर लग रहा था उसे। अपने पुराने डर को उसने अल्मारी पर केन्द्रित कर दिया। उस काँपती अल्मारी पर।

अपने काँपते शरीर पर नियन्त्रण पाने की कोशिश करे।

खड़े होने की कोशिश करे। डर से भाग निकलने की। जर्मनी जाकर शहीद होने की। जो उसे बुला रहा था। ऊँचे स्वर में पुकार रहा था।

बीतते समय के विरुद्ध लेखन

फ़ोल्कर नोएहाउस अनुवाद : अमृत मेहता

1956 से 1960 : पेरिस-प्रवास

मकान मिलने में बहुत परेशानी हो रही थी। ग्रास को काम तो मूर्तियाँ बनाने का ही आता है जिसके अलावा वे लिखते हैं, अत: एक कार्यशाला से प्राप्त होने वाले धन पर निर्भर हैं। होटल का अनावश्यक खर्च बचाने के लिए वह शिकमी-किरायेदार बन जाते हैं। पहले रयू अलबैर II में, फिर एवेन्यू दे शातिओ 36 में। अन्तत: दिसम्बर में जाकर पति-पत्नी को एक उपयुक्त ठिकाना मिलता है, हाउस III एवेन्यू द एतालिए के पीछे, 13 में एक मंडप। निचली मंज़िल की यह जगह, जिसे ऊपर के दो कमरों के फ़्लैट को गरम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, ग्रास का स्टूडियो और कार्यशाला बन जाती है। अन्ना और ग्युंटर वर्षांत लेंत्सबुर्ग में ससुराल में बिताते हैं। 1957 के आरम्भ में वे एक नये फ्लैट में चले जाते हैं।

यह पता ग्रास पर शोध के लिए महत्त्वपूर्ण निकला, जब 1970 में इंगलिश जर्मनशास्त्री जॉन रेडिक ग्रास के जीवन को जानने की जिज्ञासा लिये वहाँ आया और उसे वहाँ के रखवाल से मालूम पड़ा कि पहले वाला किरायेदार पीछे एक बक्सा छोड़ गया था। ग्रास की अनुमति से उसने वहाँ से वह ले लिया और उसे बर्लिन ले आया। ग्रास को अपने पुराने रेखाचित्र मिलने पर खुशी हुई, लेकिन उसमें आज गलत ढंग से 'आदि ढोल' कही जाने वाली पांडुलिपि भी थी, 'टिन ड्रम' के टाइप किये हुए कागज, जिनके बारे में बाद में बात होगी। 1973 तक भी ग्रास यही कहते रहे कि वह उन्हें अपनी तरफ़ से स्टूडियो के आतिशदान में जला चुके थे।

जब वाल्टर ह्योलरर ने अपने नगर जुल्त्सबाख रोज़ेनबेर्ग में एक साहित्य-संग्रहालय की स्थापना की और अपना पूरा 'आक्त्सेंटे' संग्रह उसमें रख दिया तो ग्रास ने अपने मित्र को यह नक्शा भेंट कर दिया और इस तरह संग्रहालय में एक महत्त्वपूर्ण स्वर (आक्त्सेंटे—अ. मे.) जुड़ गया। लेकिन यह बक्सा 'आदि ढोल' के

डिब्बे से बहुत ज़्यादा कुछ है—यह ग्रास के बर्लिन और पेरिस के अन्तिम दिनों के निजी संग्रहालय से न कुछ कम है न ज़्यादा, जो अब सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। ग्रास की हर दृष्टि से केन्द्रीय कविता 'पोलिश ध्वज' के अलावा उसमें ग्रास की आत्मकथा भी है। पुस्तक के जैकेट के पन्ने पर कहीं छपा था, 'उसकी क्षतिपूर्ति'।

ग्युंटर ग्रास का जन्म रविवार 16 अक्टूबर, 1927 को दांत्सिष में हुआ था। अन्ना मारगारेटा से उसका विवाह उसके जन्म के बाद की सबसे बड़ी घटना है। उससे पहले यह पश्चिम जर्मनी छोड़कर बर्लिन आया था। यहाँ वह खुश है।

उसने खेत-मज़दूर, खान-मज़दूर संगतराश और मूर्तिकार के रूप में काम किया है। 1946 तक उसने ड्यूरसलडोर्फ की कला-अकादमी में मूर्तिकला सीखी थी। 1953 से ग्युंटर ग्रास बर्लिन में कार्ल हार्टुंग का छात्र है।

लुख्तरहांट प्रकाशन का लेखा-जोखा देखने से बाज़ार में उनकी कविता के मूल्य का पता चलता है : कुल मिलाकर 2613 प्रतियाँ छपीं थी। जिनमें से 150 नि:शुल्क थीं। 1956-57 में कुल 443 बिकी थीं, 1958 में 37 और 31 दिसम्बर 1958 को 1983 अभी गोदाम में पड़ी हुई थीं, जो बाद में 'टिन ड्रम' की महान सफलता के बाद धीरे-धीरे खाली हो गया था। विदेश में भी पाठकों का ध्यान कविताओं की ओर आकर्षित हुआ : ग्रुप 47 का एक डच सदस्य आद्रीयान मोरीयेन 1957 में उदीयमान कवि का परिचय 'हेट पारोल' तथा 'लितेरायर पासपोर्ट' में करवाता है, और जेरोम रोटेनबर्ग ने 1958 में ग्रास की कविताओं की 'एडैपटेशंस' बनायीं, और वो 1959 में सैन फ्रांसिस्को में सिटी लाइट बुक्स द्वारा प्रकाशित संग्रह 'न्यू यंग जर्मन पोएट्स' में निकालीं। और बक्से में ग्रास के किसी भी पाठ की सबसे पुरानी समीक्षा की प्रतिलिपि पड़ी हुई थी। वाल्टर हुत्सिकर ने 'आक्सेंटे' से उनकी कविता 'सुप्त कुमुदनियाँ' की प्रतिलिपि लेकर समीक्षा की थी और यह 20 दिसम्बर, 1955 को 'टागेसअनत्साइगर फ्यूअर देन कांटोन त्स्यूरिष' में प्रकाशित हुई थीं। 'बर्फ की गहरी परतों के नीचे हँसी',...इस छन्द को एक पौराणिक कथा के प्रकाश में देखा जा सकता है और इसमें वास्तविकता को एक अत्यन्त विलक्षण ढंग से पारदर्शी बनाया गया है। ड्यूरर के निरेखण 'मेलंकोलिया' में भी ऐसी ही भावदशा परिलक्षित होती है।

अन्ना और ग्रास इस कारण बहुत प्रसन्न थे कि उनका पेरिस में रहने वाले कई विदेशियों से सम्पर्क हुआ। पुराने मित्र हैं हाइनरिष हाइने, जिनकी कब्र पर वे कई बार जाते हैं। अन्ना की एक बैलेट तथा नाटक-नर्तकी से मित्रता होती है, वह भी मूर्तिकार हैरी क्रेमर से विवाहित है। वह तब गतिशील आकृतियाँ तराश रहा था, जिसका प्रभाव ग्रास के धूहों पर पड़ा था, बाद में उसे कासल में प्रोफ़ेसर का पद

मिल गया था। अन्ना के जरिये दम्पती का परिचय नृत्य-निर्देशक मार्सल लुइटेपार्ट से भी होता है; सब मिलकर बैलेट की परियोजनाएँ बनाते हैं। इस मंडली में एक स्विस मूर्तिकार भी शामिल है।

पेरिस के सबसे महत्त्वपूर्ण मित्र हैं पाउल सेलान। गीतकार क्रिस्टोफ मेक्कल भी ग्रास को मिलने पेरिस जाते हैं। उनका वृद्ध सेलान से मिलने का समय तय होता है और वह ग्रास को साथ लिये जाते हैं। दोनों में मित्रता हो जाती है और उच्च अर्हताप्राप्त एवं विद्वान सेलान, जो एकोल नार्माल सुपेरियर[1] में जर्मन भाषा और साहित्य पढ़ा रहे हैं, स्कूल की पढ़ाई अधूरी छोड़ने वाले ग्रास के एक और महत्त्वपूर्ण परामर्शदाता और निजी शिक्षक बन जाते हैं। ह्योलरर की तरह वह भी 'टिन ड्रम' के प्रारम्भिक पाठकों में हैं और इस समय में वह ग्रास का सुझाव देते हैं कि वह राब्ले की 'गार्गाटुआ ए पातागुएल' का रेगीज़ द्वारा किया गया अनुवाद पढ़ें, जिस पर ह्योलरर से तुरन्त प्रार्थना की जाती है कि वह पुस्तक का प्रबन्ध करें।

ह्योलरर नियमित रूप से ग्रास दम्पती से मिलने आते हैं और बल्कि 1 अक्तूबर 1958 से वह मित्रों की सहायता से उनके सामने वाले हिस्से में उसी मकान-मालिक मिस्यू लापोत्र के यहाँ एक फ़्लैट किराये पर लेते हैं। ह्योलरर उन दोनों को न केवल भोजन पर बुलाते रहते हैं, जिस पर वह स्वयं खर्च करने की स्थिति में नहीं होते, बल्कि उनकी रोज़ी-रोटी का भी ध्यान रखते हैं। इस तरह वह नियमित रूप से ग्रास की रचनाएँ 'आक्त्सेंटे' में प्रकाशित करते रहते हैं, जिनका अच्छा पारिश्रमिक मिलता है, बल्कि काव्यकला पर दो लम्बे निबन्ध 'बैलेरीना' तथा 'विद्रोह का सारतत्त्व' उनसे विशेष रूप से लिखवाये जाते हैं। आक्त्सेंटे प्रकाशन से हंज़र द्वारा दिया जाने वाला पारिश्रमिक एक कविता के लिए 75 मार्क से लेकर लम्बी रचनाओं के लिए 460 मार्क तक होता था : मासिक 300 मार्क परिवार के जीने के लिए कम नहीं होते थे। ग्रास ह्योलरर से एकदम बेतकल्लुफ हो सकते थे। 1 मार्च, 1958 को वह लिखते हैं, 'क्या तुम अश्व पर जाना और वापसी' की अग्रिम राशि साथ ला सकते हो? मेरे लिये एक-एक टोटो-टिकट[2] भर देना। शायद इस बार शालके[3] जीत जाये। कोशिश करूँगा कि कि ऑफ-साइड न रहूँ, तुम्हारी गोली ग्युंटर।' यह ग्रास की प्रारम्भिक कविता 'रात में स्टेडियम' की तरफ इशारा था : धीरे-धीरे गया फुटबाल आसमान में।/देखा तो दर्शक-मंच भरा था।/एकाकी खड़ा था गोल पर गोली,/लेकिन रेफ़री की सीटी बजी : ऑफ-साइड।''

---

1. बुद्धिजीवियों, शिक्षकों इत्यादि को प्रशिक्षित करने वाला संस्थान
2. फुटबाल-मैचों से सम्बन्धित लाटरी टिकट
3. एक जर्मन फुटबाल टीम

वैसे इसी बीच चार सदस्यों के परिवार का मुखिया बन चुके ग्रास अपने पारिवार के पालन-पोषण के लिए टोटो जीतने पर निर्भर नहीं रहते : 4 सितम्बर को अन्ना ने लेत्सबुर्ग में 'स्वस्थ जुड़वाँ पुत्रों' को जन्म दिया था, जिसका नाम फ्रांत्स और राउल रखा गया। पत्रिकाओं से मिलने वाले पारिश्रमिक और थियेटर में मिलने वाली छोटी-मोटी रायल्टी के अलावा परिवार को चलाने में रेडियो पर कविता पाठ का भी मिला-जुला योगदान रहता है। कोलोन से कार पर चढ़कर रेडियो स्टेशनों का दौरा शुरू होता था, 'जैसे पहले त्रुचादूर किले से किले घूमते जर्मन रेडियो स्टेशन पर कोई न कोई होता था, जो रात का कार्यक्रम प्रस्तुत करता था, कोलोन वाले को हम कुंस्टहोनिष (कलामधु—अ.मे.) कहते थे (शॉर्ट वेव मे—स्टेशन में बेर्नेर होनिष, कला विभाग के अध्यक्ष—फोल्कर नोएहाउस), बड़ा प्यारा आदमी था, जो कहता था, खुदा का वास्ता है, प्रोग्राम में कोई जगह खाली नहीं है। चलो खैर, टेप चलाते हैं। तब मैं कविता पढ़ता था।' हर लिखी कविता के 50 मार्क मिलते थे—और पढ़ने के ऊपर से 50 और; और पैसे तुरन्त नकद दिये जाते थे—''बहुत बढ़िया ढंग था यह—नकदी लेकर कविता पढ़ने का। आमदनी में हमारा दर्ज़ा वैसे भी इतना नीचे था कि कोई टैक्स के बारे में क्या सोचेगा।''

आमदनी में योगदान उन रेखाचित्रों और अश्ममुद्रणों से भी होता है, जिन पर वह पेरिस के एक अश्ममुद्रक के साथ मिलकर काम करते हैं। वैज्ञानिक पुस्तक संस्था के अभी तक चल रहे 'आर्ट सर्किल' ने 1957 में ग्रास के रेखाचित्रों को अपने प्रोग्रामों के लिए लिया था; ज़ूअरकांप प्रकाशन वाले उनसे इप्पोलीतो नीवो की 'पिसाना' के लिए विज्ञापन डिज़ाइन करने का अनुरोध करते हैं। 1957 में टेंपलहोफ के कला-विभाग में ग्रास के रेखाचित्रों और मूर्तियों की एक प्रदर्शनी लगती है, 11 से 17 जनवरी, 1959 तक ब्रेमन के 'रेखाचित्र कैबिनेट' में ग्रास के लगभग पैंतीस रेखाचित्रों की प्रदर्शनी लगती है, जिसके अन्तर्गत वह अपनी कविताओं का पाठ भी करते हैं।

मित्र और ग्रुप 47 के सदस्य भी खरीदारों में हैं। 22 अक्टूबर, 1958 को ग्रास ह्योलरर को सम्मेलन के बारे में लिखते हैं, जिनके पास ग्रास के चित्रों को बेचने का कार्याधिकार था, 'हम दोनों ग्रोसहोल्त्सलोएटे जा रहे हैं—मेरे रेखाचित्रों के बंडल साथ ले आना—ग्रुप को बेचने के लिए'—अन्तिम वाक्य को तीन बार रेखांकित किया था। इस सम्मेलन में 'टिन ड्रम' से पाठ करने पर ग्रास को पहली बार साहजिक 5000 मार्क का पुरस्कार मिलता है, 1959 के आरम्भ में लुखटरहांट प्रकाशन से उपन्यास के लिए अग्रिम धन मिलता है और 1959 की पतझड़ में इसे अपूर्व सफलता मिलने पर ग्रास के आर्थिक कष्ट हमेशा के लिए खत्म हो जाते

हैं'—1960 से वह स्वयं को 'अमीर' महसूस करते हैं।

अपने मित्र को बढ़ावा देने के लिए ह्योलरर जर्मन उद्योग संघ के आर्ट-सर्किल को, जिसके साथ उनके अच्छे सम्बन्ध थे, युवा कवि की प्रतिभा को प्रोत्साहन देने को कहते हैं। संघ केवल प्रोत्साहन पुरस्कार ही प्रदान नहीं करता, बल्कि एक वार्षिक पत्रिका भी प्रकाशित करता है, जिसका नाम है 'यारेसरिंग (वलय) वर्तमान साहित्य और कला' और उसमें प्रकाशित होने वाली रचनाओं के लिए बहुत अच्छा पारिश्रमिक देता है। तब 1956 से पूर्णकालिक सम्पादक योआखिम मोरास तथा निर्माण उद्योग संघ के सिंडीकेट के अवैतनिक सदस्य रूडोल्फ दे ले रोई नियमित रूप से ग्रास को रचनाओं के लिए अनुरोध भेजते रहते हैं। मुश्किल सिर्फ़ यही होती है कि ग्रास की अपनी विशेष पसन्द के नाटक तथा नाटक-अंश बहुत लम्बे होते हैं। अन्तत: ग्रास इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पत्रिका का नाम तक 'बकवास' है—जैसे कि साहित्य केवल किसी वृक्ष की तरह जीवजात वलय में अपने को लपेट लेता हो। 1958 में जाकर जब ग्रास को 'संस्कृति-मंडल' का 2500 मार्क का पुरस्कार मिलता है तो उनकी तीन कविताएँ प्रकाशित होती हैं, जबकि मोरास इससे पहले ग्रास द्वारा भेजे गये 'टिन ड्रम' के अध्याय 'इम क्लाइडराशरांक' (कपड़ों की अलमारी में—अ.मे.) 'गद्य की असाधारण गुणवत्ता के बावजूद' 'परम्परा के रोध के कारण' अस्वीकार कर चुके होते हैं। ह्योलरर द्वारा 1958 में एहतियातन यह पूछे जाने पर कि क्या ग्रास उद्योग से पुरस्कार मिलने पर स्वीकार कर लेंगे तो 6 फरवरी को ग्रास उत्तर में लिखते हैं 'प्रिय वाल्टर, 2500 के नोट मुझे अच्छे लगते हैं। मैं नखरे बिल्कुल नहीं दिखाता और पुरस्कार मैं बिना ना-नुकर के ले लूँगा।'

1958 में त्रीअर में संस्कृति-मंडल के वार्षिक सम्मेलन में पारित प्रस्ताव के आधार पर एक अध्ययन-यात्रा में राइम के एक शैंपेन-सुरागार में यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। प्रशस्ति-पत्र में ग्रास की विशेष प्रशंसा की जाती है, 'हमारे साहित्य की युवा हस्तियों में संस्कृति मंडल की पसन्द के दायरे में इस बार चार लेखक आये हैं (अन्य तीन थे—राइनर ब्रामबाख, क्लाउज डेमुस और गेरहार्ट नोऐमन—फोल्कर नोएहाउस), जिनकी कविता विशेष होनहार है और आश्चर्यजनक रूप से मौलिक है। उनमें से एक को इसलिए प्रथम स्थान के लिए चुना गया कि उनमें कवि प्रतिभा होने के अलावा वह बहुमुखी भी हैं : ग्युंटर ग्रास उसके अलावा कहानियाँ और नाटक भी लिखते रहे हैं, जो निश्चय ही प्रतिष्ठा पाने योग्य हैं, और फिर रेखाचित्रकार और मूर्तिकार भी हैं।' जर्मन उद्योग के केन्द्रीय संघ के सिंडीकेट के अवैतनिक प्रबन्ध-संचालक गुस्ताफ़ श्टाइन का परिचय त्रीअर में ग्रास से हुआ, जो बाद में 'डॉग ईयर्स' में एक पात्र बने, जिसमें कि वह वाल्टर माटर्न को 'उद्योग व कला—

वाहनों तथा प्रमुख अधिकारियों के बीच अनेक समानताओं के बारे में बताते हैं।'

ग्रास ने अपने पेरिस-प्रवास के प्रारम्भिक वर्षों में 1957 के अन्त तक मुख्यत: एकांकी, नाटक और बैलेट के लिए पुस्तकें लिखीं, जिनके लिखने की एकदम सही तारीखें मालूम करना मुश्किल है, क्योंकि ग्रास रचनाओं की कई शब्दयोजनाएँ बनाते थे, जो लिख चुकते थे उसमें परिवर्तन करते थे। 25 से 27 अक्टूबर, 1956 में ग्रुप 47 के श्टर्नबेर्ग झील पर हुए अगले सम्मेलन में ग्रास अपने बर्लिन में लिखे जा रहे नाटक 'होखवास्सर' (बाढ़—अ.मे.) का पाठ करते हैं : जिसे ह्योलरर की सेकेट्री ने पाठ के लिए विशेष रूप से टाइप किया है, ग्रास टाइप की हुई पांडुलिपि में हाथ से सुधार करके साथ ले जाने के लिए फ्रैंकफर्ट में रुकते हैं।

उनके इस पाठ को भी पुन: सफलता मिलती है—अत्यधिक प्रशंसा के साथ-साथ ग्रास को कीपनहोएयर प्रकाशन के नाटक-प्रकाशन से उनके नाटकों के मंचन का अनुबन्ध भी मिलता है। प्रकाशन में ग्रास की रचनाओं की देख-रेख करने वाली मारिया ज़ोमर 1957 में ग्रास से मिलने अतलांतिक पर उनके विहार-स्थल बवों में आती है; और उनसे 1957 के प्रथम अर्ध-वर्ष में उन द्वारा लिखे गये सभी नाटकों के मंचन के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करवाती हैं—ये हैं 'बाढ़', 'बुरे रसोइये', 'अंकल, अंकल', 'बैफलो पहुँचने में दस मिनट बचे' तथा 'जूड़ी', जो 'अंकल-अंकल' का पृथक् मंचन किया जाने वाला पहला अंक था। वेर्नर कोख़ के निर्देशन में कोलोन नाट्यशाला के मंच पर, 'अंकल-अंकल' के उद्घाटन पर नाटक की बहुत बुरी समीक्षाएँ लिखी गयीं, तब फरवरी, 1958 को मारीया ज़ोमर ने ग्रास को 'जर्मन नाटक मंच पर स्थापित करने के' अपने प्रयासों के बारे में लिखा, ''आपके मामले में यह आसान नहीं है, क्योंकि आप एकदम असाधारण हैं, कोलोन की गड़बड़ की वजह से तो यह काम बहुत ही कठिन हो गया है'', लेकिन फिर भी उसने 10 फरवरी को उन्हें साथ ही एस्सन, बोखुम तथा फ्रैंकफ़र्ट में होने वाले मंचनों के लिए शुभकामनाएँ दीं। एस्सन में इसका उद्घाटन मार्सल लुइटपार्ट के सहयोग से रचित बैलेट 'बचा-खुचा' के रूप में होता है, जिसमें संगीत आरीबेर्ट रीमन देते हैं, बोखुम की नाट्यशाला में मानफ्रैड हाइटमन के निर्देशन में 'बैफलों पहुँचने में दस मिनट' का उद्घाटन होता है, फ्रैंकफर्ट यूनिवर्सिटी के नये मंच पर, जहाँ दो साल पहले ग्रास के नाटक 'बाढ़' को उनके प्रथम नाटक के रूप में उद्घाटित किया गया था, उनके 'जाना और वापसी घोड़े पर सवार' का मंचन किया जाता है, जिसका उद्घाटन कुछ समय पहले हैम्बर्ग में हुआ था। 1957 के वर्षान्त में इसे लेंत्सबुर्ग में ग्रास के नाटकों के मंचन के प्रथम चरण के अन्तिम नाटक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस अवधि में उभरते हुए नाटककार के रूप में ग्रास की बहुत माँग है। उत्तर जर्मन रेडियो पर ध्वनिरूपक के निर्माता एगोन मोंक उनके साथ मिलकर एक ध्वनिरूपक का निर्माण करना चाहते हैं, यहाँ तक कि तभी लोकप्रिय होते टीवी के निर्माता निर्देशक भी उनमें दिलचस्पी दिखाते हैं। बाडेन-बाडेन के ज़्यूडवेस्टफुंक (दक्षिण-पश्चिम टीवी) के ध्वनि रूपकों के निर्माता बेन्नो मेयर-वेलाक 28 जनवरी, 1959 को उन्हें पत्र लिखते हें। 'विलक्षण', 'बुरे रसोइये' के प्रशंसक और 'अंकल-अंकल' तथा 'बैफलो पहुँचने में दस मिनट' नाटकों के मित्र के रूप में वह ग्रास को नये माध्यम के लिए काम करने का आमन्त्रण भेजते हैं। लेकिन इसी बीच ग्रास का रुझान महाकाव्य की शैली में रचित रचनाओं की तरफ बढ़ गया था और ऐसा काफ़ी समय तक रहेगा, जब तक कि साठ के दशक के मध्य वे थियेटर के अनन्य रूपों की ओर नहीं लौटेंगे।

चार नाटकों और दो बैलेटों, रेखाचित्रों और मूर्तियों—जिनमें से वैसे कोई भी काम परवान नहीं चढ़ता—के अलावा वे अनेक कविताएँ लिखते हैं, जो 1960 में एक काव्य-संग्रह 'ग्लाइज़द्राइएक्क' में प्रकाशित होती हैं—'अनियत कविता, जो मैंने कुल मिलाकर (और कार्यक्रमबद्ध) अपने काव्य-निर्माण को नाम दिया है, 'प्रयोगात्मक' कविता के विपरीत।' 'अनियत कविता' में एक ओर जहाँ बैरोककालीन 'ऑकेज़नल कविता' का चरित्र हो सकता है दूसरी ओर इसमें गोएठे की परम्परा में संघनित तथा संवर्धित क्षण हैं।

'ट्रिन ड्रम' का सृजन

स्वभावत: इस सब में उनके मन में जिस उपन्यास की अस्पष्ट-सी योजना थी। उसमें व्यवधान पड़ रहा था। उसके शीर्षक भी बार-बार बदल रहे थे, कभी ओस्कार देअर त्रोमलर (ढोली ओस्कार—अ.मे.) कभी देअर त्रोमलर (ढोली—अ.मे.) तो कभी टिन ड्रम। इन सभी कामों के बीच बचे समय में शायद उसी अध्याय ने रेडिक—सूटकेस में जन्म लिया है, जिस पर ग्रास ने 1956 की तिथि अंकित की है, और जिसमें पागलखाने की सम्पूर्ण स्मृति के बाद की वर्णित कथा के साथ बिल्कुल अलग सा लगता है। शायद ख़्यालों को काग़ज पर उतारा जा रहा था, खासकर बैलेट-परियोजनाएँ जैसे 'कार्टेन-हाउस' या वह, जिसमें हथियारबन्द पुलिस वाले कूदकर आते हैं और इनको बाद में उपन्यास की पांडुलिपि में जगह मिलती है। 22 जून, 1957 को अटलांटिक महासागर पर बसे बर्वो से वाल्टर ह्योलरर को लिखे गये एक पत्र में बाद के 'टिन ड्रम' से एक मूलभाव से भेंट होती है, मैं अटलांटिकवाल पर ठहरा हुआ हूँ। बंकरों का अभी भी एक सकारात्मक उपयोग किया जा रहा है,

जिन प्रेमी-युगलों को जल्दी होती है, उन्हें उनमें जगह मिलती है। 'हमला रुक नहीं रहा', जिसे इन्हीं दिनों लिखी गयी कविता 'नार्मंडी' में संक्षिप्त रूप दे देते हैं।

इस उपन्यास पर सफलतापूर्वक काम करने के लिए नये-नये सौन्दर्यबोध की ज़रूरत है, जो अभी तक लिखी गयी सुखांतिकियों से बढ़कर सुख को कथानक तक ले जाये। 1956 में ग्रास ने 'बैलेरीना' में अपने पूर्वलिखित नाटकों वाला सौन्दर्यबोध प्रस्तुत किया था, जिसमें बुनावट में खालीपन को यहाँ-वहाँ से तनिक सा परिष्कृत करके उसे हल्के सौन्दर्य का रूप दिया था। यह 'हलका सौन्दर्य' बिलकुल पवन-मुर्गियों जैसा था, छः महीने बाद ही ग्रास संरचना में उत्कृष्ट, लेकिन सारतत्व में रिक्त 'बैलिरिना' के प्रतिकूल तर्क प्रस्तुत करते हैं तत्त्व प्रतिरोध के रूप में शीर्षक से लिखे गये एक निबन्ध में।

यह निबन्ध जहाँ एक ओर तो शुद्ध तथा रिक्त शिल्प नकारता है, वहीं यह इन 'संरचना के सौन्दर्य से घृणा करने वालों' को भी लताड़ता है, 'जो कथानक की स्थूलता को छाती से लगाये रहते हैं, और अपने उत्साह के अतिरिक्त अन्य किसी भी चीज़ को स्याही का रूप नहीं देते।' इसके विपरीत यह एक 'शिल्प-संवेदना' में विश्वास रखते हैं, जो एक 'नीरस' और परिशुद्ध कला के आदेश से अवश्य, सर्पिल, संवेदनशील, विस्तृत 'कथावस्तुओं' के लिए घोर परिश्रम करती हैं, जो 'सड़क पर' पड़ी होती हैं। यह युद्धोतर जर्मन साहित्य के 'परस्पर-विरोधी सम्राटों' ब्रेष्ट और बेन्न के मध्य कलात्मक सन्तोषण की स्थिति है। ताकि सड़क पर पड़े उस कथानक को, जिसके पास युद्धपूर्व, युद्ध के समय की तथा युद्धोतर समय के पीढ़ियों के अनुभव हैं, सौन्दर्य में ढाला जा सके, उसे कलात्मकता की दरकार है। ओस्कार से बात करते हुए : इसे घंटों घिसेपिटे से एकदम मुक्त ढोल बजाना होगा, 'लाबेवेग में हमारे शयनकक्ष के 60 वाट के बल्वों' तक बिना भटके वापस पहुँचने के लिए। या फिर ग्रास के अपरिवर्तित स्वर में : अर्थात् 'हर शिल्पगत क्षमता और हर शिल्पगत लालसा से अवरुद्ध तथा विस्थापित वास्तविकता, मेरी वास्तविकता, मेरी अपनी वास्वविकता को लौटाना।' पीछे मुड़कर देखते हुए ग्रास 'गद्य लिखते हुए नवलेखक के द्वारा शब्दों की किफ़ायत न करने' की बात करते हैं—जब वह गीतकार थे तो कभी एक बहुत बड़ा कसा हुआ उपन्यास लिखना चाहते थे और फिर पुनः गीत लेखन की ओर लौटना चाहते थे। इसी प्रेरणा से ग्रास 1958 के आरम्भ में 'टिन ड्रम' एकाग्रचित होकर लिखना शुरू करते हैं।

जुड़वा बच्चों के जन्म के दो माह बाद जब ग्रास अकेले पेरिस लौटते हैं तो 12 नवम्बर, 1957 को ह्योलरर को अपनी नयी परियोजना तथा थियेटर की अपनी योजनाओं को स्थगित करने की मंशा की सूचना देते हैं, 'मेरा रविवार जैसा मूड है।

एक मोटा उपन्यास मेरे गर्भ में है, थियेटर की तलब से दबा रहा हूँ, थोड़ी-बहुत कविता, अच्छा खाना, खूब सोना, बेटे और बीवी स्विट्ज़रलैंड में मज़े से हैं, पिता को अभी तक तो फ़्लू नहीं।' साथ ही वह प्रेरणा देने वाली महाकाव्य की शैली की पुस्तकों को पढ़ने की इच्छा की भी घोषणा करते हैं, ''उनजेल्ट[1] ने वादा किया था उसे कुछ पुस्तकें भेजनी चाहिए : फ्रिश, वाल्जर, एंत्सेंसबेर्गर!! बैंजामिन, प्राउस्ट!!!'' 24 जनवरी, 1950 को जब उन्होंने तभी 'जाना और वापसी घोड़े पर' समाप्त ही की थी, वह पुन: एक थियेटर-परियोजना का उल्लेख करते हैं, 'मैंने शिल्लर की 'मारिया श्टुअर्ट' की तर्ज़ पर एक नये मंचीय नाटक का खाका तैयार किया है। मैंने औरतों के नाम रखे हैं एल्ली, मीआ, शाही खानदान से तो नहीं हैं, लेकिन वैसी ही सयानी और पागल हैं। उनके अलावा सिर्फ़ मोर्टाइअर मिस्टर बेबरा के रूप में हैं, और एकदम हाशिये में है, निष्पक्ष और निरा फ़ायदा उठाने वाला आदमी : लेज़ली— जिसका नाम माक्स रखा है।' एकमात्र मोर्टाइअर का नाम यहाँ संन्यास की याद दिलाता है।

अन्तत: 24 मार्च, 1958 को वह लिखते हैं, 'अब तो मैं मोटे उपन्यास को लिखने के लिए चूतड़ जमाकर बैठ गया हूँ। उपन्यास का कथानक...जगह-जगह नीति कथाओं और उपकथाओं से भरपूर है...' यदि सर्जन के प्रारम्भिक समय के असंदिग्ध बयान को ग्रास की बाद की यादों और वर्णन से समस्वर किया जाये, तो वह अन्तत: मार्च, 1958 में उस स्थिति पर पहुँचे हैं, जिसे वह पूरे पन्द्रह वर्ष के पश्चात 'पीछे मुड़कर टिन-ड्रम पर दृष्टि डालते हुए' एक 'संदिग्ध गवाह' के रूप में इस तरह चित्रित करते हैं, ''पहले वाक्य : 'मानता हूँ : मैं। एक अस्पताल में रहने वाला हूँ...' (यही वाक्य तथा स्थिति 56 या 57 की शब्दयोजना में नहीं है— फोल्कर नोएहाउस) अवरोध टूट गये, जहाँ छेद कथा का प्रवाह रोकते थे मैं कुदक जाता था, जहाँ कहानी में स्थानीय रंग होता था, वहाँ डिब्बियाँ खुल जाती थीं और सुगन्ध से सराबोर कर देती थीं। उस पर मैंने अपने आप बढ़ते जाते एक परिवार को जोड़ा, ओस्कार मात्सेराठ तथा उसके परिवार से मैं ट्रामों तथा उनके रूटों पर, समकालिक घटनाओं तथा कालानुक्रम की बेतुकी मजबूरी पर, ओस्कार द्वारा उत्तम पुरुष अथवा अन्य पुरुष में कहने पर एक पुत्र पैदा करने के उसके अधिकार पर, उसके वास्तविक ऋणभार तथा कल्पित ऋण पर वाद-विवाद करता था।''

तभी ह्योलरर आन्द्रत्सेय विर्ठ के माध्यम से कोशिश करते हैं कि वीज़ा पाने के उद्देश्य से ग्रास को किसी सांस्कृतिक संस्था से निमन्त्रण दिलवाया जाये, ताकि

---

1. लेखक, समालोचक और प्रकाशक

दांत्सिष से चौदह साल के विछोह के पश्चात वह स्थल पर महत्त्वपूर्ण सूक्ष्म—विवरण की पड़ताल कर सकें। 1958 के फ्रांसीसी राष्ट्रपति के चुनाव के दौरान डंडों और आग्नेयशस्त्रों से सज्जित वर्दीधारियों द्वारा 'उनकी मनमानी गिरफ़्तारी' तथा चौबीस घंटे की हड़ताल की हवा ने भी उनके उपन्यास का प्रवाह नहीं रोका, 'अब मैं फिर चंगा हूँ और उपन्यास को पुन: काग़ज़ पर उतार रहा हूँ। लेखन ज़्यादा नहीं चलेगा। अगले कुछ दिनों में मेरा पोलैंड का वीज़ा आ जाना चाहिए। जुलाई के आरम्भ में मेरी फ्रैंकफर्ट के रास्ते वापसी होगी,' वह 1 जून, 1958 को ह्योलरर को लिखते हैं। 26 जून, 1958 को वह ग्डांस्क (दांत्सिष का पॉलिश नाम—अ.मे.) से अपनी माँ की 77 वर्षीय मौसी अन्ना से पुन: भेंट के बारे में लिखते हैं, जो चौदह वर्ष के विछोह के बाद इन शब्दों से उनका स्वागत करती है, 'आ वे, वल आये ग्युंटर पुत्र! पर वड्डा थी गें। बै वंज बल्ली।'[1] 'भीतर तक द्रवित मैं बैठ गया।'

ग्रास के काम की अगली रिपोर्ट ह्योलरर को लागो माजोरे से मिलती है, जहाँ वीरा से ऊपर आल्तो कोम्पासो में ग्रास के सास-ससुर का एक घर है जहाँ ग्रास का परिवार भी तब तक गर्मियों का एक बड़ा हिस्सा बिताया करता था, जब तक कि उन्होंने साठ के दशक में लोकार्नो के पास गोर्दावियों में अपना एक घर नहीं खरीद लिया 'बीच-बीच में मैं 'टिन-ड्रम' पर काम करता रहा हूँ और मैंने छ: अध्याय लिख लिये हैं—'1. ताश का घर, 2. ...गिर गया, 3. वह ज़ाज्ये पर उड़ा है, 4. रास्पुटिन तथा ए बी सी, 5. मारीया, 6. बुलबुले उठाने वाला चूर्ण। मैं जानता हूँ कि तुम शीर्षक सूँघकर मज़मून जान जाते हो।' 'पॉलिश पोस्ट' वाला असली काम पड़ा था, जिसे ग्रास पोलैंड में पड़ताल करने के बाद ही लिख सकते थे; सिर्फ़ रास्पुटिन वाला अध्याय बीच में असम्बद्ध कुंदे की तरह खड़ा था।

यहाँ हमें ग्रास के काम करने के ढंग के बारे में एक अन्तर्दृष्टि मिलती है, जिसका उन्होंने अकसर स्वयं ज़िक्र किया है, और जो उनके जुल्त्सबाख के सूटकेस वाले टिन ड्रम के अध्यायों की विभिन्न शब्द रचनाओं से सिद्ध भी होता है। ऊवे जॉनस्न जबकि पिछला पृष्ठ समाप्त किये बिना अगला पृष्ठ तब तक शुरू नहीं करते थे जब तक वह उससे पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं होते थे और फिर वह उसमें परिवर्तन नहीं करते थे, ग्रास पहले से ही शब्दरचना सोचकर रखते थे। उनके अनुसार, उनका काम करने का यह ढंग उनकी मूर्तिकारी के दिनों में डेस्क पर खड़ा होकर काम करने की उनकी आदत से बना है। वह एक योजना को ढाँचे के रूप में आरम्भ करते हैं, जिसमें उनके द्वारा सोचे गये आकार के मुताबिक पृष्ठों की संख्या कल्पित होती

1. आ रे लौट आया ग्युंटर बेटा! पर बड़ा हो गया है। बैठ जा बेटा।

है। फिर पहला वर्णन पुराने फैशन से फाउंटेनपेन के जरिये काग़ज़ पर उतारा जाता है; बाद में कई ऐसे वर्णन पुरानी ऑलिवेट्टी मशीन पर टाइप किये जाते हैं।

इस तरह कहा जाये तो ग्रास सभी अध्यायों पर एक साथ काम कर रहे होते हैं, क्योंकि स्वभावत: आरम्भ के परिवर्तनों के मुताबिक बाद के पाठ में भी दखलअन्दाज़ी करनी पड़ती है, उसी तरह जैसे कि बाद के अध्याय के परिवर्तन पहले के अध्यायों में परिवर्तनों को आमन्त्रण देते हैं। बिलकुल यही है 'मूर्तिकार का काम करने का ढंग', 'लम्बे समय तक सब सोचना, परिवर्तन में आनन्द लेना और यह भी जानना कि अगर मैं घुटने पर कुछ परिवर्तन करता हूँ तो मुझे फिर कान में भी परिवर्तन करना पड़ेगा, क्योंकि सापेक्ष सम्बन्ध स्वाभाविक है।' अत: यह आवश्यक है कि सतह को अन्त तक 'कच्चा' रखा जाये—अन्तिम प्रूफ तक ग्रास बार-बार पाठ में दखलअन्दाज़ी करते थे, जिसमें वह अपनी पांडुलिपि की अन्तिम शब्द रचना पर किसी प्रकाशन-संस्कर्ता से गहन विचार-विमर्श करते थे। और उसकी आलोचना का सम्मान करते थे।

साहित्य पाठों में ग्रास की असाधारण सफलता का रहस्य इस तथ्य में छुपा है कि वह पाठ लिखते समय साथ ही साथ बोलते भी जाते हैं, और वाक्य को तभी अन्तिम रूप देते हैं, जब वह बोलने में भी सुन्दर लगे। इसी कारण, ग्रास के प्रारम्भिक बर्लिन-प्रवास के उनके मित्र बाँसुरीवादक आउरेल निकोलेट ने साठ के दशक में संगीतकारों क्लाउज़ दूबर, वोल्फगांग दूफ़श्मिट और आरीबेर्ट राइमन से अनुरोध किया था कि वे ग्रास के पाठों को बाँसुरी और स्वर के साथ सुरबद्ध करें ताकि निकोलेट और ग्रास उन दिनों मिलकर उसे प्रस्तुत कर सकें। अस्सी और नब्बे के दशक में भी ऐसा ही एक कलात्मक सहयोग तालवाद्य बजाने वाले ग्युंठर 'बेबी' ज़ोअर के साथ हुआ था, जिनके साथ ग्रास अपने ड्युस्सलडोर्फ़ के पुराने साज वाशबोर्ड के साथ लौटे थे।

7 जनवरी, 1959 को बेगार का अन्त होता नज़र आ रहा था। 'टिन-ड्रम' अब धीरे-धीरे अपने रास्ते पर आ चुका है, अब धीरे-धीरे यह अपने अर्जित अन्त की ओर बढ़ रहा है, '19 जनवरी को अभी चार अध्याय शेष बचे थे', 'हर सन्दर्भ में समाप्त' होने के लिए, और 1 फरवरी को अन्ना घोषणा करती है, 'ग्युंठर का उपन्यास तैयार है।'

इस अवधि में प्रकाशकों से विवाद निपटने बाकी थे, जिनमें ग्रास बेखबरी में फँस गये थे। 31 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 1958 तक अलगाऊ के ग्रोस-होल्त्सलोएटे के विशाल, आखेट से लाये हर तरह के पशुओं से सजे, पुराने जर्मन हाल में ग्रुप 47 के सम्मेलन में जब उन्होंने प्रोद्भूत होते 'टिन ड्रम' के पहले और 34वें अध्याय का

पाठ समाप्त किया तो मार्सल राइस—रानिक्की भी जान चुके थे कि जो उन्होंने सुना है, वह असाधारण है। वहाँ उपस्थित कुछ प्रकाशकों के आर्थिक सहयोग से हंस वेर्नर रिषटर ने वहीं साहजिक एक पुरस्कार की घोषणा की, जिसमें गुप्त मतदान में तीन-चौथाई मत ग्रास के पक्ष में पड़े और उन्हें वह पुरस्कार मिला। स्वभावत: इस रचना को हासिल करने में प्रकाशकों की बड़ी रुचि थी। कम-अज-कम तीन प्रकाशकों से ग्रास की गम्भीर व्यापार-वार्ता हुई; उन्होंने निर्णय एक नये तथा कम प्रसिद्ध प्रकाशक फुलिंगन के ग्युंटर नेस्के के पक्ष में लिया। इस कारण 28 नवम्बर, 1958 को प्रकाशक ज़ीगफ्रीड उनज़ेल्ड ने उन्हें लिखा, 'यह जानकर कि आपने अपना उपन्यास नेस्के को दे दिया है, मुझे व्याकुलता हुई है, फिर भी इस वजह से हमारी या आपकी ओर से हमारे परस्पर सम्बन्धों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। बल्कि हम आपको बताना चाहेंगे कि हम यहाँ आपके रचनाकर्म में पूरी रुचि रखते हैं, और प्रकाशक की हैसियत से आपकी रचनाओं को छापने के लिए हमेशा तैयार रहेंगे।' इसी भाव से ऑट्टो वाल्टर भी उसी दिन लिखते हैं, 'तो मामला ग़लत हो गया। ग़लत हमारे लिए। मेरे विचार से आपका चुनाव सही है, और डॉ. रोस्ट (प्रकाशन के निदेशक—फोल्कर नोएहाउस) और मैं आपकी उस सफलता की शुभकामना करते हैं, जिसके आप अधिकारी हैं। हैं तो आप वादाख़िलाफ़, बेवफ़ा और वैसे भी एक उजड्ड आदमी। लेकिन लगता है कि इस मामले में हम भी पूरी तरह बेकसूर नहीं हैं, इसलिए आपको भी दोष नहीं देते...'

लेकिन ग्रास और नेस्के ने भी ग़लत उम्मीदें लगा ली थीं—उसी समय लुख्टरहांट-प्रकाशन ने उन्हें पेरिस में वकील का नोटिस भेज दिया था। उन दिनों प्रकाशकों के आम अनुबन्धों में एक शर्त होती थी, जो आजकल नहीं होती—वही शर्त प्रकाशक के पास पड़े ग्रास के ग्रन्थ 'मुर्गियों के गुण' के अनुबन्ध में भी लगी हुई थी। उसके अनुसार ग्रास को अपनी अगली पांडुलिपि की पेशकश सबसे पहले लुख़्टरहांट-प्रकाशन को करनी होगी। यदि वहाँ से इनकार हो जाये तो वह उसे कहीं भी दे सकते हैं; और लुख़्टरहांट-प्रकाशन ने दृढ़ निश्चय कर कर लिया था कि इस प्रत्यक्ष शानदार सफलता पाने वाली पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए अगर आवश्यकता पड़ी तो वे अपने विशेषाधिकार की रक्षा के लिए अदालत में भी जायेंगे। प्रकाशन के अधिकार के लिए नेस्के विशेषज्ञों का मत लेने का प्रयास करते हैं, जिसके आधार पर अदालत में उनकी और ग्रास की स्थिति मज़बूत होती, लेकिन मुकदमेबाज़ी में पुस्तक के प्रकाशन में असहनीय विलम्ब होता।

इसी बीच कानून की पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्था, लुख़्टरहांट जिसका साहित्यिक पुछल्ला था, के मुख्य भागीदार एडुअर्ड राइफरशाइट, स्वयं मामला

निपटाने का प्रयास करते हैं; जहाँ से भी ग्रास जर्मन सीमा पार करेंगे, वहाँ से वह उन्हें ड्राइवर भेजकर व्यक्तिगत विचार-विमर्श के लिए नोएवीड मँगवा लेंगे। ग्रास मान जाते हैं और पुस्तक पूरी करने के बाद फरवरी के आरम्भ में नोएवीड जाते हैं। सबसे पहले राइफ़रशाइट स्वयं उनके साथ भोजन के लिए आना चाहते हैं लेकिन ग्रास की शर्त है कि अनुबन्ध की शर्त को पहले ख़त्म किया जाये, ताकि बाद में बराबरी के स्तर पर बात हो सके। यही होता है, वातावरण तनावमुक्त हो जाता है, खाना स्वादिष्ट है, दोनों स्वादप्रेमी इस बात पर सहमत हैं और वैसे भी व्यापारिक मसलों पर भी सहमति है। 27 फरवरी, 1959 को ग्रास और राइफ़रशाइट अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करते हैं, जिसके अनुसार ग्रास को 4000 मार्क की अग्रिम राशि मिलेगी। झगड़ा निपटने के बाद 23 फरवरी, 1959 को लुख़्टरहांट के साहित्य-विभाग के अध्यक्ष हांइत्स श्योफ़्लर कुछ समय से अपने सामने टाइप की हुई पांडुलिपि के रूप में बड़ी पुस्तक की तारीफ़ करते हैं, 'आप अपनी रचना पर गर्व कर सकते हैं। आपने अपनी प्रतिभा को सस्ते में न लेकर अच्छा किया है और सांस्कृतिक हलचल से बाहर इस ग्रन्थ के विकसित होने का इस पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।' साथ ही भर्त्सना करते हैं, 'टाइप की बेशुमार गलतियाँ। वर्तनी की गलतियाँ भी हैं...'

परिवीक्षा के लिए व्यापार-विमर्श करते हुए ग्रास को पहली बार अन्देशा होता है कि पचास के दशक के अन्तिम हिस्से में मानदंडों के अनुसार वह पाठकों से कुछ ज़्यादा ही अपेक्षा कर रहे थे। योआख़िम मोरास द्वारा 'यारेसरिंग 58/59 में 'कपड़ों की अलमारी में' अध्याय को 'परम्परा की सीमाओं' के कारण छापने से इनकार कर देना बस एक शुरुआत थी। इसी तरह 3 मार्च, 1959 को ग्रास को व्यक्तिगत रूप से जानने वाले ज़्यूरिख के दैनिक समाचार पत्र 'नोए त्स्यूरिषर त्साइटुंग' के साहित्यिक परिशिष्ट के प्रमुख वेर्नेर वेबर लिखते हैं कि वह आने वाले रविवार 'फोर्तूना नोर्ड' छापेंगे, लेनिक सिर्फ़ 'अनाकोलुथ' तक, 'बिजली दौड़ जाती है, जब...'—'खोद कर निकाली गयी औरत' यहाँ के लोगों के लिए बहुत कुत्सित है। हंस डोलिंगर सूचना देते हैं कि मार्च, 1959 में 'कुल्टूअर' पत्रिका के ईस्टर-संस्करण में 'ईस्टर के पूर्व के शुक्रवार का व्यंजन' को प्रकाशित करेंगे, लेकिन दो दिन बाद ही ग्रास को बताते हैं कि यह योजना पत्रिका की आन्तरिक सेंसर की नीति का शिकार हो गयी है। ऐसे ही रूडोल्फ हार्टुंग अपने 'नोए दोएछे हेफ़्टे' के लिए 'पानी में बुलबुले उठाने वाला चूर्ण' को अश्लील पाते हैं। तभी आद्रत्सेय विर्ठ की मध्यस्थता तथा अनुवाद के जरिये 'पतली मीनार से गाया गया दूर तक असर करने वाला गीत' तथा 'चौड़ा लहँगा' पोलिश पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। पुस्तक प्रकाशित होने से

पहले ही अन्तर्राष्ट्रीय सफलता के मार्ग खुल जाते हैं—1959 के मध्य में मोंदादोरी समूह इटली में प्रकाशन की पेशकश करता है और मार्च में कुर्ट वोल्फ अमेरिका की पैंथेओन बुक्स की ओर से रुचि प्रकट करते हैं।

इसी बीच, पांडुलिपि की बेगार से मुक्त लेखक प्रूफ़-सुधार की प्रतीक्षा करते हुए पेरिस में अँग्रेज़ी के एक शिक्षक के साथ अमेरिका-यात्रा की तैयारी करता है। वाल्टर ह्योलरर ने इंस्टीट्यूट ऑव इंटरनेशनल एजूकेशन से उसके लिए अमेरिका में 1959 के अक्टूबर अन्त तक चार महीने वहाँ ठहरने के एक निमन्त्रण का प्रबन्ध कर लिया है। वीज़ा के लिए की गयी शारीरिक-जाँच में पता चलता है कि ग्रास को टीबी है, दायें फेफड़े में गाँठें हैं, जिन्हें दवाइयों तथा हवा में तब्दीली से ठीक किया जा सकता था—सैनेटोरियम में रहना ज़रूरी नहीं है, पेरिस की हवा नुकसानदेह है, बर्लिन की हवा ग्रास के लिए सबसे अच्छी है। अमेरिका के वज़ीफे के लिए किसी और को ढूँढ़ा जाता है और 1959 के अन्त में ग्रास परिवार बर्लिन लौटने की तैयारी कर रहा होता है।

प्रस्तरवृष्टि

फ्रांत्स होलर **अनुवाद : अमृत मेहता**

भयपूर्ण विक्षोभ से भरी कातारीना पाखाने की सीढ़ियों की ओर भागी, जो सामने वाले कमरे के पिछले सिरे पर बना हुआ था, ठंड से काँपती, डर से काँपती। उसे इस सूराख से घृणा थी, जिस पर पेशाब करने के लिए बैठना पड़ता था, उसका भारी ढक्कन उठाते ही उसमें से भयंकर गन्ध ऐसे उठती थी जैसे किसी अँधेरे भूमिगत कारागार से प्रेत निकल रहे हों, और हवा का एक सर्द झोंका पिछवाड़े को जमा जाता था। सूराख का सिरा अधिकतर गीला होता था, बल्कि गन्दा होता था, उससे पहले बैठने वाला उसे ख़राब करके गया होता था, और उसे सूराख के पास पड़े कपड़े से पोंछना पड़ता था, और यह कपड़ा भी ज़्यादातर साफ़ नहीं होता था। घर में तो हालत यहाँ से भी बुरी थी, क्योंकि वहाँ रेस्तराँ के ग्राहक भी वही पाखाना इस्तेमाल करते थे जो वे और राइनर करते थे, और कातारीना को अभी भी अच्छी तरह याद है कि कैसे एक बार उसने पतलून में ही कर दिया था, क्योंकि अन्दर वाला बाहर ही नहीं निकल रहा था। मास्टर विस्स ने उन्हें ताक़ीद की हुई थी कि बाद में हमेशा हाथ झरने पर धो लेने चाहिए। लेकिन यह दो कामों में से एक पर लागू होता था, उस पर, जिसे वे घर में मोटी मामी कहते थे। अभी तो कातारीना को पतली मामी आयी थी, लेनिक उसे इतना डर लग रहा था कि पूरा करने से पहले ही उसने उठ कर सूराख़ के सिरे पर मूत दिया था। अँधेरे में उसे लकड़ी साफ़ करने के लिए कपड़ा नहीं मिला और उसने दुर्गन्ध के प्रेतों को बन्द करने के लिए जल्दी से ढक्कन ऊपर रख दिया, और चुपचाप बाहर वाले कमरे में तेज़ी से निकल गयी।

रसोई का दरवाज़ा अभी खुला था, जिसके पीछे से आदमियों की आवाज़ें आपस में उलझ रही थीं, दरवाज़े के सामने रोशनी की एक लकीर दृष्टिगोचर हो रही थी, मानो कमरे के तख्तों पर एक पारदर्शी कालीन बिछा हो और शयन-कक्ष के चढ़ाई वाले रास्ते को रोशन कर रहा हो।

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसने अपने नीचे चर्राने की हलकी-सी आवाज़ सुनी और उसे गर्व अनुभव हुआ। उसे उस पर अकेला चढ़ना चाहिए, तभी सीढ़ी को पता लगेगा कि वह कौन है। लेकिन उसे थोड़ा डर भी लग रहा था। रात में दिन जैसी

बात नहीं होती, और कौन जाने कि सीढ़ी-कक्ष में पाखाने के प्रेतों के रिश्तेदार ही रहते हों, उनकी मौसेरी बहनें शायद, जो तब हलके से कराहती हों, जब उन्हें कोई पीड़ा पहुँचाता हो। अचानक उसे लगा कि अगर उसने जूते पहने होते तो अच्छा रहता। लेकिन सोने के कमरे में उसने सिर्फ़ गाउन अपने ऊपर डाल लिया था, जो स्लेट के आतिशदान पर अच्छा गरम हो रहा था, लेकिन ठंड कातारीना के नंगे तलवों से इतनी चालाकी से अन्दर घुसी थी जैसे कोई बिन बुलाया मेहमान उसके गाउन के नीचे बसेरा करने आया हो। आतिशदान के सामने दादी ने उसकी दोनों चोटियाँ खोल दी थीं, हालाँकि कातारीना कब से यह खुद कर सकती थी, लेकिन दादी तो यही समझती थी कि वह अभी छोटी बच्ची है और उसे कोई अन्दाज़ा नहीं था कि अब उसके नीचे सीढ़ी भी चरमराती है।

ऊपर ज्यों ही उसने दरवाज़ा खोला था कि वह घबरा गयी, कैसे कराहा था वो। नये प्रेत आ गये थे, यह ज़रूर सीढ़ियों के और बदबू वाले प्रेतों के मौसेरे भाई होंगे, जो दरवाज़े की चूलों में रह रहे थे। जल्दी-जल्दी वह बड़े बिस्तर को टटोलती उसके साथ आगे बढ़ी, कम्बल को पलटा कर अन्दर घुस गयी। उसने सोचा कि चादर ठंडी होगी, लेकिन जब उसके पंजों को चेरी की गरम गुठलियों की एक थैली लगी तो वह खुश हो गयी, और जब उसके और उसके सोते हुए भाई के बीच चादर ज़रा-सी ऊपर हुई तो गरमी पिघल कर उसकी ओर आ गयी मानो कमरा ग़रम करने की छोटी अँगीठी जल रही हो। उसने कुछ देर ठंड को भगाने के लिए टाँगें इधर-उधर हिलायीं और फिर कम्बल को सिर पर खींच लिया, इतना कि सिर्फ़ उसके बाल ही बाहर नज़र आ रहे थे। पूरे घर में हो सकने वाले अज्ञात और अदृश्य जीवों के बारे में सोच कर वह कम्बल में इतना घुस गयी कि उसके बाल भी बिस्तर में गायब हो गये। लेकिल जल्दी ही उसे हवा की कमी महसूस हुई, उसने सावधानीपूर्वक नाक कम्बल से बाहर निकाली, फिर बैठकर उसने तकिये को दबा कर उसे धसका दिया, जिसमें उसने तब अपना सिर घुसा दिया।

उसका सावधानी रखना कितना सही था यह तब सिद्ध हुआ जब थोड़ी देर बाद सीढ़ी वाले प्रेतों ने कराहना शुरू कर दिया और दरवाज़े की दरार से आने वाली मोक्ष को प्राप्त न हुई रोशनी की एक लकीर ने कभी ऊपर कभी नीचे नाचना शुरू कर दिया। कातारीना फिर से कम्बल के नीचे छुप गयी और कास्पार के इतने नज़दीक ख़िसक गयी कि दोनों की टाँगें आपस में छू रही थीं।

''सो रही है, बच्ची? ''

कातारीना ने कम्बल का किनारा दोनों हाथों से ज़रा-सा आँखों के नीचे तक खिसकाया।

दादी एक मोमबत्ती हाथ में लिये चौखट पर थी।

''क़रीब-क़रीब'' कातारीना ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

मोमबत्ती की रोशनी में वृद्धा दैत्याकार दिखाई दे रही थी, उसकी नाक का साइज़ कातारीना को आलू जितना नज़र आया, और अब जब वह धीरे-धीरे बिस्तर के पास आयी तो कमरे की छत पर एक विशाल परछाईं दादी के साथ हिल रही थी।

''हम प्रार्थना करेंगे'' दादी ने कहा। चूँकि वह मोमबत्ती कहीं भी नहीं रख सकती थी, अत: उसने दोनों हाथ इस तरह जोड़े कि वे मोमबत्ती को भी पकड़े रहें, और फिर वह मन्द स्वर में बोलने लगी :

''आकाश में सिंहासन पर विराजमान
हे मेरे प्रभु जी,
हे ईश्वर-पुत्र यीशु-मसीह!
पूरा वर्ष हमारी रक्षा कर, और
बचा हमारे खेत, गाय, बैल, घर
और उसके भीतर जितने जीव
कातारीना भी, तेरी बच्ची।''

'तथास्तु' कातारीना बुदबुदायी। उसने अपने हाथ कम्बल के ऊपर जोड़ रखे थे। उसके ऊपर छत वाला कमरा था, उसके ऊपर छत थी, उसके ऊपर बारिश लाने वाले बादल थे और उसके ऊपर आकाश, और आकाश पर सिंहासन था, जिस पर परमपिता परमात्मा बैठे थे, और अजीब बात थी कि नीचे भी नहीं गिरते थे, जबकि उन्हें काफ़ी भारी होना चाहिए, आख़िर तो वे बहुमूल्य सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों से लदे हैं। शायद सिंहासन को हर समय स्वर्गदूत उठाये रखते हैं, जो वहीं एक जगह फड़फड़ाते रहते हैं, चीलों की तरह, अपने शिकार पर टूटने से पहले, और अगर आफ़्रा बेबलर देवदूती बन गयी थी तो वह भी कभी वहाँ होगी। मगर वहाँ ऊपर बहुत ठंड नहीं होगी? जितना भी ऊपर जाओ, उतनी ही ठंड बढ़ती जाती है, और ऊपर हाउसश्टोक्क पर हिमनदी थी, जो ग़रम से ग़रम गर्मियों में भी नहीं पिघलती थी।

''और अब हम अपना ध्यान माँ की ओर लगाएँगे'', दादी ने जोड़ा, ''ताकि वह नन्हे-मुन्हे को सही-सलामत दुनिया में ले आये।''

कातारीना स्वर्ग के सिंहासन-महल से सनसनाती हुई निकल कर ''मोएर'' में पहुँच गयी, और यह देखकर प्रसन्न हुई कि वहाँ दाई अपना लाल रिबन लगा कर बैठी हुई माँ की परिचर्या कर रही थी। इस रात देश में कितने बच्चे पैदा होंगे? या पूरी दुनिया में? परमपिता परमात्मा और उसका पुत्र यीशु इतने सारे बच्चे बना कैसे

लेते हैं कि जो भी प्रार्थना करे वे उन सबकी मदद कर सकें ? चलो, चीन तो उन्हें नहीं जाना पड़ता होगा, वहाँ तो ग़ैर-ईसाई हैं, लेकिन फिर भी काफ़ी सारे ईसाई बच जाते हैं, सिर्फ़ ग्लारूस प्रान्त में ही नहीं, बल्कि अमेरिका में भी, माँ का एक भाई निक्लाउस वहाँ का निवासी बन गया था, पिछले हफ्ते ही उसका ख़त आया था, ख़त पूरा दिन रेस्तराँ के बार में लम्बी मेज़ पर पड़ा रहा था, बिल-बुक की बगल में या उसके ऊपर या उसके नीचे, और पिता उसे सबको दिखा-दिखाकर बता रहे थे कि निक्लाउस का नाम अब निक्क था। आशा है कि, और इस विचार ने कातारीना को इस तरह हिला कर रख दिया, मानो उस पर बिजली गिरी हो, आशा है कि जब बच्चा होगा तो परमपिता परमात्मा अमेरिका में नहीं होगा, और अगर यीशु के पास भी एल्म-क्षेत्र पर नज़र डालने का समय न हुआ तो क्या होगा ? अगर ऐसा हुआ तो अच्छा है कि वेरेना एल्मर वहाँ थी। क्या कातारीना को उसकी भी प्रार्थना नहीं करनी चाहिए ? या कम से कम उसके लिए, ताकि परमात्मा स्वयं न आ सके तो उसे शक्ति दे। या शायद वह स्वयं ही आ जाये, या यीशु, या दोनों, क्योंकि फ़ादर मोर ने कहा था कि परमात्मा तो सब जगह होता है, यह उसकी विशेषता थी, लेकिन इसी चीज़ की कल्पना करने में ही तो उसे कठिनाई होती थी।

''देख, कैसे सो रहा है कास्पार'' दादी ने कहा, ''जब वह उठे और उसे धार मारनी हो, या तुझे भी, तो बिस्तर के नीचे दोनों ओर एक-एक चिलमची पड़ी है।''

कातारीना ने सिर हिलाया और यह सोच कर उसका जी मितलाने लगा कि कैसे उसने एक बार पतली मामी करवाने में छोटे भाई की मदद की थी और उसके क्या परिणाम हुए थे। उसने दिल में यही दुआ की कि वह सुबह होने तक सोता ही रहे।

''अच्छा फिर'' दादी ने कहा और दरवाज़े की तरफ़ मुड़ गयी। वास्तव में कातारीना ने सोचा था कि दादी अभी उसका सर सहलायेगी, जैसे माँ हमेशा करती थी।

''दादी'', कातारीना ने कहा, ''एक बात बता, जब तेरे बच्चा होता था तो हमेशा सब ठीक-ठाक हो जाता था ?''

''हाँ हाँ'' दादी ने कहा, ''बच्चा पैदा होता था तब।''

''और तूने कितने बच्चे जने थे ?''

''तेरह।'',

''इतने सारे ?'' कातारीना को यक़ीन नहीं आ रहा था, हालाँकि उसे याद आ रहा था कि यह संख्या उसने पहले सुन रखी है, तेरह या फिर बारह। तब तो, अगर उनके यहाँ भी इतने सारे हुए, उसके भी उतने ही भाई-बहन हो जाएँगे, शायद

ज़्यादा भी। उनके लिए जगह कहाँ होगी, अभी भी तो एक बिस्तर में चार-चार सोते थे? अस्तबल में, वैसे ही जब यीशु बच्चा होता था? गर्मियों में तो उनकी दो गायें अपने बछड़ों के साथ ऊपर आल्प्स पर होती थीं, तब तो चलेगा, लेकिन अब जब वे नीचे लौटती हैं, तो मुश्किल हो जाएगा। या फिर एक बार राइनर परिवार से बात करनी होगी।

''और कभी कोई मरा भी?''

''मरा तो'', दादी ने कहा, ''एक मरा एक साल का। खसरे से। बाक़ी तेरह बड़े हुए हैं।''

''जो मरा था उसका क्या नाम था?''

दादी ने ठंडी साँस ली, ''कास्पार'', बोली वह।

''कास्पार?'' कातारीना चौंक गयी, ''लेकिन एक का नाम तो कास्पार है ही।''

''वह जब दुनिया में आया तो पहले वाला गुज़र चुका था। हमने एक बार फिर कोशिश की थी।''

अच्छा है न कि आदमी दुबारा कोशिश कर सकता है। तो अगर नया बच्चा मर भी जाता है तो माता-पिता दुबारा कोशिश कर सकते हैं। लेकिन किस तरह? फिर वही सवाल, जिसके पूछने की हिम्मत कातारीना में नहीं थी—यह सवाल उतना ही ख़तरनाक था जितना उसके दादा की मौत के बारे में पूछने का—और जितनी देर दादी उसकी चोटियाँ खोलती रहती थी, उसे कोई जवाब नहीं देती थी, फिर चाहे वह दुनिया भर के तूफ़ानों से गुज़रते हुए, कास्पार का हाथ पकड़े उसके पास क्यों न जाये।

''अच्छा फिर,'' कहते हुए दादी पुनः जाने के लिए मुड़ी।

''दादी माँ,'' कातारीना जल्दी से बोली, '''ब्लाइगन' का रास्ता एक घर से होकर क्यों निकलता है?''

दादी हँसने लगी। ''तू सब जानना चाहती है'', वह बोली, ''क्योंकि घर बनाने से पहले से रास्ता वहीं से आता था, और जब यह देखा गया कि यह एकदम चर्च के रास्ते से ऊपर बनाया गया था तो बनाने वाले को आदेश दिया गया कि उन सभी को उसके भीतर से गुज़रने दिया जाये, जो 'ब्लाइगन' से गाँव में, या गाँव से 'ब्लाइगन' में जायें। और आज तक वैसे ही चल रहा है।''

कातारीना को दरवाज़े के पीछे आयी खाँसी और उस आवाज़ का ख्याल आया, जो प्रलय की बात कर रही थी। उसे खुशी हुई कि 'मोएर' में उनके घर के भीतर से चर्च का रास्ता नहीं जाता था, नहीं तो जो भी चाहता उनकी सीढ़ियों के ऊपर चढ़

सकता था। जो अजनबी लोग उनके रेस्तराँ में आते हैं वही बहुत हैं।

गहरी साँस लेते हुए कास्पार उसकी बगल में उठ कर बैठ गया, आँखें झपकाते हुए पहले उसने अपनी नज़रें दादी से बहन की ओर, और फिर बहन से दादी की ओर घुमायीं। फिर उसने ऐसे शक्ल बनायी जैसे अभी रोएगा।

''सोता रह'' कातारीना ने उसका तकिया ठीक करते हुए कहा, ''हम दादी के यहाँ हैं।''

छोटा सीधा होकर बैठा रहा और सोचता रहा कि क्या रोने का कोई फ़ायदा है। जब कातारीना ने कहा, ''डर मत।'' और उसके बाल सहलाये तो उसने निर्णय ले लिया। निर्णय यह था कि रोना नहीं, सिर प्यारे, नरम तकिये पर रखो, बहन को देखो, आँखें बन्द करो और सो जाओ।

''बहादुर बच्चा।'' दादी ने कहा, ''शुभ रात्रि।''

''दादी माँ,'' कातारीना ने कहा, ''कैसे...''

''पिश...दीदी!'' दादी ने होंठों पर उँगली रखते हुए कहा, ''बस शुभ रात्रि।''

''शुभ रात्रि'', कातारीना बुदबुदाई और उसने रोशनी को दरवाज़े से बाहर जाते देखा, उसके पीछे दैत्याकार परछाईं थी, जिसे एकाएक अन्धकार निगल गया। दरवाज़ा बन्द हो गया था। अब कातारीना को लगा कि प्रेत खुशी से चिल्ला रहे होंगे, चूँ-चूँ कर रहे होंगे कि उन्होंने दो बच्चों को फँसा लिया। बेहतर होता अगर दादी दरवाज़े से एक फटन खुली छोड़ गयी होती, तब उसे कम से कम रसोई से आती ज़रा-सी रोशनी नज़र आती रहती।

मगर कातारीना की हिम्मत नहीं हुई कि बिस्तर से उठ कर दरवाज़ा खोलने चली जाये। तो वह बहादुर बच्ची थी, दादी ने जो अभी-अभी कहा था। या उसका मतलब कास्पार से था?

कातारीना कान लगा कर सुनने लगी।

रसोई से हँसने की आवाज़ आ रही थी, लेकिन दूर से, जैसे किसी और मुल्क़ से आ रही हो।

सीढ़ियों वाले प्रेत दादी के क़दमों के बोझ की शिकायत कर रहे थे।

रसोई का दरवाज़ा बन्द हुआ, हँसी की आवाज़ आनी भी बन्द हो गयी।

अब पूरी ख़ामोशी थी। कातारीना को अपने भाई के साँस लेने और अपने दिल की धड़कन के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

''मैं बहादुर हूँ'' कातारीना ने सोचा, ''और मुझे डरना नहीं चाहिए।''

थोड़ी देर में उसके दिल की धड़कन की रफ़्तार कम हो गयी, और बाहर बरसात शुरू हो गयी। हवा के झोंके बरसात की बूँदों को खिड़कियों की झिलमिलियों

पर फेंक रहे थे। कातारीना प्रलय के बारे में सोच रही थी, वह दादी से कहानी के अन्त के बारे में पूछना चाहती थी, यह तो ख़ैर वह जानती थी, बाइबल में भी लिखा था, और गलगंड या बच्चे बनाने से उसका कुछ लेना-देना नहीं था। निश्चित है कि सभी तो नहीं डूबे होंगे, नहीं तो अब इतने सारे मनुष्य न होते।

दूर कुछ गड़गड़ाहट हुई। उम्मीद है कि चट्टान नहीं गिरी कहीं, कातारीना ने सोचा। मगर और हो भी क्या सकता है?

वह 'मोएर' के बारे में सोचने लगी, और कि सभी नये मेहमान की प्रतीक्षा कर रहे होंगे, एट्टी नीचे रेस्तराँ में अन्ना, याकोब और रेगूला के साथ, माँ ऊपर अपने कमरे में दाई के साथ, हाँफती हुई, पसीने से भीगी हुई और त्स्यूज़ी सीढ़ियों के नीचे अपने घरौंदे में। तेज़ी से उसने हाथ जोड़ लिये और मूक प्रार्थना करने लगी, ''मेरे प्यारे मालिक यीशु, चट्टान को रामीन नदिका में फेंक देना।''

यीशु भी आख़िर प्रिय प्रभु का पुत्र था, तो वह भी उसके भाई याकोब की तरह नदिकाओं के प्रवाह को रोक देता होगा, या उसे भी नदिका में पत्थर फेंकने में मज़ा आता होगा, और चूँकि वह सब कुछ कर सकता था, तो फिर उसने एक पूरी चट्टान भी तो नदिका में फेंकी होगी, इतनी ज़ोर से कि पानी की बौछार उड़कर चारों ओर पड़ी, इतनी ऊँची कि पूरी घाटी पर पानी बरसने लगा, बरसात के रूप में, जो निरन्तर लम्बे समय तक खिड़कियों पर प्रहार करती रहेगी।

''हो गई सुबहा, हो गई सुबहा।
बाग में बोल रही है चिड़िया।''

घर में कोई स्त्री यह बालगीत गा रही थी।

कातारीना उठी तो सबसे पहले जिसका ध्यान उसे आया वह थी उसकी गुड़िया, जिसे वह घर में नीचे भूल आयी थी। वैसे वह उसे हमेशा बिस्तर में अपने साथ सुलाती थी, लेकिन कल का दिन कोई आम नहीं था, संडास से वे नीचे वाले कमरे में गयी ही नहीं थी, अत: लीज़ी अभी भी सोफे पर बैठे उसकी राह देख रही थी।

खिड़की की झिलमिली से सूरज की किरणें छन कर अन्दर आ रही थीं। कातारीना को सन्तोष था कि रात गुज़र चुकी थी, और उसे खुशी महसूस हो रही थी कि उसे बिस्तर में खुली जगह मिली थी। उसकी बगल में कास्पार अभी भी सो रहा था। उसने हाथ-पाँव फैलाये तो उसके पंजे चेरी की गुठलियों वाली ठंडी पड़ चुकी थैली को जाकर लगे। उसके पाँव के नीचे बिछी चादर गीली लगी। उसने जब कम्बल ज़रा हटा कर नीचे देखा तो वहाँ एक बड़ा, गीला धब्बा था, जिसमें से मूत की बदबू आ रही थी। मतलब उसके छोटे भाई ने बिस्तर में ही अपना काम कर

दिया था।

कातारीना तुरन्त सोचने लगी कि इसका क्या किया जा सकता है। नहीं, वह कुछ नहीं कर सकती, बिलकुल नहीं। उसे याद आया कि रात को जब थोड़ी देर के लिए जागा था, तब वह दादी से गप-शप कर रही थी, और वह उसे तब चिलमची पर बिठा सकती थी। तब से अब तक वह सोती रही थी।

चिलमची के बारे में सोचते ही अचानक उसके पेट में मरोड़ उठी। जब तक कोई उसे लेने नहीं आता तब तक वह नीचे नहीं जायेगी, इसलिए वह बिस्तर से उठी, झुककर चिलमची बाहर निकाली और उस पर बैठ गयी। शोर करते हुए उसकी धार नीचे चिलमची के तले पर जाकर पड़ी, बाद में वह किसी फव्वारे की छप-छप में बदल गयी, और वह तब निपट चुकी थी। जल्दी ही उसने चिलमची फिर से खाट के नीचे घुसायी और खिड़की पर चली गयी।

उसने एक पल्ला खोला, जिस हुक पर झिलमिली लगी थी उसके हत्थे को नीचे किया। एक क्षण के लिए उसे अपनी आँखें सिकोड़नी पड़ गयीं।

बाहर का दृश्य ऐसे था, मानो अभी सब कुछ ताज़ा-ताज़ा धुला हो, सब कुछ गीला था और चमक रहा था, घास के मैदान, वृक्ष, सामने की पर्वतीय चट्टानें, वन और कटक। ढलानों पर बहुत से छोटे बादल ऐसे लटके हुए थे मानो भुला दिये गये पोंछे हों। आकाश सिर्फ़ हिस्सों में नज़र आ रहा था, अधिकांश चोटियाँ धुँध से ढँकी हुई थीं, जो निरन्तर चलायमान थीं।

सामने वाले कटक पर मार्टिस्लोख[1] नज़र आ रहा था, जिसमें से हो कर सूरज चढ़ने से पहले साल में दो बार धूप नीचे एल्म पर चमकती थी। पिछली बार वसन्त में वह अपनी पूरी कक्षा के साथ चर्च के पीछे वाले घास के मैदान पर गयी थी और देखा था कि सूर्य की किरणें सबसे पहले चर्च के शिखर पर पड़ती थीं, फिर वे गाँव की छतों पर से गुज़रती थीं, वे सब भी उन किरणों के दायरे में आये थे, और फिर धूप ग़ायब होकर थोड़ी देर बाद पुनः आयी थी, जब सूर्य कटक के ऊपर चढ़ गया था।

कातारीना को यह अच्छा लगा था और तब मास्टर ने भी बताया था कि यह एक विरली चीज़ थी, पूरे स्विट्ज़रलैंड में और कहीं ऐसा नहीं होता, और इसीलिए लोग ख़ास तौर से ज़्यूरिख़ और ज़ांक्ट गालेन से आकर मार्टिंस्लोख़ से सूर्य का यह थोड़ी देर का नमस्कार देखने के लिए एल्मर के रेस्तराँ में ठहरते थे। अगले दिन भी यह हुआ था और फिर इस दृश्य के अवलोकन के लिए छः महीने प्रतीक्षा करनी पड़ती

1. जर्मन में लोख़ का अर्थ सुराख़ होता है।

थी। वास्तव में कातारीना ने सोचा, यह लम्बे समय तक नहीं चलेगा, और उम्मीद की कि तब वर्षा नहीं होगी।

मास्टर ने यह भी समझाया था कि सूर्योदय हमेशा एक ही स्थान पर क्यों नहीं दिखता था, यह दिनों के लम्बे और छोटे होने पर निर्भर करता था, और इस पर भी कि सभी ग्रह चलायमान थे, यहाँ तक कि पृथ्वी भी, हालाँकि सुबह उठ कर चिक खोलने पर किसी को इसका पता नहीं लगता था।

अब तक सूर्योदय हो चुका होगा, परन्तु सूरज ऊपर दूर कहीं धुँध के पीछे छुपा होगा।

कातारीना ने सामने प्लाट्टेनबेर्ग की खड़ी दीवार पर नज़र डाली। मध्य में नमी से फूले कुछ धूसर बादल थे, जो लगभग वैसे लग रहे थे जैसे बारूद से उड़ाये जाने के बाद बने बादल होते हैं। क्या यहाँ से पहचाना जा सकता है कि कल कहाँ धमाका हुआ था? लेकिन उसे सिर्फ़ नज़र आ रही थी छिंगल वन में देवदारू के वृक्षों की एक क़तार, जो इस तरह से टेढ़े खड़े थे मानो गिरते-गिरते अचानक बीच में रुक गये हैं। शायद ये दर्रे की 'गहरी खाई' के पास थे, जिसके बारे में ढलानों पर घास काटने वाले दो आदमी रेस्तराँ में बात कर रहे थे। वह इतनी गहरी है, वे कह रहे थे, कि उसमें अगर कोई पत्थर फेंको तो उसके गिरने की आवाज़ तक नहीं आती।

इस पर तो तुम्हें खुद को यकीन नहीं है, एक आदमी चिल्लाया था, जिसकी लाल नाक उसके ब्रांडी के गिलास के पीछे छुपी हुई थी, और तब उनमें से एक बन्दे ने फ़िकरा कसा कि वह खुद ऊपर जाकर क्यों नहीं देख लेता, जिस पर ब्रांडी पीने वाले ने जवाब दिया कि वह पागल नहीं है, और पीटर एल्मर ज़ोर से बोला था कि अगर वह ऊपर गया तो नशे में श्लाग[1] में गिर जायेगा, और फिर आवाज़ आयेगी कि कहाँ गिरा है। इस पर लाल नाक वाला इतनी तेज़ी से उठा कि जिस मेज़ पर वह बैठा था वह पलट गयी थी और उसका गिलास नीचे फ़र्श पर गिर कर चकनाचूर हो गया था, और तुरन्त और सभी लोग भी खड़े हो गये थे और घात लगाकर देख रहे थे, और तभी एट्टी अगर बीच में पड़ कर यह न कहते कि अगर दंगा-फसाद करना है तो बाहर जाकर करो, तो वहाँ ज़रूर मारपीट होती।

यह मारपीट कातारीना के लिए पहली नहीं होती, और फिर वह तुरन्त खड़ी हो जाती थी और सीढ़ी-कक्ष के पास खड़ी हो जाती थी, ताकि ज़रूरत पड़ने पर भाग सके। अगर ज़रूरी नहीं होता था तो वह भय और उत्सुकता से तमाशा देखती थी कि

---

1. ख़तरनाक पहाड़ी ढलान।

आदमी कैसे एक-दूसरे की गर्दन पकड़ते हैं। जब कमरे में बोतलें फिंकनी शुरू हो जाती थीं तब वह तेज़ी से ऊपर को भाग लेती थी।

कभी-कभी ऐसा भी होता था कि दो-चार छोकरे रात को, जब पिता ने रेस्तराँ बन्द कर दिया होता था, रेस्तराँ के सामने आपस में झगड़ पड़ते थे। पिछली बार याकोब और रेगूला ने कातारीना को जगा दिया था और तीनों खिलखिलाते हुए खिड़की से तमाशा देखने लगे थे कि कैसे दो आदमी एक-दूसरे के चेहरे और पेट पर घूँसे मार रहे थे, तमाशबीन एक दायरे में खड़े उन्हें उकसा रहे थे, उनके आस-पास बना यह दायरा उनके साथ-साथ तब पूरे दालान में घूम जाता था जब एक दूसरे को धक्का मार कर पीछे कर देता था। अन्त में जब पिता दोनों झगड़ालुओं को भगाने के लिए नीचे उतरे तो एक के मुँह से खून निकल रहा था। दोनों को उनके दोस्त पकड़ कर बीच में ले आये, चन्द्रमा की रोशनी में दोनों समूह लोहे के पुल की ओर निकल गये, दूर जाते हुए वे छोटे होते गये, लेकिन एक-दूसरे को जो गालियाँ दे रहे थे, उनकी आवाज़ काफी देर तक आती रही थी, मानो चन्द्रमा उनकी प्रतिध्वनि वापस फेंक रहा हो।

'मोएर' और निचली घाटी यहाँ से नज़र नहीं आ रहे थे, वे घर के नीचे फैले वन के पीछे छिप गये थे। घर से गाँव जाने वाले रास्ते पर कोई नज़र नहीं आ रहा था। कातारीना ने घर की दीवार से नीचे देखा और वहाँ उसे बगीचा नज़र आया, जिसमें शाक की क्यारियों के अलावा पीले और लाल फूल खिल रहे थे। क्यारियों के बीच दो मुर्गियाँ कुड़-कुड़ करते हुए दाना ढूँढ़ रही थीं। एक कोने में रेबन्दचीनी के पत्ते लगभग बाड़ के ऊपर तक ऊँचाई में जा रहे थे।

कातारीना ठिठुर रही थी, बाहर सर्दी थी। शायद आज फिर धूप निकले, उसने सोचा, और पर्वत-शिखरों तथा कटकों पर दृष्टि डाली। मार्टिंस्लोख से एक छोटा बादल गुज़र रहा था, जैसे कोई अज़दहा अपने नथुनों से नाक साफ़ कर रहा हो और फिर वह पूरा ग़ायब हो गया। ऊपर से सब ओर मेघ तथा धुँध उमड़ रहे थे और थोड़ी देर में आकाश में एक भी नीला चकत्ता दिखाई नहीं दे रहा था। घर से धुएँ का एक बादल नीचे रास्ते पर उतरा। आग की गन्ध आ रही थी।

कातारीना खिड़की बन्द करके फिर से बिस्तर में घुस गयी। वह बिलकुल सिरे पर दुबक गयी, ताकि वह गीली जगह को न छुए। बदबू कम्बल से बाहर तक आ रही थी, और जा नहीं रही थी।

कातारीना कान लगाकर सुनने लगी। कौन जगा है?

नीचे रसोई में कुछ खटर-पटर हो रही थी, कुरेदनी थी शायद, या चूल्हे का ढक्कन, या फिर पानी का डोल।

अब रसोई का दरवाज़ा खुला और कातारीना ने दादी की आवाज़ सुनी, ''अरे पाउल।'' उसके बाद घर का दरवाज़ा चरमराया और बाहर से नेरो के भौंकने की आवाज़ आयी, जिसे फ़ेट्टर की आवाज़ ने शान्त कर दिया। लेकिन छोटी अन्ना की कोई आवाज़ नहीं, हालाँकि उसे सुबह का गीत भी किसी ने सुनाया था। और बाज़े कहाँ थी ?

अब दरवाज़े के सामने फ़र्श चरमराया। अचानक कातारीना को याद आया कि कल रात उसे डर लग रहा था, और उसे समझ नहीं आया कि वह क्यों डर रही थी। क्या ये वही की वही आवाज़ें थीं ? नहीं, ये वही नहीं थीं। अन्धकार में लिपटी आवाज़ें उजाले में होने वाली आवाज़ों से बिलकुल अलग होती हैं। दरवाज़े की चूलें अब खुशी से चूँ-चूँ कर रही थीं, जब बाज़े ने अन्दर देखकर उनसे पूछा, ''तो हमारे दोनों आलसी क्या कर रहे हैं ?''

''मैं तो जाग गयी हूँ।'' कातारीना ने तुरन्त कहा।

वह कुछ निराश हुई कि उसे जगाने दादी नहीं आयी थी। बाज़े कपड़े बदल चुकी थी। उसने एक नीली स्कर्ट पहनी थी, और उस पर उसने ब्राउन और सफेद धारियों वाला एक पेटबन्द पहना था। बाल ऊपर बँधे थे, लेकिन दादी की तरह नहीं, चिड़िया के घोंसले जैसे, कातारीना ने सोचा।

''और वह ?'' बाज़े ने सिर से कास्पार की ओर इशारा किया।

''इसने बिस्तर में ही कर दिया है'', कातारीना बोली।

बाज़े हँसने लगी। ''वाह-वाह।'' वह बोली, ''फिर से हमें चादर बदलनी पड़ेगी।'' आगे उसने कहा, ''वैसे भी आज पोतड़े धोयेगी, यह भी उनमें धुल जायेगी।''

कास्पार बिस्तर में हिला, खड़ा हो गया, भौचक्का-सा पहले बाज़े और फिर बहन को देखने लगा, और फिर बोला, ''मूतूँगा।''

''ले'', बाज़े ने कहा, झुकी और खाट के नीचे से कास्पार की चिलमची निकाली। कास्पार जाँघिया नीचे करके चिलमची पर बैठ गया और उसने पेशाब कर दिया। फिर वह पादा, और धप्प से एक लौंदा बर्तन में जा गिरा। तुरन्त पूरा कमरा बदबू से भर गया, कातारीना ने मुँह टेढ़ा कर लिया।

''गीला हो गया हूँ।'' खड़ा होकर कास्पार बोला।

''हाँ'', कातारीना ने कहा, ''तूने बिस्तर में कर दिया है।''

कास्पार ने नहीं में सिर हिलाया, लेकिन कातारीना ने कम्बल इतना पीछे हटा दिया कि धब्बा नज़र आने लगा। ''इस काम के लिए चिलमची है यहाँ'', वह सख्ती से बोली।

कास्पार हतप्रभ सा गीली चादर को घूरने लगा, वह इस चम्मच भर पेशाब से अपना स्वयं का सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पा रहा था।

''चल कास्पार'', बाज़े ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, ''हम नीचे जाकर कपड़े पहनते हैं। और तू'', उसने कातारीना से कहा, ''दोनों चिलमिचियों को ख़ाली करके नीचे कमरे में आ जा।''

जब बाज़े कास्पार के साथ चली गयी तो कातारीना ने एक बार सोचा कि क्यों न चिलमिचियों को खिड़की से बगीचे में ही झाड़ दे, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। उसे बुरा लगा कि यह गन्दा काम उसके लिए रह गया था, लेकिन घर में भी तो उसे यह करना पड़ता था, यहाँ फिर हालात बेहतर तो नहीं हो सकते।

होंठों को भींचे हुए पहले उसने अपनी चिलमची उठायी, फिर अपने भाई की, फिर सावधानीपूर्वक वह सीढ़ी से नीचे उतरी और पाखाने में गयी, चिलमिचियों को नीचे फ़र्श पर रख कर उसने ढक्कन को एक ओर हटाया और एक-एक करके दोनों चिलमिचियों को बदबूदार सुराख़ में खाली कर दिया। अभी उन्हें धोकर साफ़ भी करना होगा, और कातारीना जानती थी कि यह काम भी उसे ही पूरा करना है।

उसने पाँव जूतों में डाले, तस्मे बाँधे नहीं, बल्कि उन्हें वैसे ही जूतों में घुसा दिया। जब उसने दालान में दरवाज़ा खोला तो कुत्ताघर से गुर्राने की आवाज़ आ रही थी।

''अच्छा अच्छा नेरो'', उसने डरते हुए कहा और दबे पाँव कुत्ते के सामने से गुज़र गयी, वह पंजों पर सिर रखे उसे देखता रहा। उसने दोनों चिलमचियाँ फव्वारे की धार के नीचे रखीं, फिर अपने हाथ उसके नीचे फैला कर उसने पानी से अपना मुँह धोया। ठंड उसकी उँगलियों और गालों से होकर उसके शरीर में घुस गयी, जल्दी से चिलमचियाँ उठा कर वह घर के अन्दर भागी, जूतों समेत उसने उन्हें सीढ़ियों के पास रखा और फिर रसोई से होकर कमरे में घुस गयी, जहाँ वह तुरन्त घुटनों के बल सोफ़े पर बैठ कर स्लेटी वाले गरम आतिशदान के साथ सट गयी। उसकी काठ की गुड़िया अभी भी वहीं बैठी थी।

''बेचारी लीज़ी'', कातारीना बोली, ''सारी रात सोफ़े पर बैठी रही। तुझे डर नहीं लगा?''

''नहीं'', गुड़िया जैसी पतली आवाज़ में वह बोली, ''मैं कोई डरपोक ख़रगोश नहीं हूँ।''

''हाँ-हाँ'', कातारीना बोली, ''तू तो बड़ी बहादुर है, मुझे पता है। आज रात बाहर नेरो के पास सोयेगी?''

''नहीं, तेरे पास'', काठ की गुड़िया पतली आवाज़ में बोली।

कास्पार को तभी बाज़े कल वाली कमीज़ पहना रही थी और वह मज़े लेकर वार्तालाप सुन रहा था। ''और मेरे पास?'' वह ऊपर-नीचे कूदने लगा।

''सिर्फ़ तब जब तू बिस्तर में नहीं करेगा'', गुड़िया बोली। ''सुना?''

कास्पार के चेहरे से खुशी ग़ायब हो गयी।

''बिस्तर में नहीं करूँगा'', वह रूठे स्वर में बोला।

''पक्का?'' गुड़िया ने सवाल किया।

कास्पार ने हामी में सिर हिलाया।

''अच्छी बात है'', लीज़ी बोली, ''नहीं तो तेरी लुल्ली मैं काट लूँगी।''

''नहीं'', कास्पार घबरा कर बोला।

''हाँ'', लीज़ी ने कठोर स्वर में कहा।

''नहीं, नहीं'' कास्पार ने कहा।

''बस, अब बस, बच्चो'', बाज़े बोली। कातारीना की ओर मुड़ कर उसने उसे आतिशदान के ऊपर टँगे अपने कपड़े पहनने का आदेश दिया, और कहा कि फिर वह रसोई में आ जाये। ''और चोटियाँ?'' कास्पार के साथ देहली पर खड़े उसने पूछा।

''दादी कहाँ है?'' कातारीना ने पूछा।

''दादी फिर से बिस्तर में है। उसकी तबीयत ठीक नहीं है, मगर नाश्ते के बाद मैं तुम्हारी मदद करूँगी।''

कातारीना ने पहले जाँघिया पहना और गाउन उतारा, फिर उसने कुर्ती पहन ली। एक रात आतिशदान के ऊपर पड़े रहने से ये कपड़े बढ़िया ग़रम हो गये थे और उन्हें पहन कर सुख मिल रहा था। जब वह सोच रही थी कि दादी क्या सचमुच बीमार हो गयी है तो उसे सबसे ज़्यादा यह जानने में रुचि थी कि क्या उसने जूड़ा बना लिया था या खुले बाल लिये वह बिस्तर पर पड़ी थी, और कि क्या कल उसकी बिस्तर पर पड़ी माँ से वह अलग लग रही थी। अचानक उसे ख्याल आ गया कि वह 'ब्लाइगन' में किसलिए थी। अन्तर्वस्त्र पहने हुए ही वह रसोई में गयी, उसने बाज़े से पूछा, ''क्या बच्चा आ गया है?''

''अभी हम नहीं जानते'', बाज़े बोली, और उससे कहा कि पंख नुची मुर्गी की तरह इधर-उधर न चले-फिरे, बल्कि पूरे कपड़े पहनकर कास्पार के पास बैठे, जो उस समय डबलरोटी के एक कतले और तनिक कॉफीयुक्त दूध की केतली के सामने बैठा हुआ था।

बिना पैसे इटली की सैर कैसी

याना बेनोवा **अनुवाद : स्वाति यादव**

'काश मैं यात्रा पर चला जाऊँ या फिर बीमार हो जाऊँ।'

मैं भाई के साथ मेट्रो में बैठा था। मेरे भाई की आदत में उतावलापन ज़्यादा रहता है। सारी ज़िन्दगी मैं उससे रोम की प्रशंसा करता रहा। आज पहली बार हम दोनों एक साथ रोम में हैं। हम नावोनि चौक, जहाँ बहुत सुन्दर फव्वारे हैं, वहीं उतर गये।

मैं काफ़ी समय से यहाँ नहीं आया था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि इस बीच यह शहर काफ़ी बदल गया है या ऐसा भी हो सकता है कि यह केवल मेरी भावना ही हो। वर्षा और आकाश में गरजते बादलों के कारण ऐसा लग रहा था। वहाँ नये-नये चेहरे दिख रहे थे।

शहर के बीच का चौक भी बहुत बदला हुआ लग रहा था। फव्वारों की कमी बहुत महसूस हो रही थी। उनके स्थान पर चार मंज़िले मकान बन गये थे। अधिकतर सब मकानों की बाल्कनी में ट्रांजिस्टर चल रहा था। महिलाएँ खिड़कियाँ साफ़ कर रही थीं। कुछ लोग बाहर झाँक रहे थे।

मुझे ऐसा लग रहा था कि जाना-पहचाना शहर कहीं खो गया है और ढूँढ़ने पर भी नहीं मिल रहा है। मैंने रास्ता पूछने की कोशिश की। लेकिन रोमन लोगों ने केवल कन्धे उचका दिये। उन्हें शायद इन सबकी आदत नहीं थी।

ऐसा लग रहा था कि हम एक बहुत ही व्यस्त भीड़-भरी सड़क पर हैं। प्राग—'बूडापेस्ट' वापसी का रास्ता मुझे एक बड़े क्षेत्र की भाँति अन्तहीन लग रहा था।

कोलोसेड को देखकर हम दोनों भाई बहुत खुश हुए। कम से कम कोलोसेड तो अपने स्थान पर था। भाई ने कहा, लेकिन तुम लोग तो रोम हमेशा क्लारिसा के साथ आते थे। वह रोम से भली-भाँति परिचित थी। हाँ...क्लारिसा से अधिक जानकारी रोम के बारे में किसी को नहीं है,'' मैंने भाई की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

हम काफ़ी समय तक कोलोसेड को देखते रहे, फिर हम एमा के घर चले गये। खाना खाने के पश्चात मैंने एमा से पूछा, ''एमा, शहर को क्या हो गया है?'' एमा

शायद हमारी बात नहीं समझ पाई और बोली, शहर को क्या हुआ? शहर तो बिलकुल वैसे का वैसा ही है।

अब मेरी समझ में आ गया, एमा ऐसा क्यों कह रही है, क्योंकि वह शहर के मुख्य भाग से बहुत दूर रहती है। वह वर्ष में एक बार भी बड़ी कठिनाई से वहाँ जा पाती है। उसके पास काम अधिक है। नौकरी करना, घर की देखभाल करना, पति के अतिरिक्त कुत्तों का ध्यान भी उसे रखना पड़ता है।

कुछ समय बाद वह बोली, तुम क्यों परेशान हो रहे हो? एक बार सोचकर तो देखो, रोम क्लारिसा के साथ और क्लारिसा के बिना, अन्तर तो अवश्य ही होगा। तुम क्या सोच रहे हो, मुझे अपने मन की बात तो बताओ?

मुझे खुद को नहीं मालूम, मैं क्या सोच रहा हूँ। शहर बदल रहा है, इस प्रकार का सपना मैं छः मास से देख रहा हूँ। इस प्रकार की यात्रा मुझे अच्छी नहीं लगती।

मुझे हर समय क्लारिसा की याद आती है। क्लारिसा मुझे अकसर कहती थी कि यदि किसी व्यक्ति को बार-बार कोई सपना आता है तो उसे सुबह उठते ही किसी को उसके बारे में बता देना चाहिए, फिर वह सपना उसे कभी नहीं आएगा। लेकिन मेरा घर तो एकदम खाली है। मैं तो एकदम अकेला हूँ। मैं किसे सुनाऊँ।

(अकेला—अकेला—अकेला।—)

एक दिन सुबह उठते ही मैने मुँह हाथ धोए और अपना सपना ठंडे पानी को सुनाया।

मैं बहुत अन्धविश्वासी हूँ और संकेतों पर बहुत विश्वास करता हूँ। कुछ वर्ष पहले की बात है जब मैं क्लारिसा के साथ लिसाबोन गया था। मुझे क्लारिसा को उसके माता-पिता के यहाँ से लेकर आना था। क्लारिसा ने कहा था कि वो घर के बाहर मेरी प्रतीक्षा करेगी। मैं टैक्सी में बैठा-बैठा सोच रहा था कि यदि क्लारिसा घर के बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी तो हमारी पहली यात्रा एक साथ सफल होगी। यदि वह घर के बाहर नहीं मिली तो हम एक-दूसरे को फोन करते रहेंगे, घंटी बजाते रहेंगे और हमारा जीवन कठिनाइयों से भरा होगा। क्लारिसा घर के बाहर नहीं मिली। रात को उसने पुराना रखा हुआ बर्गर खा लिया था, जिससे उसकी तबियत खराब हो गयी थी। मुझे ही जाकर घंटी बजानी पड़ी। वह बाहर आ गयी और हम हवाईअड्डे की ओर चल दिये।

वहाँ पहुँचकर मैं क्लारिसा के लिए अच्छा सा इत्र खरीदना चाहता था। सुगन्ध के लिए अपने व क्लारिसा के हाथ, गर्दन व कान पर थोड़ा इत्र छिड़का। लेकिन वह सब बहुत दुखदायी रहा। उसकी सुगन्ध बहुत तीव्र थी। इससे हमारे सिर में दर्द हो गया। यह तीव्र सुगन्ध हमारा पीछा नहीं छोड़ रही थी। ऐसा लग रहा था कि किसी

तालाब में जाकर डूब जाएँ तो भी यह हमारा पीछा नहीं छोड़ेगी। क्लारिसा को बहुत तेज़ बुखार हो गया था।

लिसाबोन में ही हवाईअड्डे के पास ही एक छोटा सा घर हमें किराए पर मिल गया था। मकान मालकिन का नाम डेलफ़ीना था। उन्होंने हमें बड़े प्रेम से छोटा सा कमरा दिखाया जो सभी प्रकार की सुविधाओं से युक्त था। क्लारिसा का बुखार बढ़ता ही जा रहा था, 40° से ज़्यादा था। मुझे पुर्तगाली भाषा बिलकुल नहीं आती थी। मुझे तो यह भी नहीं मालूम था कि पुर्तगाली में दवाई, डॉक्टर या बुखार कम करने के लिए जो ठंडी पट्टियाँ रखते हैं उन्हें क्या कहते हैं। यहाँ तक कि चाय को भी पुर्तगाली में क्या कहते हैं मैं नहीं जानता था।

डेलफ़ीना भी नहीं जानती थी कि चाय को अँग्रेज़ी, जर्मन, व स्लोवाक भाषा में क्या कहते हैं।

मैं चुपचाप क्लारिसा के पास बैठ गया। मुझे लग रहा था कि क्लारिसा बहुत बीमार है, कहीं उसकी मृत्यु न हो जाए और यदि उसकी मृत्यु हो गयी तो उसके कुछ दिन पश्चात् ही मेरी भी मृत्यु हो जाएगी।

मैं यहाँ घूमने अवश्य आ गया था लेकिन पैसे की कमी मुझे महसूस हो रही थी। ब्रेड व अन्य कुछ खाने का सामान मैं घर से साथ लाया था लेकिन बाज़ार में जाकर मेरा मन उदास हो जाता था कि टमाटर और शिमला मिर्च कितनी महँगी हैं। मेरे पास इन्हें खरीदने के लिए पैसे भी नहीं थे।

मुझे ऐसा लगता था कि मेरे व क्लारिसा के बीच पैसे को लेकर ऐसा कभी नहीं होगा। हम मिलकर सब कुछ खरीदेंगे। हालाँकि क्लारिसा के पास मेरे से कुछ अधिक पैसे थे। वह हमेशा अपनी जेब में व पर्स में सिक्के रखती थी। छोटे सिक्के वह फव्वारे के पानी में उछाल देती थी और कुछ खाने की मेज़ पर रख देती थी। उसे यह भी नहीं मालूम था कि उसके पास कितने पैसे हैं?

शोपेनहाउअर लेखक के हिसाब से हमारी जोड़ी बहुत ही अच्छी व आदर्श थी। गुलाबी रंग व भूरे बालों वाली मेम और गेहुएँ रंग की इटालवी, गोरी जर्मन मेम। अफ्रीकी जोड़ी में उन्होंने अमीर क्लारिसा व गरीब अद्म को भी शामिल कर लिया।

उसी समय मैंने निर्णय लिया कि अपनी यात्रा सम्बन्धी पुस्तक के अन्त में 'पैसे और यात्रा में सम्बन्ध' अध्याय अवश्य जोड़ूँगा। इस अध्याय में पहला दस्तावेज़ टेलीग्राम के रूप में होगा जो दो वर्ष पहले मैंने एमा को रोम में भेजा था, 'बिना पैसे के इटली की सैर कैसी', तुम्हारा अदम, इस बार मैंने लिखा था कि कैसे इटली मैं बिलकुल नहीं जाऊँगा।

जब मैं छोटा था तो मैं हमेशा छुट्टियों में समुद्र तट के पास जाना चाहता था। एक बार मेरे पिताजी पर्यटक एजेंसी से युगोस्लाविया में छुट्टी बिताने के पेमफ्लेट ले आए थे। दो-तीन दिन मैं, माँ व पिताजी वहाँ जाने के विषय में बात करते रहे। बाद में दोनों ने कहा कि युगोस्लाविया नहीं जा सकते, यह हमारे लिए बहुत महँगा है। उसी शाम को मुझे बहुत तेज़ बुखार हो गया, दवाई देने के पश्चात भी कई दिन तक मेरा बुखार नहीं उतरा तो पिताजी ने कहा कि जैसा भी हो हम युगोस्लाविया ज़रूर चलेंगे। जल्दी ही मेरा बुखार ठीक हो गया और हम समुद्र तट के पास छुट्टियाँ बिताने चले गये।

मेरे लिए रोम जाना मुश्किल होता था लेकिन एमा अकसर मिलने हमारे यहाँ आती रहती थी। अब एमा मेरे सामने बैठकर अपनी शादी के विषय में बताने लगी कि दो वर्ष पहले उसने शादी कर ली। एमा बोली, मेरे पति बहुत अच्छे हैं। शादी से पहले एक बार मेरी तबियत खराब हो गयी। मैं सुबह चार बजे उनके घर चली गयी। उन्होंने मेरे लिए कॉफ़ी बनाई, दवाई दी और सूप आदि भी दिया। शादी के बाद भी हम बहुत आराम से रहते हैं, वह मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। खाने में भी मेरी सहायता करते हैं। हम दोनों एक-दूसरे की पसन्द का खाना बनाते हैं। दोनों मिलकर खाते हैं तथा साथ ही समाचारपत्र पढ़ते हैं।

तुम्हारे पति क्या करते हैं ? मैंने एमा से पूछा।

वे अकसर सिलाई करते रहते हैं, मैं उनके लिए कोई भी कमीज़ पैंट खरीद कर लाती हूँ। वो उनको भी ठीक करते हैं। कहीं न कहीं सिलाई अवश्य करते हैं। जेबों को आकर्षक बनाते हैं।

मेरे भाई आराम करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि तुम थोड़ा बाहर घूम आओ, तुम्हारा मन बहल जाएगा। मैं और एमा कॉफ़ी पीने चले गये। कॉफ़ी पीने के बाद अदम ने कहा चलो कुछ खाने चलते हैं, अगर हो सके तो 'खोबोत्नीच्की' खाने चलते हैं।

एमा ने कहा, क्या वह स्थान तुम्हें मालूम है, जहाँ ये सब मिलता है ?

क्यों नहीं, अवश्य, चलो चलते हैं, अदम ने कहा। दोनों खुशी-खुशी अपने प्रिय भोजन की खोज में चल दिये।

रास्ते में एमा ने पूछा, 'आजकल तुम कुछ लिख रहे हो क्या ?'

— और तुम, एमा ?

— मैं... ? नहीं, मैं कभी नहीं लिखती। मैं तो बहुत ही साधारण सी महिला हूँ। मैं जो सोचती हूँ, लिखना चाहती हूँ। बस लिख नहीं पाती, सबको सुनाती रहती हूँ। अनेक बार मुझे इस बात का दुख भी होता है कि मैं यह सब लिख भी सकती

थी। देखो, ऐसा होता है कि लोग मेरे से सुनकर तुरन्त पुस्तक लिख देते हैं। मैं चाहकर भी बाद में लिख नहीं सकती, क्योंकि सब बाद में कहेंगे कि एमा, तुम क्या लिख रही हो? जो तुमने लिखा वो तो पहले ही प्रकाशित हो चुका है। हालाँकि दूसरे लोग मेरे विचार सुनकर अपनी पुस्तक लिख देते हैं। मैं तुम्हें इसका उदाहरण देती हूँ। सिलविया को मैंने एक बार बताया कि मेरे यहाँ दो युवा लड़के रहते थे। फिर बाद में एक को बच्चे की देखभाल करने और दूसरे को कुत्ते को टहलाने का काम मिल गया। मेरा फ्रिज हमेशा खाली रहता था। वे दोनों हमेशा सर्वहारा वर्ग वाली खरीददारी करने जाते थे। यह एक ऐसी खरीददारी होती है जिसमें तुम हाथ में ब्रेड लेते हो, बाकी चीज़ें कोट के नीचे छिपा लेते हो यानी चुरा लेते हो।

लेकिन सिलविया मेरी बात काटते हुए बोली, एमा, यह सब तुम मेरी पुस्तक में पढ़ सकती हो, मैंने यही घटना लिखी है। मैंने कहा, सिलविया, ये सब मेरे अनुभव हैं, मेरे साथ घटी हुई घटनाएँ हैं।

वह फिर भी नहीं मानी। बोली, एमा ये सब तुम्हारे अनुभव नहीं है, मुझे भी मेरी पुत्री मिलेना ने यह सब बताया था।

एमा ने कहा, ऐसा नहीं हो सकता, मिलेना तुम्हें यह सब कैसे बता सकती है, ये सब मेरे अनुभव हैं।

वह फिर बोली, नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, तुम मेरी पुस्तक में पढ़कर सब बता रही हो।

मैंने सोचा कि अब इस विषय पर बात करना व्यर्थ है, सिलविया सच्चाई मानने के लिए तैयार नहीं है। इस घटना से मैं बहुत परेशान रही, लेकिन क्या किया जाए।

मैंने सोचा था कि इसके बाद मैं सिलविया को कुछ नहीं बताऊँगी लेकिन जब भी हम मिलते मैं कुछ न कुछ अवश्य बता देती हूँ। मैं क्लारिसा को भी सब कुछ बता देती हूँ। क्लारिसा के भी कुछ सिद्धान्त हैं। उसके अनुसार व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं कि या तो उसे यात्रा पर जाना पड़ता है या फिर वह बीमार हो जाता है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति है कि उसके पास यात्रा के लिए पैसे नहीं हैं तो उसे यात्रा के स्थान पर बीमारी हो जाए तो अच्छा है। बीमारी भी एक प्रकार की यात्रा है, लेकिन वह सस्ती पड़ती है। अमीर लोग गम्भीर बीमारी के लक्षणों पर बिलकुल ध्यान नहीं देते, क्योंकि वे फिजूल खर्चा करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त वे बुखार को यात्रा सम्बन्धी बुखार समझ लेते हैं और यात्रा के लिए निकल जाते हैं। वे बीमारी को अवसर ही नहीं देते कि वह अपने बारे में बता सके। उनका पूरा ध्यान नये शहर, वहाँ की नयी वस्तुओं में लगा रहता है। कुछ समय पश्चात् इन लोगों को लगता है कि बीमारी ने इन्हें बिना चेतावनी दिए ही यात्रा के बीच में पकड़ लिया है। इस

समय नये शहर में इनका मन लग गया था।

यह सब कितना रोचक है ?

हाँ—लेकिन मेरे भी सिद्धान्त इससे बिलकुल मिलते-जुलते हैं, एमा—

इससे मिलते-जुलते ? एमा आश्चर्यचकित रह गयी ?

— हाँ—मैं इस विषय में अब दूसरे वर्ष पुस्तक लिख रहा हूँ।

— लेकिन इस विषय में सिलविया पहले ही एक पुस्तक लिख चुकी है। कुछ ही समय पहले रोम में प्रकाशित हुई है। यह देखो, सिलविया ने यह पुस्तक तुम्हारे लिए भेजी है और तुम्हारे लिए कुछ लिखा भी है।

— मेरे मन में इस पुस्तक के विषय में कुछ समय से अजीब से ख्याल आ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि मेरे सिद्धान्तों के बारे में कोई और भी जानता है और वह भी लिख रहा है।

— चलो कोई बात नहीं, —चिन्ता मत करो।

एमा बहुत ही समझदार थी। वह अनेक लेखकों को जानती थी, बहुत ही सरल व सहज थी। हमेशा दूसरों की सहायता करती थी। खोबोत्नीचकी खाकर हम वापस आ गये।

सिलविया की पुस्तक मैंने एक ही रात में पढ़ ली। मुझे बिलकुल आश्चर्य नहीं हुआ। यह पुस्तक बिलकुल मेरी पांडुलिपि से मिलती थी, केवल दो अध्यायों को छोड़कर।

कुत्तों को नहलाना व सर्वहारा वर्ग की खरीददारी, ये दोनों बातें मेरे मन से नहीं निकल रही थीं। यह बात मुझे मेरे पुत्र मिलान ने बताई थी, जो आज भी कुत्ते नहलाने का काम करता है। मैंने भी यह सब अपनी पुस्तक में लिखा था, कहीं से चुराया नहीं था।

सिलविया से मैं भी पिछली बार कॉफी हाउस में मिला था। हम दोनों दो अच्छे मित्रों की भाँति जुदा हुए थे, ऐसे मित्र जिसमें से एक को पार्टी में जाना था और दूसरा वहाँ जाना नहीं चाहता था। पहले ने अपने मित्र को भुलाने के लिए खोबोत्नीचकी के विषय में बताया, लेकिन दूसरे मित्र ने केवल हाथ हिला दिया और विदा ली।

सिलविया की पुस्तकों में खोबोत्नीचकी का वर्णन हमेशा बहुत अच्छा लगता है। मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं ज़मीन के ज़्यादा नज़दीक रहता हूँ और सिलविया समुद्र के। शायद समुद्र से दूर रहने वाले खोबोत्नीचकी अपना आकर्षण खो देते हैं। शायद अधिक बर्फ़ के अन्दर रखने के कारण उनका स्वाद बदल जाता है।

लेकिन कोई बात नहीं, इन सबके बीच एमा आ गयी, जो सच्चे दिल से सब कुछ बताती है। ऐसे लोग बहुत कम मिलते हैं।

तन्हा आदमी

मार्ज़िया आदिल **अनुवाद : नासिरा शर्मा**

मोहल्ले वालों और गली के लोगों ने उस आदमी को आज से पहले कभी नहीं देखा था। यह भी नहीं जानते थे कि उनका इस ख़ानदान से रिश्ता क्या है। यह सवाल किसी ने उनसे पूछा भी नहीं। क्योंकि वे अमीर लोग थे। यह बेचारा फ़क़ीर। इस तरह का फ़र्क़ किसी ख़ानदान में कैसे हो सकता है ?

हम लोग उस वक़्त तीसरी कक्षा में पढ़ रहे थे। जब वह आदमी मैले फटे अँगोछे को सर पर बाँधे रहता था, जो सफ़ेद से पीले रंग का हो चुका था। जब हम खेलने जाते और उसे सामने से गुज़रते देखते तो दूसरे बुज़ुर्गों की तरह सलाम करते, मगर जवाब न पाते। यह हर बार होता। वह दुआ या वालेकुम अस्सलाम दूसरे बूढ़ों की तरह नहीं करता था। एक वक़्त के बाद हमने उसे सलाम करना छोड़ दिया। बस, जिज्ञासा भरी नज़रों से उसे ताक़ते थे। वह पास से गुज़र जाता। अब हमें यक़ीन हो गया कि वह ज़रूर बहरा है।

उसकी आँखें फीकी थीं। उसमें कोई रौशनी नहीं थी कि हम उसकी आँखों का रंग देख पाते कि वे नीली हैं या हरी। पैर कमज़ोर, धूप से तपा चेहरा, माथे के बीच शिकनें—जैसे सूखे पेड़ की शाखाएँ। शान्त और आस-पास के माहौल से लापरवाह।

एक दिन हवेली से एक लकड़ी बग़ल में दबाए बाहर निकला और उसे गली के किनारे रखकर अन्दर गया और कमान लेकर लौटा। कमान पर तीर चढ़ा बड़ी संजीदगी से निशाना साधा। जब कोई राहगीर या सवारी गुज़रने वाली होती तो वह रुक जाता और पूरी एहतियात के साथ उसके गुज़र जाने के बाद फिर वही खेल शुरू कर देता था। जब भी मैं किसी ऐसे आदमी की कहानी सुनता कि वह ऐसा नेक और ख़ुदातरस (सदाचारी) था जो चींटी भी न मार सकता था, तो मेरे ज़हन में उसी मर्द का चेहरा उभरता था।

जाड़े की दोपहर में वह पहाड़ी के ऊपर जाकर सो जाता था और शाम ढलने के पहले घर लौट आता था। इधर कुछ दिनों से नीला आसमान घटाओं से घिरा था। जाड़ा भी बढ़ गया था। रात ठंडी थी और हम गर्म कमरों से जब सुबह सोकर उठते तो चारों तरफ बर्फ़ गिरी देखकर ख़ुश होते। मामान, बाबा जो खाने को देते बिना हठ

किए उसे खाकर हम गर्म टोपी और कोट जूते पहनकर बर्फ़ से खेलते। इधर-उधर भागते रहते थे, मगर वह आदमी हमको कहीं नहीं दिखा।

उस दिन वह दीवार से टिका बैठा दिखा। आँखें फटी हुई थीं। उसकी आँखों में उदासी थी। कुछ देर बाद वह उठा, हवेली में गया और एक बच्चे का हाथ पकड़े बाहर निकला। वह ख़ुश था। चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह बच्चे का हाथ पकड़ पहाड़ी की तरफ़ गया।

तब हमने सोचा कि यह तो बिना बीवी, बच्चे के हैं। न घर है न कोई सहारा।

पता चला उसको फालिज़ हो गया है। एक पैर और हाथ सुन्न पड़ गया है वह अब बिस्तर से लग गया था। कई साल इसी तरह गुज़र गये।

एक दिन जब मैं दोस्तों के साथ स्कूल जा रहा था तो पिता के पास कुछ लोग खड़े दिखे, जिसमें मस्जिद के क़ारी भी थे। वे तेज़ी से हवेली की तरफ़ बढ़े। पड़ोसी आ-आकर हवेली में दाख़िल हो रहे थे। उनको पता लगाना था कि असली माजरा क्या है? हम भी बिना कुछ सोचे-समझे उनके पीछे हो लिए। हवेली पहुँच देखा सब एक छोटे-से कमरे की तरफ़ बढ़ रहे थे। हम भी उधर ही बढ़े।

छोटी-सी कोठरी, ठंडी, बोसीदा सीली बदबू से भरी हुई थी। कुछ बदबू के तेज़ भबके से पीछे हटे, कुछ ने हिम्मत करके क़दम बढ़ाया। हमने जो दृश्य देखा उसे देखकर हम जम-से गये थे।

ऊपर ख़स्ता छत से निकली ईंटें फ़र्श पर गिरी हुई थीं। जहाँ सारा हिस्सा गिरा हुआ था, वहीं उसका बेरूह बदन पड़ा था।

कभी न दिखने वाली आँखें बाहर निकली थीं। जो उस तरफ़ टिकी थीं। जहाँ उसका छोटा दोस्त जो अब बड़ा हो गया था—बैठा बिलख-बिलख कर रो रहा था।

एकाएक उस लड़के की माँ आई और उसकी कलाई पकड़ चलने को कहने लगी, मगर वह उसी तरह रोता हुआ इनकार करता रहा। यह देख माँ ने उसका हाथ पकड़ा और ज़बरदस्ती उसे अपनी पूरी ताकत से उठाकर घसीटती हुई दूसरे कमरे में ले गयी। जहाँ कोई उसके लिए कोई रो नहीं रहा था।

उस लड़के की सिसकियाँ भी सुनाई नहीं पड़ रही थीं।

वहाँ खड़े लोग ख़ामोशी से मुड़े और अपने-अपने घर की तरफ़ चले गये। हम भी टिककर वहाँ क्या करते, आगे बढ़ स्कूल के रास्ते पर चल पड़े।

उस दिन उस आदमी को काली मिट्टी में दफ़ना दिया गया। ज़मीन भी इतनी भूखी थी कि उसने लपककर लाश को इस तरह अपने आग़ोश में भर लिया कि उसकी याद के अलावा कुछ बाक़ी न बचा।

जापानी लोककथा

क्योतो का जादुई शीशा

अनुवाद : पूनम महेन्द्रू

एक गाँव में एक परिवार रहता था, उस परिवार में माता, पिता और इनकी एक बहुत प्यारी सी बेटी 'हिनाको' रहते थे। एक दिन पिता ने कहा कि उन्हें काम से कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ेगा और अपन बेटी से अपनी माँ का और घर का ध्यान रखने को कहा।

थोड़े दिनों बाद जब पिता लौटे तो अपनी बेटी के लिए एक गुड़िया लाये एवं अपनी पत्नी के लिए क्योतो का एक शीशा लाए, और उसने कहा कि यह औरत का मित्र होता है और इस शीशे को साफ रखने का मतलब है कि उस औरत की आत्मा भी इस शीशे के समान साफ़ और पवित्र है।

वक़्त बीतता गया और हिनाको बड़ी हो गयी, वह अपने माता-पिता का बहुत ध्यान रखती थी, पर अब उसकी माँ बीमार रहने लगी थी। एक दिन उसकी तबियत बहुत ख़राब थी, उसने हिनाको को अपने पास बुला कर बैठने को कहा और वो शीशा उसके हाथ में थमाकर कहा कि जब भी मेरी याद आये इस शीशे में देखना। तुम्हें मैं नज़र आऊँगी। कुछ समय बाद माँ मृत्यु हो गयी।

हिनाको बहुत उदास रहने लगी और अपनी माँ को बहुत याद करती थी, और जब भी वो उस शीशे को देखती उसे उसकी माँ दिखती थी।

उसके पिता ने दूसरी शादी की और उसकी दूसरी माँ उसे बिलकुल प्यार नहीं करती थी और उससे जलती थी।

उसने हिनाको के पिता को कहा कि हिनाको उसे मारना चाहती है। वह खुद को कमरे में बन्द कर देती है और मुझे मुझे मारने की तरकीब सोचती रहती है। यह सुनकर हिनाको के पिताजी को विश्वास ही नहीं हुआ। वह अनेक सवालों के साथ उसके कमरे में गये, अपने पिताजी को देखते ही हिनाको ने झट से वो शीशा छुपा लिया, क्योंकि उसने अपनी माँ को वचन दिया था कि वो यह शीशा किसी को भी नहीं दिखायेगी, परन्तु यह देखते ही उसके पिता को उस पर सन्देह हुआ और उन्होंने क्रोधित होकर पूछा, ''क्या छिपा रही हो?'' और अब हिनाको ने वो शीशा दिखा दिया, और कहा कि मैं यह देखती रहती हूँ, उसके पिता देखते ही पहचान गये और कहा कि यह तो मैंने तुम्हारी माँ को दिया था बहुत साल पहले, और फिर

हिनाको ने उस शीशे का रहस्य अपने पिता को बता दिया।

यह सुनकर पिता ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि तुम अपनी माँ को देख लो, यह सुनते ही हिनाको ने वो शीशा अपने पिता के सामने रख दिया, जो देखकर पिता ने कहा कि मुझे थोड़ा समय लग गया समझने में, लेकिन तुम हूबहू अपनी माँ की तरह दिखती हो, इसलिए जब भी तुम शीशे में दिखती हो तुम अपने चेहरे में अपनी माँ का चेहरा देखती हो। और यह कहकर पिता बहुत दुखी हुए और हिनाको से माफ़ी माँगी, नयी माँ बाहर खड़े होकर सब सुन रही थी। अन्दर आकर उसने पिता और हिनाको दोनों से माफ़ी माँगी और हिनाको से कहा कि मैंने भी कभी तुम्हें अपनी बेटी जैसा प्यार नहीं दिया, मुझे माफ़ कर दो। और इस तरह जादुई शीशे ने पूरे परिवार को जोड़कर अपना जादू दिखा दिया।

यह थी कहानी जादुई शीशे की!!!

लेम्बर्ग[1]

इरेने स्तस्तेना **अनुवाद : स्वाति यादव**

रबड़ के भारी जूते पहने औरत
भरती सीने में
धरती पर लटकते
कोहरे के रेशे
पौ फटी तो चल पड़ी सीधी
दूध का बर्तन लटकाए हैंडल पर
बाज़ार की तरफ़, चार सीढ़ियाँ ऊपर चढ़,
जो नहीं जाती ऊपर
जब तक बिक नहीं जाता सब

ढूँढ लेती है तंग जगह एक, उस औरत की बगल में
जो हँसती है अपने ऊपर वाले मसूड़े से
बोरी में हैं सेम लहसुन,
कूटू का आटा किशमिश,
शोर करते शहर में
सट कर बैठती है
भीतर एक गुलदान, धुला नहीं
इन्तज़ार करता मेज़ के सिरे पर
जब तक सन्ध्या के धुँधलके से पहले
जपमाला की जगह पड़ी साइकिल की चेन गिन लेती
आखिरी घंटे
बैठ जाती है जा के भारी मन से। उसाँस भरती है।
बैठी रहती है चुपचाप देर रात तक
गुलदान के साथ।

1. पश्चिम यूक्रेन में एक नगर